सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh

www.newsparivahan.com

परिवहन विशेष

RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number : F.2 (P-2) Press/2023

वर्ष 03, अंक 201, नई दिल्ली, रविवार 28 सितम्बर 2025, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

आज का सुविचार

हार तो हर कोई मान लेता है, ये सबसे आसान तरीका है, जीतता वही है जो अंत तक लड़ता है।

03 राजधानी टूरिस्ट ड्राइवर यूनियन द्वाराविश्व पर्यटन दिवस समारोह आयोजित
06 दुनिया का चेहरा आज परत दर परत कृत्रिमता से ढका हुआ है
08 'एक शाम मां भगवती के नाम' जागरण सम्पन्न

सड़क परिवहन एवम् राजमार्ग मंत्रालय द्वारा जारी राजपत्रित अधिसूचना के अनुसार ई वाहन को व्यवसायिक गतिविधि में चलने के लिए राज्य सरकार के परिवहन विभाग से किसी भी प्रकार के परमिट की आवश्यकता नहीं, क्या यह अधिसूचना दिल्ली में लागू नहीं होती ?

संजय बाटला

दिल्ली परिवहन विभाग अपने द्वारा किए जाने वाले कार्यों के प्रति सम्पूर्ण संसार में सबसे अधिक प्रसिद्धि पा चुका है पर उसकी प्रसिद्धि के कारण और किए जा रहे कार्यों की गूंज दिल्ली सरकार, दिल्ली के मुख्य सचिव, दिल्ली उपराज्यपाल, दिल्ली उच्च न्यायालय, गृहमंत्री एवम्-प्रधानमंत्री भारत सरकार और माननीय सर्वोच्च न्यायालय भारत के पास नहीं पहुंच पा रही है, आखिर क्यों और कैसे, बड़ा सोचनीय मुद्दा !

जी हां, यह हम अपनी तरफ से नहीं बोल रहे हैं इसके पुख्ता सबूत कोई भी आरटीआई के माध्यम से प्राप्त कर सकता है।

दिल्ली परिवहन विभाग विश्व का पहला ऐसा विभाग

1. जो अपने खर्चों में कटौती करने के लिए जनहित का नाम लेकर जनता को राजपत्रित अधिसूचना द्वारा प्राप्त सुविधाओं क्षेत्रीय कार्यालयों को बिना किसी पूर्व सूचना के बंद कर देता है,

2. जो महिला सुरक्षा के नाम से गृह मंत्रालय सचिव के नेतृत्व मे निर्मित कमेटी के द्वारा जारी आदेश पर महिलाओं को सुरक्षा प्रदान करने की जगह दिल्ली के व्यवसायिक वाहन मालिकों से कई सालों तक लुट करवा कर महिला सुरक्षा का नाम कर दिखाता है,

3. जो सर्विस बुक द्वारा जारी आरआर, माननीय सर्वोच्च न्यायालय भारत, माननीय उच्च न्यायालय दिल्ली, माननीय कैट और विधि और न्याय विभाग दिल्ली सरकार के द्वारा जारी निर्देशों, परामर्श को दरकिनार कर तकनीकी पदों पर गैर तकनीकी अधिकारियों को नियुक्त कर देता है,

4. ई वाहन निर्माता द्वारा जांच एजंसी द्वारा प्रमाण पत्र प्राप्त कर वाहन निर्मित करने और दिल्ली परिवहन विभाग द्वारा उसको दिल्ली में बेचने से पहले टाइप स्टेट अप्रूवल और ट्रेड सर्टिफिकेट लेने के बाद भी पंजीकृत नहीं करवा पाता क्योंकि दिल्ली परिवहन विभाग परमिट का नाम लेकर पंजीकरण करने से रोक रहा है,

5. जो किसी कम्पनी को फायदा पहुंचाने के उद्देश्य से उसका टेंडर पीरियड समाप्त होने के बाद भी बिना गिनती के कई सालों तक एक्सटेंशन देता आ रहा है,

6. जो व्यवसायिक गतिविधि में शामिल वाहनों के मालिकों को परेशान करने के उद्देश्य से और एक कंपनी को फायदा पहुंचाने के उद्देश्य से वाहन जांच केंद्र में क्षमता ना होने के बावजूद वाहनों को वही से जांच आदेश जारी कर देता है,

यह तो कुछ कार्य है जो याद करवाए गए हैं लेकिन अगर देखा जाए तो इससे भी बड़ी लिस्ट अभी दिल्ली परिवहन विभाग द्वारा किए गए कार्यों की बाकी है पर फिर भी सभी कार्यवाही करने वाली एजेंसियों, राजनेता, दिल्ली सरकार, उपराज्यपाल, एवम गृह मंत्रालय भारत सरकार और सर्वोच्च न्यायालय है चुप।

"क्या इसे ही कहते है जनहित और जनहित के लिए जनता को प्रदान सरकारी विभाग, बड़ा सवाल ?

टेंपल आफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर अलाइड ट्रस्ट पंजीकृत

मानव अधिकार उल्लंघन की समस्या – वैश्विक परिदृश्य

पिंकी कुंडू :- सदस्य बंगाली प्रकोष्ठ दिल्ली प्रदेश भाजपा

1. राजनीतिक दमन (Political Repression):- अधिनायकवादी शासन (authoritarian regimes) में अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता, प्रेस की स्वतंत्रता और विरोध के अधिकार पर अंकुश। उदाहरणः कई देशों में पत्रकारों, एक्टिविस्टों और विपक्षी नेताओं की हत्या या गिरफ्तारी।

2. युद्ध और सशस्त्र संघर्ष (Wars & Armed Conflicts):- *सीरिया, यमन, गाज़ा, यूक्रेन जैसे संघर्ष क्षेत्रों में नागरिकों पर हमले।

अंतर्राष्ट्रीय मानवीय कानून (Geneva Conventions) का बार-बार उल्लंघन।

3. जातीय और धार्मिक भेदभाव (Ethnic & Religious Persecution)

१. म्यांमार में रोहिंग्या मुसलमानों पर अत्याचार।

२. अफ्रीकी देशों में जनसंहार (genocide) जैसी घटनाएँ।

***. अल्पसंख्यक समुदायों का दमन।**

4. शरणार्थी और प्रवासी संकट (Refugee & Migration Crisis)

१. संयुक्त राष्ट्र के अनुसार 2024 तक दुनिया में 11 करोड़ से अधिक विस्थापित लोग (displaced persons) हैं।

२. इनमें से लाखों लोग बिना राष्ट्रीयता (stateless) हैं और उनके बुनियादी अधिकार भी नहीं हैं।

5. आर्थिक और सामाजिक अधिकारों का उल्लंघन

१. बाल श्रम, मानव तस्करी, जबरन मजदूरी।

२. स्वास्थ्य, शिक्षा और रोजगार का अभाव।

*. लैंगिक हिंसा और महिलाओं के खिलाफ भेदभाव।

सज़ा और जवाबदेही की वास्तविक स्थिति

1. अंतर्राष्ट्रीय स्तर

१. संयुक्त राष्ट्र मानवाधिकार परिषद (UNHRC) शिकायतों की सुनवाई करती है, लेकिन उसके पास प्रत्यक्ष दंडात्मक शक्ति नहीं है।

२. अंतर्राष्ट्रीय अपराध न्यायालय (ICC) युद्ध अपराध, मानवता के खिलाफ अपराध और जनसंहार (genocide) जैसे मामलों में कार्रवाई करता है।

*. लेकिन कई शक्तिशाली देश ICC को मान्यता नहीं देते (जैसे अमेरिका, चीन, रूस)।

2. क्षेत्रीय मानवाधिकार निकाय (Regional Mechanisms)

१. यूरोपीय मानवाधिकार न्यायालय (ECHR) – यूरोप में कई सरकारों को सज़ा और क्षतिपूर्ति देने के आदेश दिए।

२. अफ्रीकी और अमेरिकी मानवाधिकार आयोग/न्यायालय – सीमित प्रभाव।

*. एशिया में कोई मज़बूत क्षेत्रीय मानवाधिकार न्यायालय मौजूद नहीं है।

3. राष्ट्रीय स्तर

१. कई देशों में राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग हैं (जैसे भारत का NHRC)।

२. लेकिन ये अक्सर "अनुशंसा" ही कर पाते हैं, सीधी सज़ा नहीं दे सकते।

*. न्यायपालिका की धीमी प्रक्रिया और राजनीतिक दबाव के कारण दोषियों को बहुत देर से या कभी सज़ा नहीं मिलती।

4. वास्तविकता (Ground Reality)

१. अधिकांश मामलों में अपराधी बच निकलते हैं, खासकर जब वे राज्य या सेना से जुड़े हों।

२. केवल छोटे या कम शक्तिशाली अपराधियों को ही दंड मिलता है।

*. पीड़ितों को न्याय तक पहुँचने में सालों लग जाते हैं, और कई बार न्याय मिलता ही नहीं।

कानून बनाम वास्तविकता

कानूनः यूडीएचआर, जिनीवा कन्वेंशन, आईसीसी स्टेच्यू, और कई राष्ट्रीय संविधानों में मानवाधिकारों की सुरक्षा की गारंटी है।

वास्तविकताः राजनीतिक दबाव, शक्तिशाली देशों की हठधर्मिता और न्यायिक प्रक्रियाओं की कमजोरी के कारण मानवाधिकार उल्लंघनों पर सज़ा कम और प्रतीकात्मक ही रह जाती है। पीड़ित की आवाज़ अक्सर दब जाती है और दोषी "राजनीतिक ढाल" के पीछे सुरक्षित हो जाते हैं।

निष्कर्ष मानव अधिकार उल्लंघन आज भी पूरी दुनिया में बड़ी समस्या है।

1. युद्धग्रस्त क्षेत्रों में आम नागरिक सबसे अधिक प्रभावित हैं।

2. शरणार्थियों और अल्पसंख्यकों के लिए जीवन असुरक्षित बना हुआ है।

3. दंड की व्यवस्था मौजूद है, लेकिन न्याय और वास्तविक सज़ा के बीच लंबी दूरी है।

इसलिए ज़रूरत है:

1. वैश्विक स्तर पर मज़बूत और निष्पक्ष मानवाधिकार तंत्र की।

2. ऐसे कानून जिन पर सभी देश बाध्य हों और उनका उल्लंघन करने वालों पर तत्काल कड़ी कार्रवाई हो।

टोलवा ट्रस्ट पंजीकृत
www.tolwa.com
tolwaindia@gmail.com
https://www.tolwa.com/member.html

स्टॉल प्रस्ताव :
सिंगल साइड ओपन स्टोल : 2000
कॉर्नर साइड स्टोल : 3500
तीन साइड ओपन स्टोल : 4500
सिर्फ एक टेबल : 1000
सिर्फ दो टेबल : 1250

कार्यक्रम विवरण :
रक्षा गरबा-डांडिया और दुर्गा पूजा महोत्सव
स्थान : डीडीए ग्राउंड, रामलीला ग्राउंड के सामने, स्टेट ट्रांसपोर्ट अथॉरिटी के बगल में, PNB बैंक के पीछे, सेक्टर 10, द्वारका, नई दिल्ली 110075

तारीखें : 22 सितंबर से 2 अक्टूबर 2025
* दुकान का आकार : 10 फीट x 10 फीट
* शामिल सुविधाएँ :
* 2 कुर्सियाँ * 2 टेबल
*लाइट व चार्जिंग प्वाइंट

भुगतान की शर्तें :
* अग्रिम भुगतान आवश्यक
* बुकिंग के समय 50% भुगतान
* कब्जे के समय 50% भुगतान

संपर्क : इंदु राजपूत
मोबाइल : 9210210071

विशेष सूचना
नवरात्रि में मातारानी की खंडित मूर्तियाँ, टूटे हुए फ़ोटो, पुरानी चुनरियाँ और नवरात्रि में बोए गए जवारों का विसर्जन
- दशहरे के दूसरे दिन
- दिनांक : 3 अक्टूबर की सुबह
- स्थान : रक्षा नवरात्रि गरबा एवं दुर्गा पूजा ग्राउंड

स्थान विवरण :
रामलीला मैदान के सामने,
आरटीओ ऑथोरिटी के पास,
सेक्टर 10 डीडीए ग्राउंड, नई दिल्ली
संपर्क सूत्र : इंदु राजपूत, मोबाइल : 9210210071
सभी श्रद्धालुओं से निवेदन है कि इस पावन विसर्जन में सहभागी बनें।

"टेंपल आफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर अलाइड ट्रस्ट पंजीकृत" सेवा ही संकल्प है!

पिंकी कुंडू, महासचिव टोलवा ट्रस्ट

हमारा मकसद सिर्फ मदद नहीं, बदलाव लाना है।

A voice for the voiceless, and a hand for the helpless.

हमारा उद्देश्य है समाज के उन हिस्सों तक पहुँचना जो आज भी भूख, शिक्षा और आर्थिक तंगी से जूझ रहे हैं। हम जरूरतमंदों को बिना भेदभाव के भोजन, बच्चों को मुफ़्त शिक्षा, और समाज को जागरूकता देने का कार्य कर रहे हैं।

SCAN ME

क्या मिलेगा हमसे जुड़कर

Ground-level food distribution,

Getting children free education,

हम मानते हैं – छोटा कदम भी बड़ा बदलाव ला सकता है।

If you believe in humanity, equality, and service — then

you're already a part of our family.

हमें सपोर्ट करें और एक आवाज़ बनें इस बदलाव की।

Together, let's serve. Together, let's change.

टोलवा ट्रस्ट पंजीकृत से जुड़ने के लिए नीचे दिए गए लिंक पर क्लिक करें और फार्म भरकर जुड़े,

www.tolwa.com/member.html

स्कैनर को स्कैन कर के भी आप टोलवा ट्रस्ट पंजीकृत से फार्म भर कर जुड़ सकते हैं,

वेबसाइट पर www.tolwa.com पर भी जाकर आप फार्म भर के टोलवा ट्रस्ट से जुड़ सकते हैं। www.tolwa.com

टोलवा ट्रस्ट पंजीकृत
tolwaindia@gmail.com
www.tolwa.com

"श्री श्री दुर्गा शरणम" तैंतीसवां सार्वजनिन दुर्गोत्सव

प्रिय महोदय,

आपको यह जानकर अति हर्ष होगा कि हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी आपके शहर उत्तम नगर में 'उत्तम नगर कालीबाड़ी द्वारा शनिवार दिनांक 27 सितंबर, 2025 से 2 अक्टूबर, 2025 बृहस्पतिवार तक सी-50, मनसा राम पार्क, नई दिल्ली-59 में श्री श्री दुर्गा माँ की पूजा एवम् 20 अक्टूबर, 2025 सोमवार श्री श्री काली माँ की पूजा का भव्य आयोजन किया जा रहा है। अतः आप सबसे हार्दिक निवेदन है कि आप सब इस विशाल आयोजन में सम्मिलित होकर माँ दुर्गा एवम् काली माँ का आर्शीवाद प्राप्त करें और इस आयोजन को सफल बनायें।

प्रिय भक्तों!

हमें आपको यह सूचित करते हुए अत्यंत प्रसन्नता हो रही है कि उत्तम नगर कालीबाड़ी, सी-50, मनसा राम पार्क, उत्तम नगर, नई दिल्ली-110059 में 33वें वर्ष दुर्गा पूजा एवं काली पूजा समारोह का आयोजन कर रही है। हम आपके परिवार और मित्रों को 27 सितंबर से 2 अक्टूबर 2025 तक हमारे काली मंदिर में आयोजित होने वाले इस समारोह में शामिल होने के लिए सादर आमंत्रित करते हैं।

आइए एक बार फिर खुशियाँ बाँटें, अपनी आत्मा को समृद्ध करें और पारिवारिक माहौल में त्योहार का आनंद लें। आप सभी के उदार सहयोग

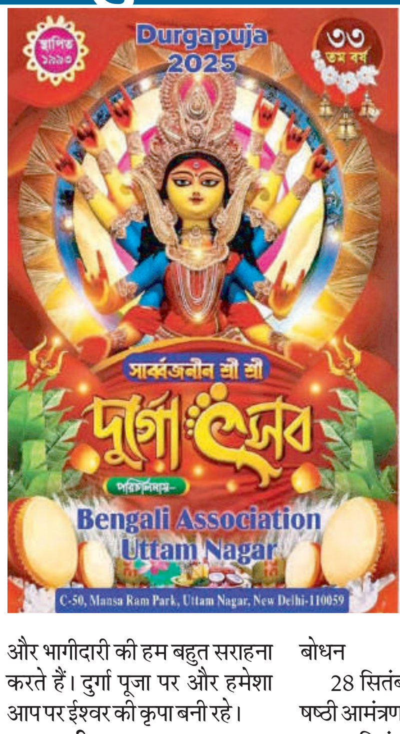

और भागीदारी की हम बहुत सराहना करते हैं। दुर्गा पूजा पर और हमेशा आप पर ईश्वर की कृपा बनी रहे।

भवदीय
उत्तम नगर कालीबाड़ी,
मलय डे (अध्यक्ष) 7217666618
जयंत डे (सचिव) 9654385888
पिंकी कुंडू (सदस्य)

पूजा कार्यक्रम-2025

27 सितंबर 2025, (शनिवार).
बोधन

28 सितंबर 2025, (रविवार)
षष्ठी आमंत्रण और अधिबास

29 सितंबर 2025, (सोमवार)
सप्तमी पूजा

30 सितंबर 2025, (मंगलवार)
अष्टमी और संधि पूजा

1 अक्टूबर 2025, (बुधवार)
नवमी पूजा

2 अक्टूबर 2025, (गुरुवार)
दशमी पूजा और विसर्जन

पुष्पांजलि 11.00 बजे से 1:00 बजे तक,

प्रसाद वितरण 1.00 बजे से 1:30 बजे तक,

भोग वितरण 1.30 बजे से 3.00 बजे तक।

संध्या आरती- 7.00 बजे

श्री श्री काली पूजा सोमवार, 20 अक्टूबर, 2025

कार्यक्रम का स्थानः

कालीबाड़ी, सी-50, मनसा राम पार्क, उत्तम नगर, नई दिल्ली-110059

You're Invited!

Anandomela Food Fiesta 2025

Celebrate the spirit of Durga Puja with food, fun, and festivity!

Join us at our much-awaited Anandomela Food Fiesta, where the aroma of tradition meets the joy of celebration! Bring your favorite homemade delicacies, share your culinary skills, and enjoy a vibrant evening with your community.

Date: 28.09.2025
Venue: KALI BARI (uttam nagar)
Time: 7.00PM

Whether you're a seasoned cook or just love feeding people, we welcome your participation with open arms!

For stall bookings and participation details,
Please contact:
Mrs.Pinki Kundu- 7053533169
Mrs.Tithi Ghosh- 9013088489

Let's make this Durga Puja even more delicious and memorable!

Regards
Jayant Dey
General Secretary

क्या आप जानते हैं कि माँ भगवती को... "माँ दुर्गा" क्यों कहा जाता है ?

नवरात्र चल रहा है... जिसे हमलोग दुर्गापूजा के नाम भी जानते हैं...

लेकिन, क्या आप जानते हैं कि माँ भगवती को... ₹माँ दुर्गा₹ क्यों कहा जाता है ???

पौराणिक कथा के अनुसार...

भगवान श्री हरि ने वराह अवतार लेकर राक्षस हिरण्याक्ष का वध किया था और पृथ्वी को अपनी जगह पुनर्स्थापित किया था... जिससे सृष्टि में आया व्यवधान दूर हुआ था।

कालांतर में इसी हिरण्याक्ष के वंश में एक दैत्यराज रुरु हुआ था।

और, दैत्यराज रुरु का पुत्र हुआ ... "दुर्गम"

ये दुर्गम...ब्रह्मांड के तीनों लोगों पर शासन करना चाहता था।

लेकिन, तीनों लोकों पर शासन हेतु देवताओं को हराना उसके लिए बड़ी चुनौती थी..!

इसीलिए, दुर्गमासुर ने विचार किया कि देवताओं की शक्ति ₹वेद₹ में निहित है। (उस समय एक ही वेद थे)

तो, अगर किसी तरह वेद नष्ट हो जाये या विलुप्त हो जाये तो देवतागण खुद ही नष्ट हो जाएंगे।

इसके अतिरिक्त वेद के विलुप्त हो जाने से यज्ञ आदि भी नहीं हो पाएंगे जिससे देवताओं को भोग नहीं मिल पायेगा और वे शक्तिहीन हो जाएंगे जिसके बाद उन्हें जीतना आसान हो जाएगा।

इसीलिए, राक्षसगुरु शुक्राचार्य ने उसे सलाह दिया कि... देवताओं को हराने के लिए वेद का लुप्त होना आवश्यक है।

इसके बाद गुरु शुक्राचार्य के निर्देश पर दुर्गमासुर...हिमालय में जाकर कठोर तपस्या करने लगा..

अंततः... दुर्गमासुर के इस कठोर तप से ब्रह्मा जी प्रसन्न हो गए और उसे दर्शन देते हुए वर मांगने को कहा।

मौके का फायदा उठाते दुर्गमासुर ने ब्रह्मा जी से... वेद मांग लिया और साथ ही मांग लिया कि वेदों के समस्त ज्ञान मुझ तक ही सीमित रहे।

वेद के अतिरिक्त दुर्गमासुर ने सर्वशक्तिशाली होने तथा त्रिदेव (ब्रह्मा, विष्णु और महेश) से अ-वध (नहीं मरने) का वरदान भी हासिल कर लिया।

तदुपरांत... ब्रह्मा जी द्वारा तथास्तु कहते ही... सारे देव और मनुष्य वेद को भूल गए।

वेद का स्मरण भूलते ही... ब्रह्मांड में जप, तप, स्नान , ध्यान, यज्ञ , पूजा, सदाचार आदि धार्मिक क्रियाएं थम गई।

जिससे, हर जगह धर्म की जगह अनाचार और पाप का बोलबाला होने लगा..

ब्रह्मा जी के ऐसे वरदान से बेहद ही अजीब स्थिति पैदा हो गई..

क्योंकि , यज्ञ आदि में भाग मिलने से देवता पुष्ट होते थे लेकिन वेद के लुप्त हो जाने के कारण यज्ञ आदि बंद हो गए जिससे देवता निर्बल होने लगें।

तदुपरांत... ब्रह्मा जी के वरदान से ताकतवर हुआ दुर्गमासुर... दैत्यों और राक्षसों की भारी सेना लेकर स्वर्ग पर चढ़ाई कर दिया।

लेकिन, चूँकि... यज्ञ आदि के नहीं होने के कारण देवतागण दुर्बल हो चुके थे और इस राक्षसी सेना का मुकाबला करने में असमर्थ हो चुके थे।

इसीलिए, वे स्वर्ग से दूसरी जगह पलायन कर गए और उचित अवसर की प्रतीक्षा करने लगे।

इधर ... धार्मिक कार्य न होने के कारण पृथ्वी पर... मनुष्य भी धर्मच्युत हो गए और राक्षसों की देखा देखी वे भी... मदिरा सेवन, लूटपाट, चोरी, व्यभिचार आदि में लिप्त हो गए।

अन्याय , अनीति और दुराचार बढ़ने के कारण ब्रह्मांड का प्राकृतिक संतुलन गड़बड़ा गया।

जल, भोजन आदि के लोग तरसने लगे।

ऐसी विकट स्थिति में पृथ्वी पर जो थोड़े बहुत सज्जन लोग बचे थे... वे हिमालय की कंदराओं में जाकर बहुत ही कारुणिक रूप से माँ भगवती को पुकारना शुरू किया।

उनकी कारुणिक पुकार सुनकर माँ भगवती प्रकट हुई..

उस समय उन्होंने भूख-प्यास और बुढ़ापे को दूर करने वाले शाक-मूल को धारण किया हुआ था।

माता भगवती के प्रकट होते ही ... देवतागण भी बाहर आ गए जो दुर्बल हो जाने के कारण दुर्गमासुर के भय से इधर-उधर छुपे हुए थे।

सबने मिलकर माता भगवती को सारा वृतांत बताया।

माता भगवती ने सारा वृतांत सुनकर उन्हें भरोसा दिलाया और तत्काल में उन्हें खाने के लिए ₹शाक और फल₹ दिए।

इसी घटना के कारण... माँ भगवती का एक नाम ₹शाकम्भरी₹ भी है।

उधर जब दुर्गमासुर ने अपने दूत से ये सारा वृतांत सुना तो वो क्रोधित होकर एक बहुत बड़ी सेना लेकर मनुष्य और देवताओं को दंड देने के लिए निकल पड़ा।

दुर्गमासुर को सेना सहित आता देखकर मानव और देवताओ में भय व्याप्त हो गया और वे माँ भगवती से रक्षा हेतु निवेदन करने लगे।

जिसके बाद देवी भगवती ने चक्र को सारे मानव और देवताओं की रक्षा आदेश दिया... जिससे चक्र देवताओं और मनुष्यो की रक्षा करते हुए उनके चारों ओर घूमने लगा।

तत्पश्चात... देवी भगवती और राक्षसी सेना के बीच भयानक युद्ध छिड़ गया।

और, देवी भगवती के श्रीविग्रह से कालिका, तारा, भैरवी, मातंगी, छिन्नमस्ता, श्रीविद्या, भुवनेश्वरी, बगला आदि 32 शक्ति प्रकट हुई।

तथा, 10 दिन के घनघोर युद्ध के बाद सारी राक्षसी सेना विनाश को प्राप्त हुई। अपनी सेना के विनाश की खबर सुनकर 11वें दिन दुर्गमासुर खुद युद्ध भूमि में आया...

लेकिन, माँ भगवती के हाथों मारा गया।

इस तरह... माँ भगवती ने दुर्गमासुर का अंत कर वेद को पुनर्स्थापित किया और इसी दुर्दांत दुर्गमासुर के वध के कारण ही माँ भगवती को ₹माँ दुर्गा₹ भी कहा जाता है...!

नवरात्र के पावन पर्व के शुभ अवसर पर विश्व मंगल एवं विश्व कल्याण के कामनार्थ भगवद्गीता समूह के सान्निध्य में नौ दिवसीय दुर्गा सप्तशती अखंड पाठ, माँ दुर्गा जी का मूर्ति पूजन व गौरी गणेश पूजन के कार्यक्रम में आप अपनी सामर्थ्य और स्वेच्छा अनुसार सहयोग करके माता रानी से आशीर्वाद स्वरूप घर - परिवार में सुख, शांति, स्वास्थ्य और समृद्धि की प्रार्थना करें और ये प्रार्थनाएं आपकी फलित हो ऐसी मंगलकामना है।

आश्विन शुक्ल पक्ष में विशेष महोत्सवों से श्रीदुर्गा जी की पूजा धर्म, अर्थ, काम तथा मोक्ष– ये चारों फल देने वाली है।

संस्कारशाला: मर्यादा और मानसिक स्वास्थ्य की ज़िम्मेदारी

डॉ. अंकुर शरण

दिल्ली मेट्रो ने हाल ही में एक महत्वपूर्ण कदम उठाते हुए मेट्रो के अंदर रील बनाने पर रोक लगा दी है। 14 सितंबर से लगातार इसकी घोषणा हो रही है और नियम तोड़ने पर जुर्माना भी लगाया जाएगा। यह सिर्फ एक प्रशासनिक निर्णय नहीं, बल्कि सामाजिक मर्यादा और मानसिक स्वास्थ्य से जुड़ा बड़ा संदेश है।

पिछले कुछ वर्षों में हमने देखा है कि सोशल मीडिया के नाम पर कई लोग मेट्रो के डिब्बों में रील बनाते हुए यात्रियों को परेशान करते हैं। कभी डांस, कभी जोर-जोर से बोलकर डायलॉग, तो कभी अश्लील हरकतें—यह सब न केवल असहजता पैदा करता है, बल्कि हमारे सिविक सेंस और मानसिक संतुलन पर भी सवाल खड़े करता है।

आज की युवा पीढ़ी को समझना होगा कि मनोरंजन की भी सीमाएँ होती हैं। आपकी मस्ती किसी और की परेशानी का कारण न बने, यही सभ्य समाज की पहचान है। मैंने स्वयं कई बार देखा है कि लोग सार्वजनिक स्थानों पर तेज़ आवाज़ में गाने सुनते हैं, ज़बरदस्ती अपनी पसंद दूसरों पर थोपते हैं, और बुनियादी शिष्टाचार को नज़रअंदाज़ कर देते हैं। यह सब छोटे-छोटे व्यवहार मानसिक असंतुलन और सामाजिक असंवेदनशीलता की ओर इशारा करते हैं।

युवाओं को यह जानना ज़रूरी है कि मानसिक स्वास्थ्य केवल ध्यान और योग से नहीं, बल्कि व्यवहार की मर्यादा से भी जुड़ा है। जब हम दूसरों की सुविधा का ध्यान रखते हैं, तब हम अपने भीतर धैर्य, अनुशासन और संतुलन विकसित करते हैं। दिल्ली मेट्रो का यह कदम वास्तव में युवाओं को यह सीख देने का प्रयास है कि ज़िम्मेदारी और अनुशासनहीनता में फ़र्क होता है।

सोशल मीडिया की चमक-दमक और त्वरित प्रसिद्धि की चाहत में युवा पीढ़ी कहीं न कहीं स्वयं के मानसिक संतुलन को भी खोने लगी है। लगातार स्क्रीन पर रहना, मान्यता की तलाश करना और भीड़भाड़ वाली जगहों पर ध्यान आकर्षित करने की कोशिश, यह सब तनाव और अव्यवस्था को बढ़ाता है।

अब समय है कि हम अपनी संस्कारशाला को मज़बूत करें। युवाओं को यह सीख दी जानी चाहिए कि मानसिक स्वास्थ्य का सबसे पहला मंत्र है—

"मर्यादा और अनुशासन को अपनाओ, तभी जीवन में संतुलन पाओ।"

दिल्ली मेट्रो का यह निर्णय स्वागत योग्य है और हम सबकी ज़िम्मेदारी है कि इसका पालन करें। समाज की शांति और व्यवस्था बनाए रखना सिर्फ प्रशासन का नहीं, बल्कि हर नागरिक का कर्तव्य है।

हथियारबंद निजी सुरक्षा सेवा उपलब्ध — दिल्ली में लाइसेंसधारी शॉटगन के साथ

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली: पूर्व सेना कर्मी नंद किशोर (सेवा-पूर्व, आर्मी ऑर्डनन्स कोर) ने दिल्ली में विशेष रूप से वीआईपी प्रोटेक्शन के लिए अपनी निजी सुरक्षा सेवाओं की घोषणा की है। 60 वर्ष के अनुशासित और शारीरिक रूप से फिट नंद किशोर ने बताया कि वे केवल दिल्ली क्षेत्र के लिए सीमित आवधिक, इवेंट-आधारित और 24x7 ऑन-काल सुरक्षा प्रदान करेंगे।

नंद किशोर की सेवाओं की मुख्य विशेषताएँ इस प्रकार हैं:

लाइसेंसधारी शॉटगन होल्डर (.12 IOF शॉटगन, दिल्ली क्षेत्र)।

सेवाओं का दायरा: राजनीतिक नेता, सेलिब्रिटी, सामाजिक और धार्मिक प्रतिनिधि, विदेशी नागरिक तथा महिला VIP सुरक्षा में विशेष अनुभव।

चार्ज: ₹300 प्रति घंटा + आवागमन व्यय (कॉन्वेंस)।

उपलब्धता: कार्यक्रम-आधारित, सीमित घण्टों के लिए तथा आवश्यकतानुसार 24x7 ऑन-काल (केवल दिल्ली)।

नंद किशोर ने कहा, "मेरी सैन्य पृष्ठभूमि और प्रशिक्षण के साथ-साथ योग का अभ्यास भी मेरी फिटनेस और सतर्कता को बनाए रखता है। सभी आवंटन कानूनी दायरे में और नैतिक मानकों का पालन करते हुए किए जाएंगे।"

सेवा लेते समय आवश्यक शर्तें स्पष्ट की गई हैं — कोई भी असाइनमेंट केवल पहचान पत्र, संगठन/आयोजन का विवरण और VIP का फोटो उपलब्ध होने पर ही लिया जाएगा। साथ ही, ग्राहकों की गोपनीयता का पूरा सम्मान किया जाएगा।

सरकारी नियमों के पालन पर भी जोर दिया गया: नंद किशोर ने स्पष्ट किया कि खुशगुलाबी फायरींग (joy-firing) या अनावश्यक आग का प्रयोग कतई नहीं किया जाएगा — आग्नि का प्रयोग केवल स्वयं सुरक्षा या अचानक हमले की स्थिति में ही, लागू कानून के अनुसार किया जाएगा।

सेवा संबंधी संपर्क:

WhatsApp: +91-9958114433

ई-मेल : nandkishor65@gmail.com

पता: पालम कॉलोनी, नई दिल्ली – 110045

नोट: सुरक्षा सेवाओं के लिए चयन करते समय हमेशा वैध लाइसेंस, पूर्व सेवा और कानूनी मानदंडों की पुष्टि आवश्यक है; साथ ही किसी भी सुरक्षा समझौते को लिखित रूप में और वैध शर्तों के साथ होना चाहिए।

शहीद भगतसिंह जयंती आज

देश आज भगत सिंह का 115वां जन्मदिन मना रहा है। देश को आजादी दिलाने के लिए भगत सिंह ने अंग्रेजों के खिलाफ मोर्चा खोल दिया था। अंग्रेज अधिकारियों से टक्कर लेने वाले भगत सिंह को सेंट्रल असेंबली में बम फेंकने के लिए गिरफ्तार कर लिया गया था। जेल में अंग्रेजी हुकूमत की प्रताड़ना झेलने के बाद भी भगत सिंह ने आजादी का मांग को जारी रखा। कोर्ट में केस के दौरान उन्हें मौका मिला कि वह देशभर में आजादी की आवाज को पहुंचा सकें। उन्हें अंग्रेजों ने फांसी की सजा सुनाई थी और तय तारीख से एक दिन पहले यानी 23 मार्च 1931 को भगतसिंह, सुखदेव और राजगुरु को फांसी दे दी थी। कहा जाता है कि जब भगत सिंह को फांसी दी जा रही थी, तो भी उनके चेहरे पर मुस्कान और गर्व था। आज उसी शहीद भगत सिंह की जयंती है। 28 सितंबर को जन्मे भगतसिंह के निधन वाले दिन को शहादत दिवस के तौर पर मनाया जाता है। भगत सिंह के क्रांतिकारी विचारों और भाषणों ने गुलाम भारत के युवाओं को आजादी के लिए उकसा दिया और स्वतंत्रता संग्राम की लड़ाई में शामिल किया। भगत सिंह की जयंती के मौके पर जानिए उनके ऐसे ही क्रांतिकारी विचारों के बारे में, जो आप में बढ़ा देंगे देशभक्ति की भावना।

किसान सिख परिवार में जन्म

===================

भगत सिंह का जन्म 28 सितंबर 1907 को पंजाब के लयालपुर के बांगा (अब पाकिस्तान में) गांव के एक सिख परिवार में हुआ था। उनके पिता का नाम सरदार किशन सिंह और माता का नाम विद्यावती कौर था। पिता किशन सिंह अंग्रेज और उनकी शिक्षा को पहले से ही पसंद नहीं करते थे इसलिए बांगा में गांव के स्कूल में शुरूआती पढ़ाई के बाद भगत सिंह को लाहौर के दयानंद एंग्लो-वैदिक स्कूल में दाखिला दिलवा दिया गया।

परिवार में ही थे क्रांतिकारी

====================

भगत सिंह का परिवार उनके पैदा होने के पहले ही क्रांतिकारी गतिविधियों में शामिल था। खुद भगतसिंह के पिता और चाचा अजीत सिंह ने 1907 अंग्रेजों के कैनल कोलोनाइजेसन बिल खिलाफ आंदोलन में हिस्सा लिया था और बाद में 1914-1915 में गदर आंदोलन में भी भाग लिया था। इस तरह से बालक भगत को बचपन से ही घर में क्रांतिकारियों वाला माहौल मिला था।

भगतसिंह से डरी अंग्रेजी हुकूमत

=====================

अंग्रेजी हुकूमत भरतसिंह, सुखदेव और राजगुरु की फांसी को लेकर हो रहे विरोध से डर गई थी। वह भारतीयों के आक्रोश का सामना नहीं कर पा रही थी। ऐसे में माहौल बिगड़ने के डर से अंग्रेजों ने भगत सिंह की फांसी का समय और दिन ही बदल दिया। गुपचुप तरीके से तय समय से एक दिन पहले भगतसिंह, सुखदेव और राजगुरु को फांसी दे दी गई। 23 मार्च 1931 को शाम साढ़े सात बजे तीनों वीर सपूतों को फांसी की सजा हुई। इस दौरान कोई भी मजिस्ट्रेट निगरानी करने को तैयार नहीं था। शहादत से पहले तक भगत सिंह अंग्रेजों के खिलाफ नारे लगाते रहे।

स्वदेशी इसलिए ज़रूरी है क्योंकि:

* 1. आत्मनिर्भरता – भारत अपनी ज़रूरतों के लिए विदेशी देशों पर निर्भर न रहे।

2. राष्ट्रीय सुरक्षा – विदेशी निर्भरता कम करने से रणनीतिक खतरे घटते हैं।

3. रोजगार सृजन – स्थानीय उद्योग और छोटे व्यवसाय बढ़ते हैं।

4. सांस्कृतिक पहचान – भारतीय परंपरा, योग और आयुर्वेद को बढ़ावा मिलता है।

5. आर्थिक विकास – पैसा भारत में ही घूमे, देश की अर्थव्यवस्था मजबूत हो।

संक्षेप में: स्वदेशी = सुरक्षा + रोजगार + संस्कृति + विकास + आत्मनिर्भरता।

लौकी के यह 8 फायदे

1 ताजगी - लौकी को हल्की सब्जियों में गिना जाता है। इसे खाने से पेट में भारीपन नहीं रहता, बल्कि यह शरीर में ताजगी बनाए रखने में सहायक है।

2 वजन कम - लौकी का सबसे बड़ा लाभ है, कि यह आपका वजन बहुत जल्दी कम करने में सहायक होती है।

3 पाचन - लौकी पाचन संबंधी समस्याओं का उत्तम इलाज है, साथ ही यह एसिडिटी में भी लाभप्रद है। लौकी को अपने भोजन में शामिल करने से पाचन क्रिया को बेहतर किया जा सकता है।

4 डाइबिटीज - डाइबिटीज के मरीजों के लिए लौकी का सेवन एक प्रभावकारी उपाय है। डाइबिटीज में खाली पेट लौकी का सेवन करना बेहतर होगा।

5 यूरिनरी डिसऑर्डर - यूरिनरी डिऑर्डर अर्थात मूत्र संबंधी समस्याओं में भी लौकी बेहतर कारगर उपाय है। यह शरीर में सोडियम की अधिकता को कम करने में सहायक है, जो यूरिन के जरिए बाहर निकल जाता है।

6 नैचुरल ग्लो - लौकी का प्रतिदिन सेवन करने से त्वचा में प्राकृतिक चमक आती है, और वह आकर्षक दिखाई देती है।

7 कोलेस्ट्रॉल - लौकी को भोजन में शामिल करने से हानिकारक कोलेस्ट्रॉल बहुत आसानी से धीरे- धीरे कम होने लगता है, जिससे हृदय संबंधी या कोलेस्ट्रॉल से होने वाली अन्य समस्याएं नहीं होती।

8 लौकी में भरपूर मात्रा में डायट्री फायबर, विटामिन- ए, विटामिन -सी, थायमिन, राइबोफ्लेविन, विटामिन- बी3, बी6, मिनरल्स, कैल्शयम, आयरन, मैग्नीशियम, फास्फोरस, पोटेशियम, सोडियम और जिंक पाया जाता है, जो आपको स्वस्थ बनाए रखता है।

नागा बंधम क्या है, और नागा बंधम कैसे करते हैं?

नागा बंधन या नागा पदम (नागों की एक भोंपू (कोबरा किस्म के नागों) के साथ कुछ मूल्यवान बांधने की प्रक्रिया अनिवार्य रूप से पूजा का एक तांत्रिक रूप है / तंत्रिका प्रक्रिया, अथर्व मूल माना जाता है। प्रक्रिया किसी भी रूप में लिखित रूप में नहीं पाई जाती है। यह बहुत ही गुप्त है और केवल कुछ ही सिद्धों के लिए जाना जाता है। माना जाता है कि नाग के जादू (नागा बंधन बनाने) के साथ-साथ जादू करने की प्रक्रिया भी वैष्णव ग्रंथों में पाई जाती थी, लेकिन अब तक, कोई भी नहीं जानता ...

जब से यह बताया गया था कि तिरुवनंतपुरम पद्मनाभस्वामी मंदिर की तिजोरी को नागा बांध के साथ सील कर दिया गया था, इस प्रक्रिया को लेकर उत्सुकता बढ़ गई है।

दरअसल, यह मंदिर केवल नाग बांधम वास्तुकला का उपयोग करने वाला नहीं है। चोल मंदिरों में भी नागा बांधम दिखाई दिया, जो एक वास्तुशिल्प विशेषता है जिसमें खंभों के अष्टकोणीय और वर्ग भागों के बीच एक सांप 'बैंड' (डिज़ाइन) है। कृपया मिथुन बंध में नगा और नागी के कोणार्क/कलिंग कला शैली को भी देखें। लेकिन जाहिर तौर पर, पद्मनाभस्वामी मंदिर के लिए मंत्र शक्ति (दरवाजे के दो नगा के साथ खुले मुंह के चित्रण की विशिष्ट वास्तुशिल्प विशेषताओं के साथ) अद्वितीय है।

यह बताया गया कि 16 वीं शताब्दी में सिद्धों द्वारा पद्मनाभस्वामी मंदिर के दरवाजे को आस्था नागा बांध मंत्रों के साथ सील कर दिया गया था; और केवल गरुड़ मंत्रों के साथ खोला जा सकता है जो सही क्रम में बोले जाने पर वर्तनी को तोड़ देगा और नागों से दूर चला जाएगा।

सिद्ध प्रति अनुष्ठान करने वाले नहीं थे, इसके बजाय, उन्होंने ध्वनि की शक्ति का उपयोग किया, अर्थात, उन्होंने नाद योग (विशिष्ट ध्वनियों पर ध्यान) का अभ्यास किया। गरुड़ मंत्रों को अगम ग्रंथों में पाया जाता है, हालांकि, इस मंदिर के लिए, जाहिरा तौर पर, गरुड़ के लिए एक बहुत ही विशिष्ट मंत्र (या मंत्रों का सेट) (कुंजी के रूप में)

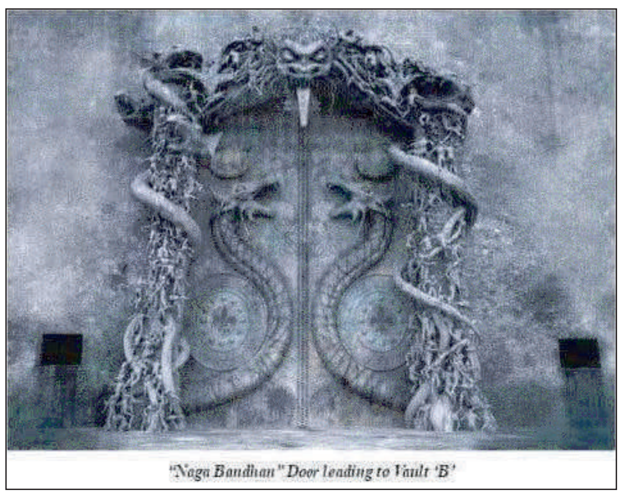

"Naga Bandhan" Door leading to Vault 'B'

ताला से मेल खाने के लिए एक विशिष्ट रूप में बोला जाता है (वास्तव में यह है) जिसे गरुड़ प्रयाग कहा जाता है)।

नागा को एक जल आत्मा माना जाता है, और इसे पूर्ववत करने का एकमात्र तरीका गरुड़ की अग्नि आत्मा का उपयोग करना है। यह केवल गरुड़ के लिए मंत्र का जप करने के बारे में नहीं है, बल्कि यह सही ध्वनि आवृत्ति, तरंग दैर्ध्य, आदि प्राप्त करने के लिए नागा चक्र का ध्यान करके अग्नि की शक्ति का दोहन करने के बारे में भी है, नागा चक्र के बारे में कुछ विवरण पुराण यथा गरुड़ में पाए जा सकते हैं, जो इसे अनलॉक कर सकते हैं, उन्हें उच्च क्रम के सिद्धपुरुष होने चाहिए, जिन्हें नादबिंदु (और इसलिए रसायन विद्या के साथ-साथ योगिक शक्तियों का ज्ञान) है और इन तकनीकों में महारत हासिल है। शायद दरवाजा खोलने का प्रयास केवल एक वर्ष की निश्चित अवधि के दौरान किया जा सकता है।

इसके अलावा, गरुड़ मंत्र का अकेले उपयोग नहीं किया जा सकता है। इसका उपयोग अनुष्ठान क्रम में किया जाना चाहिए, जिसमें नरसिंह मंत्र जैसे अन्य मंत्र शामिल हैं, जो मूल मंत्र से नारायण (नारायण को ध्यान में रखते हुए) और शक्ति मंत्र से लक्ष्मी और अन्य दिव्य हैं। गरुड़ नारायण का वाहन है और वेलाखिल्य (बाला-ख्याला) से जुड़ा हुआ है जो योर के वैखानसा तपस्वियों में लीन थे (महाभारत की एक पौराणिक कथा है कि वाल्मीकि लोग सूर्य नारायण के रथ का अनुसरण करते थे)। तो, कौन जानता है ... संभवतः दरवाजा खोलने की विधि वैखानसा रचनाओं में हो सकती है।

नई पीढ़ी के विचारों के साथ सामंजस्य बैठाना समय की मांग

बदलते आधुनिक परिपेक्ष में नई सकारात्मक वैचारिकता का धारण करना समय की मांग –

एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानीं गोंदिया महाराष्ट्र

भारतीय संस्कृति, सभ्यता और हमारे पूर्वजों, बड़े बुजुर्गों की वैचारिकता, सोच, कहावतें, प्रेरणा, मार्गदर्शन, हमारे लिए अनमोल धरोहर ही नहीं एक अणखुट ख़जाना भी है, मैं एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानीं गोंदिया महाराष्ट्र मानता हूं कि अगर हम अपनी संस्कृति, सभ्यता और पूर्वजों, बड़े बुजुर्गों की वैचारिक को ग्रहण कर उनकी बताई राहों, उनके द्वारा कही कहावतों पर गहराई से सोचें तो हमें एक-एक शब्द या लाइन में बहुत बड़ी सीख, प्रेरणा, मार्गदर्शन मिल सकता है जो उम्र का तकाज़ा, समय का तकाज़ा, समय बड़ा बलवान रे भैया समय बड़ा बलवान, मुख में राम बगल में छुरी, आवश्यकता ही आविष्कार की जननी है, इत्यादि ऐसे अनेक सुने अनसुने शब्द कहावतें हैं जिनकी गहराई में जाकर उनका सकारात्मक मतलब निकाल कर हम बुराई से बच सकते हैं और मूल्यवान शब्दों को अपनाकर अपना जीवन संवार सकते हैं।

साथियों इसी कड़ी में बात अगर हम समय का तकाज़ा की करें तो बड़े बुजुर्गों का कहना है कि हमें अपनें जीवन को समय के अनुसार बदलने से ही सर्वसुख संपन्नता के ज्ञान का बोध होता क्योंकि समय एक सा नहीं रहता समय का चक्र हमेशा घूमता, बदलता रहता है कल जो हमारे पास परिस्थितियां थी अब बदल चुकी होतीहै और हमें उन बदली हुई परिस्थितियों के अनुसार अपने को ढालना समय का सही मूल्यांकन हैं, क्योंकि जब दो पीढ़ियों की उम्र का गैप परिवार में आता है तो वैचारिक मतभेद आना स्वाभाविक ही है इसलिए हम बड़ों को चाहिए कि पारिवारिक बिखराव को रोकने, नई पीढ़ी के साथ सकारात्मक विचारों के साथ सामंजस्य बैठाना समय की मांग है क्योंकि बदलते आधुनिक परिपेक्ष में नए सकारात्मक वैचारिकता धारण करना समय की मांग है क्योंकि जो समय को छोड़ देता देता है समय उनको छोड़ देता है।

साथियों बात अगर हम नई पीढ़ी के विचारों की करें तो ऐसा नहीं है कि हमें उनकी हर बातों में सामंजस्य बैठाना होगा, हमें उनकी सकारात्मक बात कैच कर उनके नकारात्मक बातों को उनके विचारों से हटाने का काम उनके साथ वैचारिक सामंजस्य बैठाकर ही करना होगा न कि पहले वाला तनावग्रस्त, आदेशात्मक व्यवहार, हमें अपने व्यवहार को सकारात्मक, प्रेरणादायक और मार्गदर्शन रूपी स्वभाव में बदलना होगा तो नई पीढ़ी से भी हमें सकारात्मक और अपनेपन का स्वभाव मिलेगा तब हम एक और एक ग्यारह का फ़ल प्राप्त कर आर्थिक, सामाजिक, नैतिक स्तर पर बलवान बनेंगे।

साथियों भारत अगर हम पुरानी पीढ़ी की वैचारिक मतभेद की करें तो, संभवतःजो लोग पुरानी पीढ़ी से संबंध रखते हैं वे युवा पीढ़ी को हमेशा शायद संदेह की नज़र के साथ देखते हैं। वे युवा पीढ़ी के साथ सामंजस्य नहीं बैठा पा रहे हैं। उन्हें लगता है कि उनका गुज़रा हुआ समय सबसे अच्छा समय था क्योंकि उस समय वे युवा थे और अपने बुजुर्गों का आदर करते थे तथा उनके प्रति अधिक आज्ञाकारी थे। वे ऐसा मानते थे कि अपने बुजुर्गों का अपमान करने से परिवार को अपूरणीय क्षति हो सकती है। इसके विपरीत आज के समय में युवाओं का मानना है कि उन्हें वृद्धों पर अत्यधिक निर्भर नहीं रहना चाहिए और उन्हें सब कुछ खुद करने के लिए आत्मनिर्भर होना चाहिए। युवा परिवार में अपने बुजुर्गों द्वारा दी सलाह का पालन करना शायद नापसंद करते हैं। जीवन की गति इतनी तेज हो गई है कि माता-पिता अपने बच्चों के लिए थोड़ा सा समय ही निकाल पाते हैं। युवा और बुज़ुर्ग पीढ़ी के बीच समझ और अंतरंगता को विकसित करने के प्रयास कम किए जा रहे हैं।

साथियों बात अगर हम युवाओं की दुविधा की करें तो, युवाओं को यह पता है कि वास्तव में हमारे देश की स्थिति क्या है। समर्पण, कर्तव्य, नैतिकता आदि पर चर्चाओं ने युवाओं को एक बड़ी दुविधा में डाल दिया है। आज के युवाओं को जो कुछ भी उनके बुजुर्ग उन्हें सिखाएंगे उसे वे आंख बंद कर स्वीकार करने के लिए तैयार नहीं हैं। जब युवाओं को यह पता चलता है कि भ्रष्टाचार और राजनीति ने हर क्षेत्र में प्रवेश कर लिया है। जिसके वजह से वे हमेशा सामाजिक और आर्थिक भेदभाव के खिलाफ लड़ाई लड़ने के लिए तैयार रहते हैं। इसलिए वे गंभीरता से समाज में बदलाव देखना चाहते हैं।

साथियों बात अगर हम पाश्चात्य संस्कृति देशों की करें तो विदेशी देशों में पीढ़ी का अंतर इतना बड़ा है कि युवा और बुज़ुर्ग लोग एक छत के नीचे रहना भी पसंद नहीं करते हैं। जब युवा पैसा कमाना शुरू करते हैं तो वे अपनी ज़िंदगी को स्वतंत्र रूप से शुरू करना चाहते हैं।

यदि संकल्प शुभ हो, श्रेष्ठ हो और दृढ़ हो तो कुछ भी ऐसा नहीं, जिसे प्राप्त ना किया जा सके।

हमारे निर्णय जितनी बार बदलते रहते हैं तो हमारी सफलता भी उतनी ही प्रभावित होती है। जितना भी सृजन महान व्यक्तियों के द्वारा इस धरती पर हुआ है, वह अनुकूल परिस्थितियों के कारण नहीं, अपितु दृढ़ संकल्पशक्ति के कारण ही हुआ है। इसलिए संकल्प से सुदृढ़ बनें। ध्यान रहे कि कोई भी कार्य असंभव नहीं है। यदि हमारे संकल्प मजबूत हों, नियोजित परिश्रम हो तो जीवन में कुछ भी प्राप्त करना असंभव नहीं रह जाता है। महान संकल्प ही महान लक्ष्य की प्राप्ति कराते हैं। संकल्प में बड़ी शक्ति होती है। इसी संकल्प के बल पर ही वानरों द्वारा समुद्र पर सेतु की स्थापना हो पायी और इसी संकल्प शक्ति के बल पर ही पांडवों द्वारा महाभारत के युद्ध को जीता गया।

मोती नगर इलाके के कैलाश पार्क में कबाड़ के गोदाम में लगी भीषण आग.....

परिवहन विशेष न्यूज

27/9/25 दिल्ली मोती नगर इलाके के कैलाश पार्क मैं सुबह 9 :30 बजे बजे के करीब मेट्रो पिलर नंबर 335 के सामन कबाड़ के गोदाम में लगी भीषण आग पब्लिक ने बताया कि तीन एलपीजी के सिलेंडर में भी ब्लास्ट हुआ है गट्टे के कबाड़ का गोदाम था एमसीडी की जगह कब्जा करके गोदाम बनाया हुआ है 500 गज से भी ज्यादा की जगह में यह गोदाम है यह जानकारी पब्लिक ने दी कड़ी मेहनत के बाद 10 फायर की गाड़ियों ने आग पर काबू पाया आपदा मित्र और नागरिक सुरक्षा की टीम ने घाटस्थल से जनता को हटाया और ट्रैफिक कंट्रोल किया जिसे बचाव कार्य में किसी प्रकार की दिक्कत न आए मौके पर स्थानिया पुलिस आपदा प्रबंधन की टीम आपदा मित्र दिल्ली नागरिक सुरक्षा बिजली विभाग की टीम मौजुद थी 12 :00 बाजे के करीब आग पर पूरी तरह से कबु पया गया।

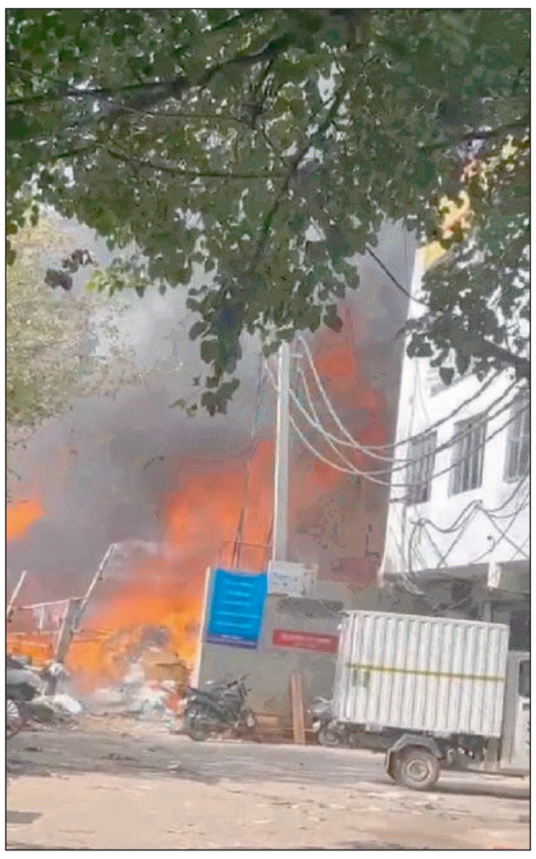

बिना पूर्ण जांच पड़ताल किए जनता का पैसा डीडीए द्वारा खर्च करना कितना सही ?

परिवहन विशेष न्यूज

दिल्ली में कुछ ही महीने पहले यमुना नदी ने रौद्र रूप दिखाया था, जिसके कारण नदी किनारे बने कई जगह पानी में डूब गए थे। अब लगता है कि दिल्ली विकास प्राधिकरण (DDA) उन सबक को भुलाकर एक बार फिर करोड़ों रुपये खर्च करने की तैयारी में है। एक्सपर्ट्स की तमाम चेतावनियों के बावजूद, DDA ने शुक्रवार को घोषणा की है कि वह यमुना किनारे के अपने दो प्रमुख घाटों - असिता (Asita) और वासुदेव (Vasudev) घाट पर मरम्मत और रखरखाव का काम फिर से शुरू करने जा रहा है।

भारत के गेमिंग इकोसिस्टम को बढ़ावा देने के लिए एसुस आरओजी ने क्रोमा दिल्ली में आरओजी शोडाउन का आयोजन किया।

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्लीः भारत के अग्रणी गेमिंग ब्रांड, एसुस रिपब्लिक ऑफ गेमर्स (आरओजी), ने आज क्रोमा, ओडियन सीपी में – आरओजी शोडाउन – का आयोजन किया। यह आयोजन उन कार्यक्रमों की श्रृंखला में नवीनतम है, जिनका उद्देश्य कम्युनिटी की भागीदारी को मजबूत बनाना और प्रतिस्पर्धी ई-स्पोर्ट्स को युवा गेमर्स के लिए अधिक सुलभ बनाकर भारत में गेमिंग इकोसिस्टम का विस्तार करना है।

इस संस्करण में वैलोरेंट (2v2 फॉर्मेट) शामिल था, जो युवा गेमर्स के बीच सबसे लोकप्रिय गेम में से एक है। टूर्नामेंट में 120 से ज़्यादा रजिस्ट्रेशन हुए, 60 टीमों ने भाग लिया और लाइव दर्शकों ने अपने पसंदीदा खिलाड़ियों का उत्साह बढ़ाने के लिए जमकर तालियाँ बजाईं, जिससे आयोजन स्थल पर एक रोमांचक माहौल बन गया।

इस पहल के बारे में बात करते हुए, एसुस इंडिया के एलएफआर मैनेजर परेश कपाड़िया ने कहा, "आरओजी शोडाउन के माध्यम से, हम न केवल गेमिंग प्रेमियों को प्रतिस्पर्धा करने और अपनी प्रतिभा दिखाने के अवसर प्रदान कर रहे हैं, बल्कि भारत में ई-स्पोर्ट्स के लिए एक मजबूत समुदाय भी बना रहे हैं। क्रोमा जैसे पार्टनर रीटेल स्टोर में टूर्नामेंट आयोजित करने से प्रतिस्पर्धी गेमिंग का रोमांच उपभोक्ताओं के और करीब पहुंचता है, साथ ही उन्हें आरओजी डिवाइस की पूरी क्षमता का

अनुभव करने का मौका भी मिलता है। यह भारत के गेमिंग इकोसिस्टम को मजबूत करने और अगली पीढ़ी के गेमर्स से जुड़ने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।"

क्रोमा में आरओजी शोडाउन के बारे में बात करते हुए, क्रोमा के एक प्रवक्ता ने कहा, "भारत में गेमिंग उद्योग तेजी से विकसित हो रहा है और इस विकास में अग्रणी भूमिका निभाने के लिए हम उत्साहित हैं। हमारे ओडियन, कनॉट प्लेस स्टोर में आरओजी शोडाउन का आयोजन करना, सीधे हमारे ग्राहकों को रोमांचक और ऊर्जावान अनुभव प्रदान करने की हमारी कोशिश का एक हिस्सा है। आजकल गेमिंग कई युवा भारतीयों के लिए एक करियर पाथ और जीवन भर की लगन बन गया है। एसुस आरओजी जैसे ब्रांडों के साथ सहयोग करके, हम ऐसे प्लेटफॉर्म बना रहे हैं जो अत्याधुनिक तकनीक को प्रदर्शित करते हैं और ई-स्पोर्ट्स को अधिक सुलभ बनाते हैं।"

विजेताओं को ₹35,000 का पुरस्कार मिला, जबकि उप-विजेताओं को ₹15,000 प्राप्त हुए। इस प्रतियोगिता के विजेता श्री संभव सिंह और श्री तुषार सिंह (उपविजेता) श्री सुरश और श्री अमन सिंह असवाल थे। इस तिमाही में ही 24 सफल शोडाउन के आयोजन के साथ – जिसमें छह लार्ज फॉर्मेट रीटेल (एलएफआर) स्टोर शामिल हैं, आरओजी आगे भी ऐसे रोमांचक अनुभव प्रदान करता रहेगा जो ई-स्पोर्ट्स और रीटेल सहभागिताओं को एक साथ जोड़ते हैं।

आज राजधानी टूरिस्ट ड्राइवर यूनियन द्वारा क़ुतुब मीनार पर विश्व पर्यटन दिवस समारोह आयोजित किया गया ।

सदर बाजार जाम को लेकर व्यापारियों व ट्रैफिक पुलिस अधिकारियों की बैठक

मुख्य संवाददाता

दिल्लीः त्योहारों को देखते हुए डीसीपी ट्रैफिक सेंटर रेंज निशांत गुप्ता ने ट्रैफिक की समस्याओं को लेकर अधिकारियों का व्यापारियों की एक बैठक बुलाई जिसमें इंस्पेक्टर. सुधीर टीआई,एसबीसी सहित अनेक ट्रैफिक अधिकारी व व्यापारी नेता सदर बाजार बारी मार्केट ट्रेडर्स एसोसिएशन के अध्यक्ष परमजीत सिंह पम्मा, आजाद मार्केट क्रोकरी मार्केट के टोनी, नरेश महाजन अध्यक्ष आजाद मार्केट, व्यापारी नेता हरजीत सिंह छाबड़ा सहित अनेक व्यापारी उपस्थित थे जिन्होंने सदर बाजार, आजाद मार्केट की ट्रैफिक की समस्याओं से डीसीपी साहब को अवगत कराया।

इस अवसर पर परमजीत सिंह पम्मा ने डीसीपी साहब निशांत गुप्ता को बताया सदर बाजार थाने से लेकर 12 टूटी चौक तक जो एमसीडी ने पार्किंग दी हुई है वह वहां पर दो-तीन लाइन गाड़ियां लगा देता है जिससे आए दिन जाम लगा रहता है। इसके साथ ही सभी सदर बाजार, आजाद मार्केट चौकों पर ई-रिक्शा वाले पुर चौक जाम कर देते हैं। उन्होंने डीसीपी साहब से निवेदन किया कि वह पिक एवर पर मिठाई पुल चौक, 12 टूटी, सदर थाना, कुतुब रोड, तेलीवाड़ा पर सुबह 9:00 से 11:00 तक शाम को 6:00 से 9:00 तक जरूर ट्रैफिक स्टाफ उपलब्ध कारण। जिससे आने वाली समय में काफी समस्या हल हो जाएगी।

परमजीत सिंह पम्मा ने कहा जिस प्रकार आने वाले समय में त्योहारों का है मार्केट में सामान खरीदने वालों की भीड़ भी बढ़ेगी। इसके लिए ट्रैफिक पुलिस का ज्यादा से ज्यादा स्टाफ तैनात किया जाए।

इस अवसर पर डीसीपी साहब निशांत गुप्ता ने व्यापारियों को आश्वासन दिया कि वह जल्द ही व्यापारियों की समस्या हल करेंगे और दशहरे के बाद ज्यादा स्टाफ मार्केट में ट्रैफिक पुलिस का बढ़ाया जाएगा। उन्होंने व्यापारियों से भी निवेदन किया कि वह कोई भी रोड पर गाड़ी ना खड़ी करें और वह सुबह शाम ट्रैफिक अधिकारियों को भी हर चौक पर तैनात करेंगे।

राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान ने मनाया हिन्दी उत्सव

हमें सदैव अपनी माँ, मातृभूमि और अपनी भाषा के प्रति निष्ठावान और ईमानदार होना चाहिएः– प्रो कैन

नई दिल्ली। हिंदी पखवाड़े के अंतर्गत हिंदी उत्सव में राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान, मुख्यालय नोएडा में ₹मुक्त शिक्षा के द्वारा ही भावी शिक्षा की दिशा निर्धारित होगी₹ विषय पर अंतर्विभागीय वाद-विवाद प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस प्रतियोगिता में - डॉ. आलोक कुमार गुप्ता, उप निदेशक (प्रशा.), डॉ. इंद्रजीत सिंह, निर्माण सहायक ने प्रथम ; डॉ. अविनाश त्रिपाठी, शैक्षिक अधिकारी, श्रीमती उमंग चौहान, शैक्षिक अधिकारी ने द्वितीय; श्री चुन्नू प्रसाद, सहायक निदेशक ,श्री अतुल कुमार शर्मा,अनुभाग अधिकारी ने तृतीय स्थान ;श्री अदिति रंजन राउत, श्री बी. सतीश, डॉ. ऑंचल गोस्वामी, श्रीमती सुनीता रानी ने प्रोत्साहन पुरस्कार प्राप्त किए।

इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में हिंदी विशेषज्ञ प्रोफेसर मनोज कुमार कैन उपस्थित रहे। प्रो. मनोज कुमार कैन दिल्ली विश्वविद्यालय के पीजीडीएवी कॉलेज में प्रोफेसर हैं। मुख्य अतिथि का स्वागत उप - निदेशक श्री राजेश गौतम ने किया ।कार्यक्रम का संचालन कर रहे डॉ. आलोक कुमार गुप्ता ने प्रो. कैन का संक्षिप्त परिचय प्रस्तुत किया। प्रो. कैन ने पुरस्कार प्राप्त प्रतिभागियों को बधाई देते हुए कहा कि आज वर्तमान सरकार हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार के लिए प्रतिबद्ध है। निरंतर हिंदी की उन्नति और प्रगति के लिए कार्य कर रही है। सरकार द्वारा नई शिक्षा नीति में हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं के प्रोत्साहन पर बल दिया गया है ।सरकार के प्रयासों से विश्व में भारत और हिंदी भाषा की एक अलग पहचान बनी है। उन्होंने कहा हमें सदैव अपनी माँ, मातृभूमि और अपनी भाषा के प्रति निष्ठावान और ईमानदार होना चाहिए। प्रो. कैन ने हिंदी दिवस और हिंदी पखवाड़े के अंतर्गत आयोजित की जाने वाली प्रतियोगिताओं के महत्व पर भी प्रकाश डाला । कार्यक्रम में हिंदी अधिकारी डॉ. सर्वेश कुमारी चौहान ने बताया कि एनआईओएस मुख्यालय के साथ-साथ पूरे भारत में स्थित इसके 20 क्षेत्रीय केंदों में भी विभिन्न प्रतियोगिताएं एवं कार्यक्रम आयोजित कराए जा रहे हैं। उसी कड़ी में आज की प्रतियोगिता भी आयोजित हुई। आत्रेयी सिन्हा, डॉ. अलका सिंह, अर्चना वर्णमाल,अलका तिवारी, सुशील कुमार, राजीव कुमार,बालम गिरी, पंकज पाल आदि गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहें। यह आयोजन सफल और सार्थक रहा ।

दिल्ली के विकास मिश्र को लखीमपुर खीरी में मिलेगा "गोमती साहित्य सम्मान 2025"

(डॉ. गोपाल चतुर्वेदी)

दिल्ली। उत्तर प्रदेश के जनपद लखीमपुर खीरी के कस्बे मोहम्मदी में भारत की प्रतिष्ठित संस्था कथाकुंज साहित्य सेवा परिषद के द्वारा कथाकुंज के संरक्षक प्रो.सुदीप कुमार की स्मृति में अंतरराष्ट्रीय साहित्य सम्मेलन व सम्मान समारोह का आयोजन 7 अक्तूबर 2025 को बड़े ही हर्षोल्लास एवं धूमधाम के साथ आयोजित किया जायेगा।

इसमें शामिल साहित्यकारों को क्रमशः ₹केतकी साहित्य रत्न सम्मान 2025₹ (महिला) व ₹गोमती साहित्य रत्न सम्मान 2025₹ (पुरुष) को प्रदान किया जाता है ।इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में पूर्व कृषि राज्य मंत्री श्रीमती कृष्णा राज व विशिष्ट अतिथि के रूप में लोकेंद्र प्रताप सिंह सभापति (राज्यमंत्री) एवं

पंचायती राज समिति,उत्तर प्रदेश तथा संदीप मेहरोत्रा (पालिकाध्यक्ष, मोहम्मदी) उपस्थित रहेंगे।

ज्ञात हो कि संस्था के द्वारा पिछले 3 वर्षों में 50 से भी अधिक साहित्यकार इस सम्मान से सम्मानित हो चुके हैं।

संस्था अध्यक्ष गोविंद गुप्त ने बताया कि इस वर्ष भी पूरे देश से चयन किया गया है ।इस वर्ष पुरुषों में ₹गोमती साहित्य सम्मान 2025₹ से सम्मानित होने वाले कवियों में दिल्ली विश्वविद्यालय के श्री वेंकटेश्वर कॉलेज में कार्यरत विकास मिश्र को संस्था द्वारा चयनित किया गया है ।जो मूलतः ग्राम नटोली, कलां ब्लॉक कूरेभार, सुल्तानपुर (उ.प्र.)के निवासी हैं ।पूर्व में वे राम राजी डिग्री कॉलेज, वैदहा में राजनीति विज्ञान के सहायक प्रोफेसर, शास्त्री बाल विद्या मंदिर, मोतीगंज में अंग्रेजी विषय के प्रवक्ता, सुदनापुर बाजार में आकाश कोचिंग सेंटर के प्रबंधक, शांती देवी बाल शिक्षण संस्थान, बरचवल (कूरेभार) के उप प्रबंधक के पद पर कार्यरत रह चुके हैं ।शिक्षा विभाग से उनका और उनके परिवार का पुराना नाता है ।अंग्रेजी विषय और राजनीति शास्त्र से पोस्ट ग्रेजुएट विकास मिश्र को कविता और लेखन में विशेष रुचि है। क्योंकि उनके पूज्य पिताजी भी मधुसूदन विद्यालय इंटर कॉलेज, सुल्तानपुर में सहायक अध्यापक रहे हैं ।पिछले चार वर्षों से विकास मिश्र कविताएं भी लिख रहे हैं।

विकास मिश्र अनेक साहित्यिक संस्थाओं से भी जुड़े हुए हैं ।अखिल भारतीय काव्य मंच, मुंबई जिसके वह सचिव एवं प्रवक्ता हैं। वे पत्रकारिता जगत से भी जुड़े हैं ।प्रतिष्ठित ₹दि ग्राम टुडे₹ हिन्दी दैनिक समाचार पत्र में उप संपादक और संस्कार न्यूज में भी वह रेजिडेंट संपादक हैं ।कविता लेखन के साथ वह मंचों पर अच्छा संचालन भी करते हैं।

प्रतिभा पलायन को रोकने का बड़ा मौका

प्रो. महेश चंद गुप्ता

अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने एच-1बी वीजा फीस में बेतहाशा बढ़ोतरी कर दी है। पहले जहां यह फीस लगभग 80 हजार रुपये थी, वहीं अब इसे 80 लाख रुपये तक बढ़ा दिया गया है। स्वाभाविक है कि अब पहले जितनी संख्या में भारतीय युवा अमेरिका नहीं जा पाएंगे। इस फैसले से दुनिया भर में उथल-पुथल मची है जिसका फायदा उठाने की कोशिश चीन कर रहा है। उसने 'के वीजा' नामक नई श्रेणी की घोषणा की है जिसके तहत वह दुनिया भर के युवा वैज्ञानिकों और तकनीकी प्रोफेशनल्स को अपने यहां आकर्षित करना चाहता है। यह वीजा शिक्षा, संस्कृति, विज्ञान तकनीक और व्यवसाय के क्षेत्र में अवसर उपलब्ध कराएगा।

भारत के लिहाज से यह स्थिति एक बड़ी चुनौती और अवसर दोनों लेकर आई है। चुनौती इसलिए क्योंकि अमेरिकी दरवाजे बंद होने के बाद चीन नए अवसर देकर हमारी प्रतिभाओं को अपने यहां खींच सकता है। अवसर इसलिए है क्योंकि यह भारत के लिए प्रतिभा पलायन रोकने का सुनहरा मौका है। अब जरूरत इस बात की है कि सरकार, उद्योग जगत और कॉर्पोरेट सेक्टर मिलकर ऐसे वातावरण का निर्माण करें जहां हमारे युवा देश में रहकर ही अपने सपनों को साकार कर सकें। भारत हमेशा से ही शिक्षा और प्रतिभा के मामले में समृद्ध रहा है पर प्रतिभा पलायन हमारी बड़ी समस्या है। हर साल लाखों छात्र-छात्राएं इंजीनियरिंग, मेडिकल, मैनेजमेंट और रिसर्च के क्षेत्र में पढ़ाई पूरी करते हैं लेकिन अफसोस है कि उनमें से बड़ी संख्या में युवा विदेशों का रुख कर लेते हैं। इसका सबसे बड़ा कारण यह है कि भारत में शोध के लिए पर्याप्त संसाधन उपलब्ध नहीं होते हैं, रोजगार के अवसर सीमित हैं और जो अवसर उपलब्ध हैं, उनमें योग्य प्रतिभा को सम्मान और सुरक्षा का अभाव है।

डॉक्टर, इंजीनियर, वैज्ञानिक और आईटी प्रोफेशनल विदेश जाकर वहां की अर्थव्यवस्था को मजबूत कर रहे हैं जबकि उनकी प्रतिभा का लाभ भारत को मिलना चाहिए। एक तरफ हम युवाओं की शिक्षा पर करोड़ों रुपये खर्च करते हैं, दूसरी ओर वे अवसरों की कमी के कारण देश छोड़ जाते हैं। यह भारत के विकास के लिए बड़ी हानि है। ट्रंप का वीजा फीस वृद्धि का कदम दुनिया के कई देशों के लिए चिंता का विषय हो सकता है लेकिन मुझे लगता है कि भारत को इसे सकारात्मक रूप में देखना चाहिए। जब अमेरिका में वीजा इतना महंगा हो गया है कि आम युवा वहां नहीं जा पाएंगे तो इससे स्वाभाविक रूप से प्रतिभा पलायन पर अंकुश लगेगा। यह स्थिति भारत के लिए किसी वरदान से कम नहीं है। अब सवाल यह है कि क्या इस मौके का उपयोग भारत कर पाएगा? अगर सरकार और उद्योग जगत ने युवाओं के लिए बेहतर माहौल तैयार किया तो वे भारत में ही रहकर काम करना पसंद करेंगे लेकिन अगर ऐसा नहीं हुआ तो यह संभावना है कि निराश युवा चीन की ओर आकर्षित हो जाएं।

चीन ने हालात को भांपते हुए तेजी से 'के वीजा' का विकल्प प्रस्तुत किया है। इस वीजा के माध्यम से वह दुनिया भर की प्रतिभाओं को अपने यहां शिक्षा, रिसर्च और बिजनेस में अवसर देने की योजना बना रहा है। ऐसा करके वह वैश्विक विज्ञान और तकनीक के क्षेत्र में नेतृत्व के अपने लक्ष्य को पूरा करने की तमन्ना रखता है। यदि भारतीय युवा अमेरिका के बजाय चीन का रुख करने लगे तो यह हमारे लिए और भी गंभीर स्थिति होगी क्योंकि एक तरफ तो भारत अपनी ही प्रतिभा से वंचित रह जाएगा और दूसरी ओर चीन हमारी ही ताकत का उपयोग करके आगे निकलने की कोशिश करेगा। ऐसे समय में हमें गहरा आत्म चिंतन की जरूरत है। इस समय यह बड़ा सवाल है कि क्या हमारे युवा विदेशों में ही अपनी क्षमता साबित करेंगे या फिर देश में रहकर भारत को नई ऊंचाइयों पर ले जाएंगे? इसका उत्तर देश की

नीतियों और कार्यप्रणालियों पर निर्भर करता है।

वर्तमान में विश्व की टॉप 100 कार्पोरेट कंपनियों में उच्च पदों पर हमारे युवा हैं, जो उनके कामकाज को पूरे विश्व में फैलाने में सहायक हो रहे हैं। सुंदर पिचई (गूगल), सत्य नडेला (माइक्रोसॉफ्ट), अजय बंगा (विश्व बैंक), अरविंद कृष्णा (आईबीएम) और इंद्रा नूई (पेप्सीको) जैसे दिग्गज भारतीय मूल के लोगों ने पूरी दुनिया में भारत का नाम रोशन किया है। उनकी सफलता यह साबित करती है कि भारतीय मस्तिष्क वैश्विक स्तर पर किसी से कम नहीं है। सवाल यह है कि अगर प्रतिभावान युवाओं को देश में ही जरूरत अवसर और वातावरण मिल जाता तो क्या वे यहीं रहकर भारत को विश्व का नेतृत्व दिला सकते थे? इस सवाल का जवाब निश्चित रूप से हाँ में है।

देश के युवाओं को पिछले सत्तर साल में जो आधारभूत ढांचा, रिसर्च एंड डवलपमेंट की सुविधाएं, वेतन और अन्य सुविधाएं देनी चाहिए थीं, अगर वह दी गईं होतीं तो प्रतिभा पलायन की स्थिति न बनती।। हमारा देश तेजी से आगे बढ़ रहा है लेकिन डिजिटल और तकनीकी क्षेत्र में हम अब भी कमजोर हैं। और तो और, हमारे पास अपना भरोसेमंद सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म नहीं है। हम ई-मेल सेवा जैसी बुनियादी सुविधा के लिए भी विदेशी कंपनियों पर निर्भर हैं। हमें कम्प्यूटर, मोबाइल फोन और चिप तकनीक में आत्म निर्भरता हासिल नहीं हुई है।आज भी हम रक्षा हथियारों व रक्षा उपकरणों, यात्री विमानों, लड़ाकू विमानों आदि के लिए दूसरों पर निर्भर हैं। कम्प्यूटर व डिजिटली टेक्नोलॉजी, उच्च शिक्ष, डेटा प्रबंधन, अकाउंटिंग एवं फायनेंस मैनेजमेंट, ऑडिट एवं कन्सलटेंसी, रिसर्च टेक्नोलॉजी आदि पर हम विश्व टॉप संस्थानों पर पूर्णतया निर्भर हैं। हमें इस स्थिति को तीव्रगति से बदलना होगा अन्यथा, हम विकसित भारत के लक्ष्य को पूरा करने में सक्षम नहीं होंगे।

अपार युवा प्रतिभा मौजूद होने के बावजूद यह स्थिति चिंताजनक है। अगर हमारे युवाओं को आवश्यक संसाधन, शोध की सुविधाएं और आर्थिक सहयोग दिया जाए तो वे देश को तकनीकी रूप से आत्मनिर्भर बना सकते हैं। इस मामले में सरकार और समाज की भूमिका महत्वपूर्ण है। प्रतिभा पलायन रोकने के लिए सिर्फ सरकार पर निर्भर रहना पर्याप्त नहीं है। सरकार को प्रतिभाशाली युवाओं को चिन्हित कर उनकी जरूरतों के अनुसार शोध, स्टार्टअप और रोजगार के अवसर उपलब्ध कराने चाहिए। औद्योगिक समूह रिसर्च और इनोवेशन में निवेश करें जिससे युवाओं को विश्व स्तरीय मंच मिले। कॉर्पोरेट सेक्टर को देश के भीतर ही आकर्षक वेतन और कार्य संस्कृति प्रदान करने का दायित्व उठाना चाहिए।

आज समय ने करवट ली है। प्रकृति भारत को परम वैभव पर देखना चाहती है। इसलिए भारत के सामने अनेक चुनौतियां आ रही हैं। अब समय इन चुनौतियों को अवसर में बदलने का है। कुल मिलाकर, अमेरिकी कदम भारत के लिए सकारात्मक है। इससे हमें ऐसे कदम उठाने की प्रेरणा लेनी चाहिए कि हम अपनी प्रतिभा को यहीं रोकें और उन्हें ऐसे अवसर दें जिससे वे विदेश जाने की बजाय देश में ही काम करें। अगर हम अपने युवाओं को यहीं अवसर देंगे तो देश की अर्थव्यवस्था को मजबूती मिलेगी। तकनीकी और डिजिटल क्षेत्र में आत्मनिर्भरता संभव होगी। मेड इन इंडिया का सपना साकार होगा। अगर सरकार, उद्योग जगत और समाज इस दिशा में मिलकर काम करें तो भारत अपनी प्रतिभा के बल पर न केवल आत्म निर्भर बन सकता है बल्कि दुनिया को नई दिशा भी दे सकता है। तेजी से बदलते विश्व परिदृश्य में हमारे 145 करोड़ नागरिकों वाले देश का हर क्षेत्र में आत्मनिर्भर होना अपरिहार्य है।

प्रो. महेश चंद गुप्ता
(लेखक विख्यात शिक्षाविद्, चिंतक और वक्ता हैं। वह 44 सालों तक दिल्ली विश्वविद्यालय में प्रोफेसर रहे हैं।)

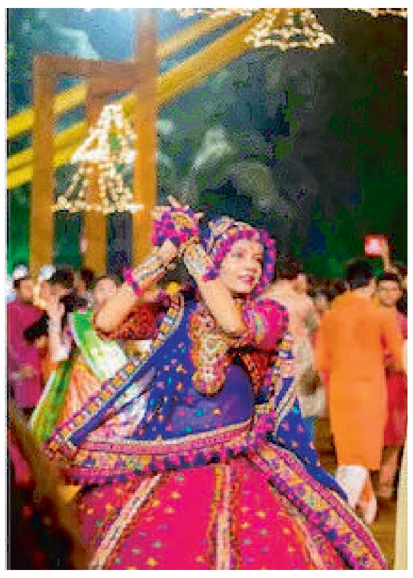

डांडिया की धुन में हैं 'एकता' का संदेश...!

आज भी डांडिया की धुन में हैं 'एकता' का संदेश,
गुजरात की सांस्कृतिक परंपरा फैली देश-विदेश।
ये नृत्य नहीं सामूहिकता, अनुशासन आनंदोत्सव,
ढोल-नगाड़ों के थाप एक लय में होता नृत्योत्सव।

वह दृश्य जब 'सैकड़ों लोग' एक साथ करते नृत्य,
भारतीय संस्कृति की समृद्धि एवं विविधता दृश्य।
डांडिया का महत्व 'मनोरंजन' तक नहीं है सीमित,
ये समाज को जोड़ने के माध्यम भी है अपरिमित।

भिन्न-भिन्न वर्गों,भाषाओं पृष्ठभूमियों से आते लोग,
एक ही ताल पे थिरकते भेद मिटाके करें सहयोग।
मजबूत होती एकता की भावना रहती सदभावना,
ऐसे आयोजनों का महत्व हैं प्रगति पथ पर बढ़ना।

संजय एम तराणेकर
(कवि, लेखक व समीक्षक)

आत्मशक्ति, भक्ति और लोककल्याण का महापर्व: नवरात्रि - मां भगवती के चरणों में है जीवन की पूर्णता : वरिष्ठ समाजसेवी राजेश खुराना

श्री राजेश खुराना ने मां भगवती से सम्पूर्ण विश्व के सुख, शांति, सद्भाव और समृद्धि की कामना की – कहा, हम सभी यह प्रार्थना करें कि मां दुर्गा की अनंत कृपा मानवता पर निरंतर बनी रहे और उनके आशीर्वाद से सम्पूर्ण विश्व में प्रकाश, प्रेम और लोककल्याण का विस्तार हो

नवरात्रि : एक अवसर आत्मबोध का, एक संकल्प लोकसेवा का – भक्ति, सेवा और शक्ति के इस पर्व को आंतरिक जागरण के साथ मनाएं

आगरा, संजय सागर सिंह। शुक्रवार को देहली गेट स्थित राजा मंडी रेलवे स्टेशन परिसर में दैनिक यात्री व व्यापारी संघ (पोला भाई ग्रुप) द्वारा आयोजित मां चामुंडा देवी मेले में वरिष्ठ समाजसेवी राजेश खुराना ने भव्य महाआरती कर मां का आशीर्वाद प्राप्त किया। श्रद्धा से ओत-प्रोत इस आयोजन में बड़ी संख्या में श्रद्धालु उपस्थित रहे।

मां भगवती करुणा की साकार मूर्ति

अपने संदेश में श्री राजेश खुराना ने कहा, ‟मां भगवती केवल शक्ति की अधिष्ठात्री ही नहीं, अपितु करुणा, प्रेम और लोककल्याण की सजीव प्रतिमूर्ति हैं। उनके चरणों में जीवन की पूर्णता, शांति और संतुलन निहित है। मां दुर्गा की कृपा से जीवन के समस्त क्लेश समाप्त होते हैं और आत्मा को शुद्धि का पथ प्राप्त होता है।

नवरात्रि: आध्यात्मिक यात्रा और आत्मचिंतन का काल

वरिष्ठ समाजसेवी श्री खुराना ने नवरात्रि को आत्मनिरीक्षण, संयम और सेवा का पर्व बताते हुए कहा कि यह समय केवल व्रत और पूजा का नहीं, बल्कि अपने अंतर्मन से संवाद करने और भीतर की शक्ति को पहचानने का है। यह पर्व आत्मा को परमात्मा से जोड़ने का माध्यम है, जिसमें साधक अपनी अंतःशक्ति को जागृत कर उसे समाज सेवा में समर्पित करता है।

मां के नौ रूप: साधना से सिद्धि तक

श्री खुराना ने कहा कि नवरात्रि में मां दुर्गा के नौ रूपों की उपासना साधक को न केवल आध्यात्मिक बल प्रदान करती है, बल्कि मानसिक स्थिरता, आरोग्यता और जीवन में संतुलन भी स्थापित करती है। मां भगवती अपने भक्तों के दुःख हरकर उन्हें ऊर्जा और उत्साह से भर देती हैं।

नवरात्रि: लोककल्याण और सामाजिक समरसता का संदेश

सभी नागरिकों से अपील करते हुए श्री खुराना ने कहा, शक्ति, साधना और समाजसेवा का संगम नवरात्रि का पर्व न केवल धार्मिक आस्था का प्रतीक है, बल्कि यह आत्मिक उत्थान और सामाजिक समरसता का सशक्त माध्यम भी है। हर व्यक्ति को इस पर्व को श्रद्धा, भक्ति और सेवा के संकल्प के साथ मनाना चाहिए। नवरात्रि केवल धार्मिक अनुष्ठान नहीं, यह आत्म-शक्ति की पहचान और जनकल्याण की दिशा में उठाया गया एक सशक्त कदम है।

मां दुर्गा की कृपा सम्पूर्ण विश्व पर बनी रहे

अपने संदेश के समापन में श्री राजेश खुराना ने मां भगवती से सम्पूर्ण विश्व के सुख, शांति, सद्भाव और समृद्धि की कामना की। उन्होंने आगे कहा, हम सभी यह प्रार्थना करें कि मां दुर्गा की अनंत कृपा मानवता पर निरंतर बनी रहे और उनके आशीर्वाद से सम्पूर्ण विश्व में प्रकाश, प्रेम और लोककल्याण का विस्तार हो। नवरात्रिः एक अवसर आत्मबोध का, एक संकल्प लोकसेवा का - भक्ति, सेवा और शक्ति के इस पर्व को आंतरिक जागरण के साथ मनाएं।

कानपुर में गुरु के घर से लाखों के जेवरात उढ़ाने वाली मुजफ्फरनगर की किन्नर चांदनी की तलाश में छापे

सुनील बाजपेई

कानपुर। यहां अपने गुरु व अन्य साथी किन्नरों के चकेरी स्थित घर से मुजफ्फरनगर में रहने वाली किन्नर चांदनी अपने दोस्तों के साथ मिलकर लगभग 30 लाख के जेवरात लेकर चंपत हो गई है। रिपोर्ट दर्ज करने के बाद पुलिस ने अब उसके गृह जनपद मुजफ्फरनगर में भी जाल बिछाया है। फिलहाल समाचार लिखे जाने तक उसका सुराग नहीं मिला है। पुलिस उसकी तलाश में लगातार जुटी है।

मिली जानकारी के मुताबिक शातिर किन्नरों ने अपने गुरु माता और डेरे के किन्नरों को ही नशीली चाय देकर करीब 30 लाख के जेवरात और कैश उड़ा दिया। होश में आने पर किन्नर ने मामले की जानकारी चकेरी थाने में दी।

यह वारदात सीसीटीवी कैमरे में भी कैद हो गई है।

प्राप्त विवरण के मुताबिक सनिगवां केआरपुरम की रहने वाली रेशमा किन्नर किन्नर समाज की गुरु माता है। जो किन्नर के रूप में अपने डेरे में रहती है।

मौके पर पहुंची पुलिस को पीड़ित किन्नर रेशमा ने बताया कि सुबह 11 बजे मुजफ्फरनगर की रहने वाली चांदनी किन्नर अपने दो साथियों के साथ उनके डेरे में आई। कई बार पहले भी वह डेरे में आ चुके थे।

इसी दौरान उन्होंने सभी को नशीला पदार्थ पिला दिया और जब बेहोश हो गए तो लगभग 30 लाख के जेवरात लेकर फरार हो गये। फिलहाल पुलिस रिपोर्ट दर्ज करके उनकी तलाश कर रही है।

लता जी संगीत की शिखर साध्वी: जयंती नहीं, स्वर-उत्सव है

जिस तरह राग दरबारी की तान मन को गहन शांति और आलौकिक अनुभूति में डुबो देती है, उसी तरह लता मंगेशकर का नाम लेते ही हर भारतीय का हृदय श्रद्धा, प्रेम और गर्व की लहरों से झंकृत हो उठता है। 28 सितंबर 1929 को इंदौर के एक साधारण मराठी परिवार में जन्मी लता जी केवल एक गायिका नहीं थीं, बल्कि भारतीय संगीत की वह धरोहर थीं, जिन्होंने अपने स्वर से युगों को जोड़ा। उनकी आवाज़ एक जादुई तार थी, जो हर भावना—प्रेम, विरह, भक्ति, और देशप्रेम को आत्मा की गहराइयों तक पहुँचाती थी। लता जी का जन्म न केवल एक तारीख था, बल्कि भारतीय संस्कृति में एक स्वर्णिम युग का प्रारंभ था, जिसने संगीत को आत्मा का दर्पण बना दिया। "स्वर कोकिला" का खिताब उनके लिए केवल एक सम्मान नहीं, बल्कि उनकी आवाज़ की पवित्रता और गहराई का साक्षात्कार था।

उनका मूल नाम हेमा था, पर उनके पिता, शास्त्रीय संगीतज्ञ और रंगमंच के दिग्गज पंडित दीनानाथ मंगेशकर ने उन्हें "लता" नाम दिया। घर में संगीत का ऐसा माहौल था कि मानो हर दीवार से रागिनी और हर हवा में ताल गूंजता था। पाँच वर्ष की उम्र से ही लता जी ने पिता के नाटकों में अभिनय शुरू किया, और संगीत उनकी साँसों का हिस्सा बन गया। लेकिन 1942 में, जब वह मात्र 13 वर्ष की थीं, उनके पिता का असामयिक निधन ने परिवार को आर्थिक और भावनात्मक संकट में डाल दिया। इस नन्ही उम्र में लता जी ने अपने कंधों पर परिवार की जिम्मेदारी उठाई और अपनी आवाज़ को अपनी सबसे बड़ी ताकत बनाया। यही दृढ़ता और संकल्प उनकी आवाज़ में वह करुणा और तीव्रता लाया, जो हर गीत को अमर कर गया।

1942 में मराठी फिल्म "किटी हसाल" के लिए उनका पहला गीत (नाचू या गड़े, खेलो सारी मणि हौस भारी) रिकॉर्ड हुआ, लेकिन हिंदी सिनेमा में उनकी राह आसान नहीं थी। उस दौर में नूरजहाँ और शमशाद बेगम जैसी दमदार आवाज़ों का बोलबाला था, और लता जी की कोमल, मधुर आवाज़ को कई निर्माताओं ने "पतली" कहकर ठुकरा दिया। लेकिन लता जी का आत्मविश्वास और अथक परिश्रम ने संगीत की दुनिया को उनकी प्रतिभा का कायल बना दिया। 1949 में फिल्म "महल" का गीत "आएगा आनेवाला" उनकी पहली बड़ी कामयाबी थी, जिसने न केवल उन्हें रातोंरात सितारा बनाया, बल्कि हिंदी सिनेमा में पार्श्वगायन की नींव को नए सिरे से गढ़ा। यह गीत लता जी की आवाज़ का वह जादू था, जो समय और सीमाओं को लाँघकर आज भी हर दिल में गूंजता है।

लता मंगेशकर की आवाज़ एक ऐसी नदी थी, जो हर भाव की गहराई को छूकर श्रोता के हृदय तक बहती थी। उनकी बहुमुखी प्रतिभा का जादू इस बात में था कि वह हर राग, हर भाव को अपनी आवाज़ में इस तरह पिरोती थीं। चाहे प्रेम की मधुर लय हो, जैसे "लग जा गले" में छलकती कोमलता, या "तेरे बिना ज़िंदगी से" में बसी नाज़ुक शिकायत; विरह की करुणा हो, जैसे "आजा रे परदेसी" की पुकार; भक्ति की पवित्रता हो, जैसे "ज्योति कलश छलके" या "ओ पालनहारे" का आलोक; या फिर राष्ट्रप्रेम की हुंकार, जैसे "ए मेरे वतन के लोगों" की गूंज—लता जी की आवाज़ हर गीत को एक अविस्मरणीय अनुभव बना देती थी। 1962 में भारत-चीन युद्ध के बाद गाया गया "ए मेरे वतन के लोगों" केवल एक गीत नहीं था, बल्कि देश की एकता और बलिदान की भावना का प्रतीक था। इस गीत ने न केवल जवाहरलाल नेहरू की आँखें नम कीं, बल्कि हर भारतीय के हृदय में देशभक्ति की ज्वाला प्रज्वलित कर दी।

लता जी की महानता केवल उनकी आवाज़ तक सीमित नहीं थी; उनकी सादगी, अनुशासन और विनम्रता ने उन्हें एक युगपुरुष बनाया। वह समय की पाबंदी की जीवंत मिसाल थीं—रिकॉर्डिंग स्टूडियो में हमेशा समय से पहले पहुँचने वाली लता जी हर गीत को तपस्या की तरह गाती थीं। नौशाद, मदन मोहन, शंकर-जयकिशन, और आर.डी. बर्मन जैसे संगीतकारों के साथ उनका रिश्ता केवल पेशेवर नहीं, बल्कि हृदय से हृदय का बंधन था। वह गीत के बोल और भाव को पहले आत्मसात करती थीं, फिर अपनी आवाज़ से उसे अमर कर देती थीं। यही कारण है कि उनके गीत समय की सीमाओं को लाँघकर आज भी उतने ही जीवंत और प्रासंगिक हैं। 36 से अधिक भाषाओं में 30,000 से अधिक गीत गाकर लता जी ने विश्व संगीत में एक अनुपम कीर्तिमान स्थापित किया। उनकी आवाज़ ने हिंदी सिनेमा को वैश्विक पहचान दी, और मराठी, बंगाली, तमिल, तेलुगु जैसी क्षेत्रीय भाषाओं में भी अपनी अमिट छाप छोड़ी। उनके गीत केवल संगीत नहीं, बल्कि जीवन के हर रंग के साथी हैं—प्रेम में मिठास, दुख में सांत्वना, और देशभक्ति में जोश का संचार करने वाले। लता जी की आवाज़ वह जादुई तार थी, जो हर पीढ़ी के हृदय को एक सूत्र में बाँध लेती थी। उनकी विरासत संगीत की दुनिया में एक ऐसी रोशनी है, जो कभी मद्धम नहीं होगी।

लता मंगेशकर उस युग की मशाल थीं, जिन्होंने न केवल संगीत की दुनिया को आलोकित किया, बल्कि महिलाओं के लिए एक नया आकाश रचा। उस दौर में, जब समाज में महिला कलाकारों को सीमित दायरे और सम्मान में बाँधा जाता था, लता जी ने अपनी आवाज़ की ताकत से हर रूढ़ि को तोड़ा। उनकी कोमल, मधुर आवाज़ ने पुरुष-प्रधान मानसिकता को चुनौती दी और साबित किया कि कला की कोई लैंगिक सीमा नहीं होती। उनकी सफलता ने लाखों महिलाओं को प्रेरित किया कि प्रतिभा और दृढ़ संकल्प के बल पर वे अपने सपनों को पंख दे सकती हैं।

लता जी का व्यक्तित्व उनकी कला जितना ही प्रेरणादायी था। अपार ख्याति और वैभव के बावजूद वह सादगी की मूर्ति रहीं। अहंकार को उन्होंने कभी अपने पास नहीं फटकने दिया। वह कहती थीं, "मेरा सबसे बड़ा पुरस्कार है जनता का प्यार।" भारत सरकार ने उन्हें पद्म भूषण (1969), पद्म विभूषण (1999), दादा साहब फाल्के पुरस्कार (1989), और भारत रत्न (2001) से सम्मानित किया। फ्रांस का सर्वोच्च नागरिक सम्मान "लीजन ऑफ ऑनर" भी उन्हें प्राप्त हुआ। 6 फरवरी 2022 को उनके निधन ने विश्व भर में एक शून्य छोड़ दिया। यह केवल एक व्यक्ति का जाना नहीं, बल्कि एक युग का अवसान था। फिर भी, लता जी का स्वर कभी मूक नहीं हो सकता। उनकी आवाज़ मंदिर की घंटियों-सी पवित्र, माँ की लोरी-सी शाश्वत, और रागिनी-सी अनंत है। उनके गीत आज भी हर घर में गूँजते हैं, हर दिल को छूते हैं, और आने वाली पीढ़ियों को प्रेरित करते रहेंगे।

प्रो. आरके जैन "अरिजीत", बड़वानी (मप्र)

ट्रंप ने भारत पर फोड़ा टैरिफ बम- दवाओं पर 100 पर्सेंट टैरिफ- वैश्विक अर्थव्यवस्था भारत और अंतरराष्ट्रीय परिदृश्य पर विश्लेषण

ट्रंप टेरिफ़,ब्रांडेड और पेटेंट वाली फार्मास्युटिकल दवाओं पर लगेगा ,जबकि भारत जेनेरिक दवा उत्पादक और निर्यातक देश है, इस फैसले से भारत प्रभावित नहीं होगा– एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानी गोंदिया महाराष्ट्र

वैश्विक स्तरपर अंतरराष्ट्रीय व्यापार की दुनियाँ में नीति-निर्माण अक्सर केवल आर्थिक नहीं बल्कि राजनीतिक, रणनीतिक और सामाजिक दृष्टिकोण से भी जुड़ा होता है। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने हाल ही में ब्रांडेड और पेटेंटेड दवाओं पर 100 पर्सेंट टैरिफ लगाने की जो घोषणा की है,वह इसी तथ्य का प्रमाण है। यह निर्णय 1 अक्टूबर 2025 से प्रभावी होगा। उल्लेखनीय है कि यह टैरिफ उन कंपनियों पर लागू नहीं होगा जो अमेरिका के भीतर उत्पादन इकाइयां स्थापितकरेंगी। इसका सीधा अर्थ है कि ट्रंप प्रशासन"अमेरिका फर्स्ट"और "मेक इन अमेरिका" की नीति को फार्मास्यूटिकल सेक्टर में और मजबूत करना चाहता है।यह कदम न केवल अमेरिकी उपभोक्ताओं और कंपनियों पर असर डालेगा बल्कि अंतरराष्ट्रीय स्तरपर भी इसकी गूंज सुनाई देगी। किचन कैबिनेट, बाथरूम वैनिटी पर भी 50 पर्सेंट टैरिफ लगाया-ट्रम्प ने किचन कैबिनेट, बाथरूम वैनिटी और उनसे जुड़े सभी सामानों पर भी टैरिफ लगाया है। उन्होंने कहा- 'हम 1 अक्टूबर 2025 से, किचन कैबिनेट, बाथरूम वैनिटी और उनसे जुड़े सभी सामानों पर 50, पर्सेंट टैरिफ लगाना शुरू कर देंगे। इसके अलावा, हम अपहोल्स्टर्ड फर्नीचर (गद्देदार या फोम वाला फर्नीचर) पर 30 पर्सेंट टैक्स लेंगे।मैं एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानी गोंदिया महाराष्ट्र ऐसा मानता हूं कि भारत, जो दुनियाँ का सबसे बड़ा जेनेरिक दवा उत्पादक और निर्यातक देश है, इस फैसले से विशेष रूप से प्रभावित होगा क्योंकि अमेरिका उसका सबसे बड़ा बाजार है।हालांकि आदेश में जेनेरिक दवाइयों के बारे में स्पष्ट नहीं है यदि इसके बारे में भी लागू हो जाता है तो निश्चित तौर पर असर पढ़ना निश्चित है क्योंकि,अमेरिका लंबे समय से इस बात पर चिंतित रहा है कि दवाओं की कीमतें उसके घरेलू बाजार में लगातार बढ़ रही हैं। दूसरी ओर, विदेशों से आयातित दवाएं सस्ती और प्रतिस्पर्धी होती हैं, जिससे अमेरिकी कंपनियों का दबाव बढ़ जाता है।ट्रंप की मंशा,स्थानीय उत्पादन बढ़ाना, रोजगार सृजित करना और अमेरिका को आयात पर निर्भरता से मुक्त करना। इस आदेश में राजनीतिक संदेश भी छिपा हुआ है,यह कदम घरेलू मतदाताओं को यह संदेश देता है कि ट्रंप अमेरिकी उद्योग और उपभोक्ताओं के हित में कठोर फैसले लेने से पीछे नहीं हटेंगे।इसमें रणनीतिक दबावयह है कि चीन, भारत और यूरोप जैसे देशों पर यह अप्रत्यक्ष दबाव है कि वे अमेरिका को केवल उपभोक्ता बाजार की तरह न देखें, बल्कि वहां निवेश करें। इसलिए आज हम मीडिया में उपलब्धजानकारी के सहयोग से इसआर्टिकल के माध्यम से चर्चा करेंगे, ट्रंप ने भारत पर फोड़ा टैरिफ बम- दवाओं पर 100 पर्सेंट टैरिफ- वैश्विक अर्थव्यवस्था, भारत और अंतरराष्ट्रीय परिदृश्य पर विश्लेषण।

साथियों बात अगर हम भारत के फार्मा सेक्टर सेक्टर की करें तो,यह अंतरराष्ट्रीय स्तरपरअपनी सस्ती और गुणवत्तापूर्ण जेनेरिक दवाओं के लिए जाना जाता है। यह इस तरह प्रभावित होगा कि (1) निर्यात पर सीधा असर- अमेरिका भारत की दवाओं का सबसे बड़ा निर्यातक बाजार है। 2024 में भारत ने अमेरिका को लगभग 8-9 बिलियन डॉलर की दवाइयां निर्यात की थीं। 100 पर्सेंट टैरिफ लगने से यह व्यापार तुरंत प्रभावित होगा (2) कीमत और प्रतिस्पर्धा-भारतीयकंपनियों की दवाएं अमेरिकी उपभोक्ताओं को अब दोगुनी कीमत पर मिलेंगी ,जिससे उनकी प्रतिस्पर्धा कम होगी। (3) निवेश दबाव- भारतीय कंपनियों पर अमेरिका में उत्पादन इकाइयां लगाने का दबाव बढ़ेगा।इससे भारतीय दवा कंपनियों को एफडीआई और मर्जर एंड अक्विजीशन के रास्ते तलाशने पड़ सकते हैं।(4) रोजगार पर असर-भारत में लाखों लोग फार्मा इंडस्ट्री से जुड़े हैं। यदि निर्यात घटा तो उत्पादन और रोजगार दोनों पर दबाव पड़ेगा।

साथियों बात अगर हम भारत को जेनेरिक दवाइयों के एंगिल देखें तो यदि जेनेरिक दवाइयों को छूट रहती है तो भारत को ज्यादा असर नहीं पड़ेगा,भारत जेनेरिक दवाइयाँ अमेरिका को एक्सपोर्ट करने वाला सबसे बड़ा देश है। 2024 में भारत ने अमेरिका को लगभग 8.73 अरब डॉलर (करीब 77 हजार करोड़ रुपए) की दवाइयां भेजीं, जो भारत के कुल दवा एक्सपोर्ट का करीब 31 पर्सेंट था।(1) अमेरिका में डॉक्टर जो प्रिस्क्रिप्शन लिखते हैं, उनमें से हर 10 में से लगभग 4 दवाइयां भारतीय कंपनियों की बनाई होती हैं।(2)एक रिपोर्ट के मुताबिक, 2022 में अमेरिका के हेल्थकेयर सिस्टम के 219 अरब डॉलर बचे थे। 2013 से 2022 के बीच यह बचत 1.3 ट्रिलियन थी।(3) भारत की बड़ी फार्मा कंपनियां, जैसे डॉ. रेड्डीज, सन फार्मा, ल्यूपिन सिर्फ जेनेरिक दवाएं ही नहीं बेचती, बल्कि कुछ पेटेंट वाली दवाएं भी बेचती हैं। बाकी भारत अधिगम निर्यात जेनेरिक दवाइयां का ही करता है।

साथियों बात अगर हम ब्रांडेड या पेटेंटेड दवाई और जेनरिक दवाई में अंतर को समझने की करें तो,ब्रांडेड दवाई-(1) यह वो ओरिजिनल दवाई होती है जिसकी खोज किसी फार्मा कंपनी ने बहुत रिसर्च और भारी- भरकम खर्च के बाद की होती

है।(2) इसे बनाने वाली कंपनी को एक तय समय (आमतौर पर 20 साल) के लिए पेटेंट अधिकार मिल जाता है।(3) इस दौरान कोई भी दूसरी कंपनी उस फॉर्मूले का इस्तेमाल करके वह दवाई नहीं बना सकती।(4) रिसर्च और डेवलपमेंट पर हुए खर्च को वसूलने के लिए इसकी कीमत बहुत ज़्यादा होती है।

जेनरिक दवाई-(1) यह वो दवाई होती है जो ब्रांडेड दवाई का पेटेंट खत्म होने के बाद बाज़ार में आती है। यह ब्रांडेड दवाई के समान फॉर्मूले का इस्तेमाल करके बनाई जाती है।(2) इसका कोई नया पेटेंट नहीं होता, क्योंकि यह पहले से मौजूद फॉर्मूले की नकल होती है।(3)जेनेरिक दवा बनाने वाली कंपनियों को रिसर्च का खर्च नहीं उठाना पड़ता, इसलिए इसकी कीमत ब्रांडेड दवा के मुकाबले 80 पर्सेंट से 90 पर्सेंट तक कम हो सकती है। अब दो जरूरी बातों को इसमें समझना जरूरी है(1) ब्रांडेड दवाओं पर टैरिफ लगाने का फैसला ट्रम्प ने क्यों लिया?-ट्रम्प ने ब्रांडेड दवाओं पर टैरिफ लगाने का फैसला अमेरिका में दवा उत्पादन को बढ़ाने के लिए लिया है। ट्रम्प का यह कदम उनकी 'अमेरिका फर्स्ट' और 'मेक इन अमेरिका' नीति का हिस्सा है।ट्रम्प प्रशासन का यह भी मानना है कि दवाओं के लिए दूसरे देशों पर निर्भर रहना राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए खतरा है।महामारी के दौरान यह बात साफ हुई थी कि अगर सप्लाई चेन टूटती है तो अमेरिका में दवाओं की भारी कमी हो सकती है।ब्रांडेड दवाओं पर दबाव डालकर, वे पूरी फार्मा सप्लाई चेन को सुरक्षित करना चाहते हैं।(2) जेनेरिक दवाओं पर टैरिफ क्यों नहीं लगाया गया?- जेनेरिक दवाएं ब्रांडेड दवाओं से 80 पर्सेंट से 90 पर्सेंट तक सस्ती होती हैं। अमेरिकी हेल्थकेयर सिस्टम जेनेरिक दवाओं पर बहुत ज़्यादा निर्भर है। अगर जेनेरिक दवाओं पर भी 100 पर्सेंट टैरिफ लग जाता, तो उनकी कीमत बहुत बढ़ जाती। इससे अमेरिकी नागरिकों के लिए स्वास्थ्य सेवा बहुत महंगी हो जाती, और यह सीधे तौर पर कंज्यूमर्स कोबहुत अधिक प्रभावित करता।

साथियों बात अगर हम वैश्विक व्यापार पर असर को समझने की करें तो,यह निर्णय केवल भारत तक सीमित नहीं रहेगा,बल्कि पूरी वैश्विक दवा सप्लाई चेन को प्रभावित करेगा।(1) यूरोपीय यूनियन -कई यूरोपीय कंपनियां भी अमेरिका में दवाएं निर्यात करती हैं। टैरिफ के कारण वे भी प्रभावित होंगी।(2) चीन- अमेरिका पहले ही चीन के साथ टकराव की स्थिति में है। अब फार्मा सेक्टर पर यह टैरिफ उसके खिलाफ एक और मोर्चा खोल सकता है।(3) विकासशील देश-अमेरिका में दवाएं महंगी होने का मतलब है कि गरीब देशों तक पहुंचने वाली सस्ती जेनेरिक दवाओं पर भी असर पड़ेगा क्योंकि सप्लाई चैन और प्राइसिंग ग्लोबल स्तर पर प्रभावित होंगी।

साथियों बात अगर हम अमेरिका के उपभोक्ताओं के लिए लाभ या हानि? को समझने की करें तो, ट्रंप प्रशासन दावा करता है कि यह कदम घरेलू उत्पादन बढ़ाकर अमेरिकी उपभोक्ताओं को दीर्घकालीन लाभ देगा।परंतु अल्पकालिक दृष्टिकोण से स्थिति विपरीत हो सकती है लाभ-अमेरिका में नई फैक्ट्रियों के खुलने से रोजगार बढ़ेगा,रिसर्च और इनोवेशन पर भी सकारात्मक असर होगा।हानि-दवाएं तत्काल महंगी हो जाएंगी क्योंकि घरेलू उत्पादन को गति देने में समय लगेगा।गरीब और मध्यमवर्गीय मरीजों को सबसे अधिक कठिनाई होगी।

साथियों बात अगर हम भारत की रणनीतिक प्रतिक्रिया को समझने की करें तो, भारत के लिए यह परिस्थिति चुनौतीपूर्ण तो है, परंतु अवसर भी छिपे हैं।(1)नए बाजारों की तलाशः भारत यूरोप, अफ्रीका, लैटिन अमेरिका और एशिया के अन्य देशों में अपना निर्यात बढ़ा सकता है। (2) द्विपक्षीय समझौतेः भारत अमेरिका से इस निर्णय में राहत पाने के लिए कूटनीतिक दबाव बना सकता है, जैसे कि "मेक इन इंडिया" बनाम "मेक इन अमेरिका" का सहयोग मॉडल। (3) घरेलू नवाचार-भारत को केवल जेनेरिक दवाओं तक सीमित न रहकर ब्रांडेड और नवाचारी दवाओं के क्षेत्र में निवेश बढ़ाना होगा।(4) उद्योग का भारत की करें तो पुनर्गठन- बड़े भारतीय समूह अमेरिका में स्थानीय उत्पादन इकाइयां स्थापित कर सकते हैं, जबकि छोटे और मध्यम उद्योग वैकल्पिक बाजारों की ओर रुख करेंगे।

साथियों बात अगर हम अंतरराष्ट्रीय राजनीति और कूटनीति क़े आयाम को समझने की करें तो,ट्रंप का यह निर्णय केवल आर्थिक कदम नहीं है, बल्कि इसके पीछे अंतरराष्ट्रीय राजनीति भी है।भारत-अमेरिका संबंधः हाल के वर्षों में भारत और अमेरिका की रणनीतिक साझेदारी मजबूत हुई है। लेकिन यह निर्णय द्विपक्षीय संबंधों में तनाव ला सकता है। भारत-चीन प्रतिस्पर्धा-भारत इस स्थिति का उपयोग कर सकता है कि चीन की तुलना में अमेरिका को अधिक विश्वसनीय सप्लाई पार्टनर के रूप में खुद को पेश करे।वैश्विक स्वास्थ्य संकट-यदि किसी महामारी जैसी स्थिति आती है, तो इस तरह के टैरिफ वैश्विक सहयोग को कमजोर कर सकते हैं।

इस बार हिंदी के बहाने नफरती उचक्कापन

(आलेख : बादल सरोज)

यूं भले दस्तावेजी सबूतों के पहाड़ खड़े किये जाने के बाद भी चुनाव आयोग उन्हें बिना पढ़े और देखे ही निराधार और भ्रामक बता दे, मान्यता प्राप्त राजनीतिक दलों के सप्रमाण ज्ञापनों की भी दाखिल खारिज कर दे, नेता प्रतिपक्ष से भी शपथपत्र पर लिखकर देने को कहे, यूं भले ही बिना किसी सबूत के ही जेल में पड़े लोगों की 'जांच जारी है' के नाम पर जमानत देने से इंकार करते-करते पांच सात वर्ष गुजार दे, मगर मामला यदि विग्रह, विभाजन को आगे बढ़ाने वाले, देश में द्वेष फैलाने के उनके नफरती एजेंडे का हो, तो आनन-फानन में आदेश भी निकल जाता है और उसे फ़ौरन से पेश्तर अमल में लाने का हुकुम भी सुना दिया जाता है।

पिछले सप्ताह ऐसा ही एक कारनामा, मोदी सरकार जिसे अपना सबसे महत्वपूर्ण विभाग मानती है, उस सूचना एवं प्रसारण विभाग ने कर दिखाया। सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय ने टीवी9 भारतवर्ष, आजतक, एबीपी, जी न्यूज और टीवी 18 आदि चैनल्स को औपचारिक नोटिस भेज कर कहा कि उनका चैनल हिंदी का होने के बावजूद उर्दू शब्दों का प्रयोग कर रहा है। उनने पता नहीं कैसे लेकिन पक्का गिनकर भी बता दिया कि ये चैनल्स अपनी वर्तनी में 30 फीसद से ज्यादा शब्द उर्दू के इस्तेमाल कर रहे हैं। कहते हैं कि इसके लिए मंत्रालय ने एक नागरिक की निजी शिकायत को आधार बनाया और इसे तुरंत सुधारने और भविष्य में ऐसा न हो, इसके लिए भाषा विशेषज्ञ की नियुक्ति करने का भी निर्देश दे मारा। बात इतने पर ही नहीं ठहरी – गोयबल्स का अवतार बन चुके इस मंत्रालय ने चैनलों को पंद्रह दिनों के भीतर शिकायत पर लिए गए निर्णय की सूचना मंत्रालय और शिकायतकर्ता दोनों को देने का आदेश भी दे दिया।

इस पूरे प्रपंच का मजेदार हिस्सा यह है कि उर्दू के उपयोग पर रोक लगाने की बात भी उर्दू के ही एक शेर "उर्दू को हम इक रोज मिटा देंगे जहाँ से / कमबख्त ने ये बात भी उर्दू में कही है" को अमल में लाते हुए ही कही है। इस बारे में चैनल्स को मंत्रालय ने जो फ़क़त 7 छोटी पंक्तियों की चिट्ठी लिखी है, उसमें भी तौर, गलत, इस्तेमाल, खिलाफ, शिकायत, कार्यवाही, दिन, तहत जैसे कुल जमा 13 शब्द उर्दू के इस्तेमाल किये हैं; जो पक्के से 30 फीसद से ज्यादा ही होते हैं। मंत्रालय की यह चिट्ठी इसलिए और भी गजब है कि इसमें चैनल्स के लिए संबोधन अंग्रेजी भाषा में उसकी रोमन लिपि में लिखा गया है।

विडम्बना की बात एक और है और वह यह है कि "हिंदी न्यूज़ चैनल द्वारा अपनी रोजाना की टिप्पणियों में अन्य भाषाओं का इस्तेमाल करने को जनता के साथ धोखाधड़ी और आपराधिक कृत्य" बताने वाले ये शिकायतीलाल खुद उस महाराष्ट्र के ठाणे में रहते हैं, जहां इन दिनों भाजपा सरकार के राज में हिंदी भाषा बोले भर जाने पर ठुकाई-पिटाई का पुण्यकार्य अंजाम दिया जा रहा है।

सूचना प्रसारण मंत्रालय ने हिंदी चैनल्स के लिए यह नोटिस जनवरी 2025 में केबल टेलीविजन नेटवर्क (संशोधन) नियम, 2025 के तहत दिया है। इन नियमों को बनाते समय दावा किया गया था कि इन्हें इस सेक्टर के आधुनिकीकरण और बेहतर नियंत्रण के लिए बनाया गया है। हालांकि इस देश में टीवी चैनलों पर भाषा और सामग्री के संबंध में कानून और दिशा-निर्देश पहले से ही मौजूद रहे हैं। इन नियमों का घोषित मकसद सार्वजनिक शालीनता, राष्ट्रीय सुरक्षा और सामुदायिक सद्भाव के मानकों का पालन सुनिश्चित करना है।

कार्यक्रम संहिता के नाम के ये नियम बाकायदा स्पष्ट करते है कि टीवी चैनलों पर प्रसारित होने वाली सामग्री में ऐसी भाषा का उपयोग नहीं किया जाना चाहिए, जो अश्लील, अपमानजनक, या अभद्र हो; जो किसी धर्म या समुदाय पर हमला करती हो, या सांप्रदायिक भावनाओं को बढ़ावा देती हो; जो हिंसा को भड़काती हो या बढ़ावा देती हो; जो जानबूझकर झूठी, भ्रामक या आधी-अधूरी सच्चाई बताती हो; जो शिष्टता और अच्छे नैतिक मूल्यों के विरुद्ध हो; जो न्यायपालिका या राष्ट्रपति जैसे संवैधानिक पदों की गरिमा के विरुद्ध हो। साफ़ हो जाता है कि इनमे से कोई भी नियम हिंदी, उर्दू, मराठी, तेलुगु, गुजराती या तमिल के उपयोग करने न करने की बात नहीं करता।

पहली नजर में ही एकदम बेतुकी इस शिकायत को खारिज किया जाना चाहिए था – मगर बजाय ऐसा करने के, इसे सही मानते हुए इसके आधार पर कदम उठाने और इसका निराकरण करने के आदेश जारी कर दिए गए। यह किसी एक बन्दर जैसी स्वामिभक्ति में विश्वास रखने वाले अदने अधिकारी द्वारा अज्ञानवश की गयी कार्यवाही नहीं, यह साम्प्रदायिक ध्रुवीकरण की उस आपराधिक प्रक्रिया को तेज करनी की दिशा में उठाया गया एक और कदम है; नफरती अभियान पर सरकारी ठप्पा लगाना है।

यह इस धारणा पर आधारित है कि उर्दू मुसलमानों की भाषा है। यह सरासर झूठी और भ्रांत और कुटिल धारणा आर एस एस के उस कुत्सित अभियान का हिस्सा है, जो भारत की विरासत और बनावट दोनों के बारे में कुछ भी नहीं जानते, भाषाओं के बारे में जिनका ज्ञान द्वेष और वैमनस्य से आगे नहीं गया। उनके निशाने पर सभी भारतीय भाषाएँ हैं, मगर फिलहाल चूंकि उनका मूल मंत्र हिन्दू-मुसलमान के बीच रार और तकरार बढाने का है, इसलिए उर्दू को मुद्दा बनाया जा रहा है। जबकि सच यह है कि उर्दू ठेठ हिंदुस्तानी भाषा है, जो धरती के इसी हिस्से पर जन्मी, पली और हिंदवी, देहलवी, रेख्ता, उर्दू जैसे नामों के साथ जवान हुई।

उर्दू सिर्फ मुसलमानों की भाषा नहीं है। पण्डित चन्द्रभान बरहमन उर्दू के पहले कवि हुए हैं। ऐसी अनगिनत मिसालें और भी हैं, मगर चूंकि उन पर पहले भी लिखा जा चुका है, इसलिए उसे दोहराने की बजाय सार में कहें, तो यह कि उर्दू हो या हिंदी हो या अवधी या भोजपुरी कोई भी भाषा किसी धर्म, संप्रदाय, जाति की नहीं होती। वह कई मर्तबा इलाक़ाई होती है। जैसे बांग्ला, मराठी, गुजराती आदि भाषाएं हैं, मगर उस तरह हिन्दी-उर्दू नहीं हैं। भारतीय उपमहाद्वीप में जहां-जहां हिंदी है, वहां-वहां उर्दू है और जहां-जहां उर्दू है, वहां उसकी हमजोली हिन्दी है। इसलिए इनके संगम को सदा गंगा-जमुनी कहा और माना गया है। दिलचस्प है कि दोनों का नाभि-नाल संबंध अमीर ख़ुसरो से है और दोनों का पालना बृज और अवधी का रहा है। उसे अल्पसंख्यकों की भाषा बनाकर उसका प्रभाव व आयतन कम करना एक साम्प्रदायिक क़िस्म की हरकत है।

उर्दू सारे धर्म, जातियों की चहेती भाषा है। मूलतः धरती के इस हिस्से पर जन्मी भारत की भाषा है। स्वतंत्रता संग्राम की भाषा है। क़ौमी तरानों की भाषा है। साम्प्रदायिक एकता, भाईचारे और सद्भाव की भाषा है। हिन्दी ही नहीं, उर्दू साहित्य के इतिहास में भी उर्दू को कभी अल्पसंख्यकों या मुसलमानों की भाषा नहीं बताया गया और न किसी स्कूल या कालेज में ऐसा पढ़ाया गया। यह ख़ुराफ़ात उन तंग नजरिये वाले षडयंत्रकारियों द्वारा फैलाई गयी अफवाह है, जो इस तरह की भाषाई साम्प्रदायिकता इसलिए भी फैलाते हैं, क्योंकि उर्दू एक सेक्युलर, धर्म और पंथ निरपेक्ष भाषा है। उर्दू तो बहाना है, असली मकसद मुसलमानों को निशाना बनाकर उन्माद फैलाना है।

उर्दू तो उर्दू, इन फर्जी हिंदी भक्तों को यह भी नहीं पता कि जिस हिंदी के नाम पर वे जाल बिछा रहे हैं, वह आधुनिक हिंदी तो बमुश्किल सवा डेढ़ सौ साल पुरानी है और अभी-अभी 19वीं सदी में बृजभाषा और अवधी जैसे मजबूत भाषाओं से शब्द भंडार लेकर खड़ी बोली के रूप में अस्तित्व में आई है। इससे पहले, जिसे पुरानी हिंदी कहते हैं वह – अवहट्ठ – खुद प्राकृत की अंतिम अपभ्रंश की अंगुली पकड़कर बढ़ी हुई थी। 1857 के स्वतंत्रता संग्राम में हिन्दुस्तानी अवाम की विराट एकता से घबराए अंग्रेजों ने फूट डालो और राज करो की नीति में भाषा को भी इस्तेमाल करने की बुरी नीयत से कलकत्ता के फोर्ट विलियम कॉलेज में इसे अपनी तरह से ढालने की भरपूर कोशिश की; तब जो अंग्रेजों के दास होना सौभाग्य की बात मानते रहे, आज सत्ता में पहुँचकर वे उसी राह पर चलने और भाषाओं को भी साम्प्रदायिकता का जरिया बनाने की जी-तोड़ कोशिशें कर रहे हैं। यह ताजा बहाना उसी कुटिलता का नया जामा पहनाना है।

इन्हें हिंदी चैनल्स पर अंग्रेजी का बेतहाशा और ज्यादातर अनावश्यक इस्तेमाल किया जाना बुरा नहीं लगता – बहुत मुमकिन है कि रानी एलिजाबेथ और विक्टोरिया के प्रति घनघोर आदर और 'त्वमेव माता च पिता त्वमेव' भाव से उनको लिखी चिट्ठियों के अनुभवों के चलते वे अंग्रेजी को ही अपनी मातृभाषा मानते हों। शायद इसीलिए इन्हें अपने जुमलों और खोखली घोषणाओं के लिए इस भाषा के जिंगल्स और पञ्चलाइन्स ही अधिक भाती हैं, मगर इस देश की जमीन पर जन्मी और संविधान में राष्ट्रीय भाषा के रूप में दर्ज उर्दू के शब्दों का उपयोग इन्हें 'जनता के साथ धोखाधड़ी और आपराधिक कृत्य' लगता है।

जोरदार बात यह है कि अन्यथा भारत की गौरवशाली विरासत की बहाली करने की दुहाई देने वाले इस कुनबे को भारतीय समाज को संस्कारित करने वाली प्राकृत या पाली या अपभ्रंश की बहाली की याद नहीं आती, दुनिया की सबसे पुरानी जीवित भाषा तमिल को तवज्जोह देने की सुध नहीं आती; उर्दू के मुकाबले में हिंदी, उस हिंदी को, जिसका उर्दू के साथ चोली-दामन का बहनापा है, को ही खड़ा करना सूझता है। मगर असल में वे जिस हिंदी की बात कर रहे होते हैं, यह हिन्दुस्तान के आम अवाम द्वारा बोली जाने वाली हिंदी नहीं है। यह वह हिंदी है, जिसे वे संस्कृतनिष्ठ बनाकर आम व्यवहार से बाहर कर देते हैं और इस तरह एक बार फिर भाषा का उपयोग उस मनुवादी वर्चस्व की कायमी के लिए करना चाहते हैं।

इस दूरगामी बदनीयती के अलावा फौरी इरादा उन चौतरफा विफलताओं और बर्बादियों से ध्यान हटाने का, हर मामले में भट्टा बिठा दी गयी अर्थव्यवस्था के संकट पर पर्दा डालने के लिए नित नए शिगूफे छोड़ने का भी है।

सूचना प्रसारण मंत्रालय की इस हरकत के खिलाफ देश भर में हुई प्रतिक्रियाओं के दबाव में फिलहाल सरकार ने मंत्रालय की ओर से जारी उस नोटिस के दावों का खंडन कर दिया है, जिसमें हिंदी समाचार चैनलों को अपने प्रसारण में अत्यधिक उर्दू शब्दों का प्रयोग न करने और भाषा विशेषज्ञों की नियुक्ति करने का निर्देश दिया गया था। इस लीपापोती वाली सफाई में कहा गया है कि मंत्रालय ने केबल टेलीविजन नेटवर्क विनियमन अधिनियम के प्रावधानों के तहत केवल एक दर्शक की शिकायत संबंधित चैनलों को भेजी थी।

यह खंडन मंत्रालय की ओर से भेजे गए पत्रों में लिखे निर्देशों से मेल नहीं खाता – मगर, पानी में कंकर फेंककर उसकी प्रतिक्रिया का अंदाजा लगाने के बाद फिलहाल लगता है, पाँव पीछे खींच लिये गए हैं। यह फिलहाल के लिए ही किया गया है – कल वे फिर इसी तरह की कोई नयी खुड़पेंच लेकर आयेंगे।

लेखक 'लोकजतन' के संपादक और अखिल भारतीय किसान सभा के संयुक्त सचिव हैं।

लद्दाख के जेन-जेड क्रांति को यदि समय रहते ही नहीं कुचला तो

कमलेश पांडेय

केंद्र शासित प्रदेश लद्दाख को पूर्ण राज्य का दर्जा देने की मांग को लेकर जारी आंदोलन ने गत्व बुधवार को हिंसक रूप अख्तियार कर लिया है। इसके बाद लेह में प्रदर्शनकारी छात्रों की सुरक्षाबलों से झड़प हुई जिसमें 4 लोगों की मौत हुई और 70 से ज्यादा घायल है। वहीं, प्रदर्शन के दौरान बीजेपी के ऑफिस और सीआरपीएफ की गाड़ी में आग लगा दी गई। चूंकि यह अतिवादी कार्रवाई है, इसलिए हिंसा पर काबू पाने के लिए पुलिस को आंसू गैस के गोले छोड़ने पड़े। वहीं, हालात को देखते हुए लेह में कर्फ्यू लगा दिया गया। बिना मंजूरी के रैली और प्रदर्शनों पर रोक लगा दी गई है।

बताते चलें कि लद्दाख को राज्य का दर्जा समेत कई मांगों पर सोशल ऐक्टिविस्ट सोनम वांगचुक विगत 15 दिनों से भूख हड़ताल पर थे। लिहाजा, उनकी मांगे पूरी न होने पर प्रदर्शनकारियों ने बुधवार को बंद बुलाया। इसी सिलसिले में सोशल मीडिया पर लोगों से लेह हिल काउंसिल पहुंचने की अपील की गई। जिसके बाद गत बुधवार को सैकड़ों की संख्या में आंदोलनकारी सड़कों पर उतरे। इसी दौरान हिंसा हुई। सरकारी सूत्रों ने कहा कि हिंसा में राजनीति से प्रेरित साजिश की बूआ रही है।

वहीं, केंद्र सरकार ने दो टूक शब्दों में कहा है कि सोनम वांगचुक के उकसाऊ बयानों से यह हिंसा भड़की है। इससे पहले वांगचुक ने हिंसा पर दुख जताते हुए अनशन तोड़ दिया। उन्होंने इन घटनाओं के लिए जेन-जेड (1997 से 2012 के बीच जन्म लेने वाली पीढ़ी) की हताशा को जिम्मेदार ठहराया और शांति की अपील की। उल्लेखनीय है कि प्रदर्शनकारियों की 4 अहम मांगें हैं- लद्दाख को पूर्ण राज्य का दर्जा, पूर्वोत्तर की तरह संवैधानिक सुरक्षा, करगिल, लेह की अलग-अलग लोकसभा सीट और सरकारी जॉब्स में में स्थानीय लोगों की भर्ती।

इससे स्पष्ट है कि लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष और चीन के हमदर्द राहुल गाँधी जो नेपाल-बंगलादेश की तरह पूरे देश में यही कुछ चाहते थे, के मनोरथ पूर्ण होने की तरफ बात बढ़ चली है। यदि शेष भारत में गृहयुद्ध भड़कता है तो इसके लिए इस देश में केवल विपक्षी दल, कथित सिविल सोसायटी और बाहरी शक्तियाँ, यथा- अमेरिकी डीप स्टेट तथा इस्लामिक अतिवादी संस्थाएं दोषी तो होंगी ही, साथ ही साथ इस बद से बदतर स्थिति के लिए कथित राष्ट्रभक्त हिंदू और सनातन धर्म प्रेमी लोगों का एक बड़ा तबका भी होगा जो उनके इशारे पर थिरकते हैं।

ऐसा इसलिए कि आप लद्दाख की इस घटना से लेकर नेपाल के हाल-फिलहाल के वाक़ये तक इनके द्वारा लिखी व बोली गई अनाप-शनाप बातों से अंदाजा लगा सकते हैं।वास्तव में ये जाने-अनजाने में देश धर्म विरोधी तत्त्वों के हथियार बन रहे हैं। यह गम्भीर बात है। इससे संवैधानिक सफलता भी संदिग्ध हुई है। सच कहूं तो भारत के अतिसंवेदनशील केंद्र शासित प्रदेश 'लद्दाख' से जेन-जेड क्रांति का जो आगाज दिखाई-सुनाई पड़ा है, यह हमें समय रहते ही सावधान करने के लिए काफी है। यह स्थिति किसी भी लोकतंत्र के लिए शर्म की बात है। चाहे सम्बन्धित सेना हो या सिविल व पुलिस प्रशासन, यदि उनके द्वारा अमेरिकी खुफिया इकाई सीआईए द्वारा प्रोत्साहित इस कथित जेड-जेन क्रांति को सख्ती पूर्वक नहीं कुचला गया तो उनका भविष्य भी अंधकारमय हो जाएगा!

बेहतर होगा कि इस स्थिति के लिए जिम्मेदार लोगों को अविलंब कैद करके उन्हें आजीवन कारावास या फांसी की सजा दी जाए, क्योंकि उनके कुकर्मों से धन-जन की हानि हुई है, अन्यथा भारतीय लोकतंत्र में भी एक गलत ट्रेंड स्थापित हो जाएगा। एशियाई लोकतंत्र की सफलता पर सवाल उठेंगे। ऐसा इसलिए कि पश्चिमी लोकतंत्र खूनी लोकतंत्र है, पक्षपाती डेमोक्रेसी है। जिसका मकसद दुनिया भर में लोकतांत्रिक जनभावना मजबूत करना नहीं, बल्कि अपने आर्थिक व साम्राज्यवादी लाभ के लिए दुनिया में कठपुतली सरकार कायम करना है।

यही वजह है कि जेन-जेड जैसी कथित क्रांति से हो रहे सत्ता परिवर्तन और बन रही कठपुतली सरकारों को दुनियावी लोकतंत्र की सफलता के लिहाज से उचित नहीं समझा जा सकता है। इसलिए लद्दाख घटनाक्रम के बाद भारत को ठोस और प्रभावी कदम उठाने ही होंगे और इससे अपने पड़ोस को भी लाभान्वित करने की सद्भावना रखनी होगी।

कहना न होगा कि 2014 की सनातन युवा क्रांति के बाद बनी भाजपा नीत मोदी सरकार की सफलता से ही भारत, अमेरिका-चीन और अरब देशों के निशाने पर है। इसलिए श्रीलंका, अफगानिस्तान, बंगलादेश, नेपाल आदि में जो जेन-जेड क्रांति हुई, उसका मकसद भारतीय राजनेताओं और सेना के धैर्य की परीक्षा लेना था। जब हम लोकतंत्र की पैरोकारी में मजबूती पूर्वक विफल रहे तो लद्दाख जेन-जेड क्रांति हमें मुबारक कर दिया गया।

सवाल है कि यह भी प्रयोग केरल, पश्चिम बंगाल और जम्मू-कश्मीर के बजाय बौद्ध धर्म बहुल लद्दाख में करवाया गया ताकि बौद्धों के प्रति हिंदुओं के मन में नफरत पैदा हो और चीन-भारत व तिब्बत-भारत के रिश्तों में पलीता लगे। इसलिए यह कहना गलत नहीं होगा कि यदि अफगानिस्तान, श्रीलंका, बंगलादेश, नेपाल में लोकतांत्रिक तरीके से सत्ता परिवर्तन हुआ होता तो बेहतर होता। लेकिन चरमपंथियों और हिंसकों को कुचलने के बजाय स्थानीय सेना व प्रशासन द्वारा ऐसे अराजक तत्वों से बात करने से समकालीन लोकतंत्र के प्रति गलत संदेश गया है।

लिहाजा, अविलंब इसकी भरपाई के लिए संयुक्त राष्ट्र संघ, अमेरिका, रूस और चीन आदि के साथ मिलकर अराजक तत्वों पर कार्रवाई की जानी चाहिए, अन्यथा असहयोग मिलने पर भारत की सेना को ही इन पर आक्रमण करके इन्हें भारतीय भूभाग में मिला लेना चाहिए। इसके साथ ही पश्चिमी देशों व ब्रिक्स देशों जैसे लोकतंत्र के कथित दरिंदों को ग्लोबल साउथ के समक्ष बेनकाब करने की स्पष्ट रणनीति अख्तियार करनी चाहिए।

कहने का तातपर्य यह कि विधि के शासन को बहाल करने के लिए भारत व उसके पड़ोसी देशों की सेना को आपसी सांठगांठ करके व स्थानीय सिविल व पुलिस प्रशासन को भरोसे में लेकर निर्णायक कार्रवाई करनी चाहिए। इस दिशा में हर तरह की कुर्बानी के लिए भी तैयार रहना चाहिए और किसी तरह के 'कत्लेआम' से गुरेज नहीं करना चाहिए। अन्यथा भारत विकास और सुशासन की रेस में पिछड़ जाएगा।

समकालीन जेन-जेड की हिंसक प्रवृति को देखते हुए लोगों को आशंका है कि जी-7 और ब्रिक्स के कतिपय चतुर सुजान देश यही अराजकता चाहते हैं, ताकि उनके गोला-बारूद की खपत बढ़े। इसी की आड़ लेकर वे दुनियावी प्राकृतिक संसाधनों को लूट सकें। इसलिए भारत को अविलंब जिला स्तर पर अपनी तैयारी को धार दी जानी चाहिए, ताकि हिंसक व अराजक तत्वों को उनकी औकात में रखा जा सके। अन्यथा यह 'खूनी लोकतंत्र' भविष्य में अमेरिकी पूंजीपतियों का गुलाम हो जाएगा। बहरहाल ये अराजकता पैदा करके हथियार बेचेंगे और भारतीय उपमहाद्वीप भी अरब व खाड़ी देशों की तरह झुलसता रहेगा।

बताते चलें कि कथित पूर्ण राज्य का दर्जा और संविधान की छठी अनुसूची में शामिल करने की मांग को लेकर लद्दाख में चल रहा प्रदर्शन जिस प्रकार से हिंसक हो गया और भाजपा के कार्यालय तक को निशाना बनाया गया, उसमें भाड़े के उत्पाती शामिल नहीं हैं तो क्या हैं? यह ठीक है कि सामाजिक कार्यकर्ता सोनम वांगचुक की अगुआई में लंबे वक्त से यह मांग उठायी जा रही है और इसे लेकर केंद्र से कई दौर की बातचीत भी हो चुकी है। लेकिन, इस दौरान इस सोच का हिंसा का हो जाना दुर्भाग्यपूर्ण और चिंताजनक दोनों है और उनके खिलाफ सख्त कार्रवाई की जानी चाहिए, ताकि पूरे देश में एक सही संदेश जाए।

यह ठीक है कि सरकार ने अगस्त 2019 में अनुच्छेद 370 और 35-ए के प्रावधान हटाने के साथ ही जम्मू-कश्मीर से अलग कर लद्दाख को केंद्र शासित राज्य बनाया था। तब सरकार ने वादा किया था कि हालात सामान्य होते ही पूर्ण राज्य का दर्जा बहाल कर दिया जाएगा। लेकिन अब ऐसा लगता है कि 6 साल बाद लोगों का भरोसा और सब्र डगमगाने लगा है। फिर भी लेह में हिंसा होना दुर्भाग्यपूर्ण है। इसके पीछे विदेशी ताकतों के हाथ की पड़ताल और जम्मू-कश्मीर सरकार की परोक्ष भूमिका की जांच होनी चाहिए।

ग्रैंड ऐक्सोटिका सोसायटी इन्दौर में नवरात्र महोत्सव के तहत रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम व गरबे की प्रस्तुति दी जा रही है। इसमें छोटे छोटे बच्चो की ड्रेस व उनकी प्रस्तुति सभी को लुभा रही है।

प्रेषक – हरिहर सिंह चौहान इन्दौर

28 सितंबर 2025 अंतराराष्ट्रीय बालिका दिवस पर

बेटी है तो कल है।

स्वतंत्र लेखक हरिहर सिंह चौहान इन्दौर

बेटियां हर एक परिवार के लिए बहुत ही भाग्यशाली होती है। क्योंकि हम सनातन संस्कृति वाले उसे पूजनीय मानते हैं वह दुर्गा, काली, सरस्वती, लक्ष्मी का स्वरूप होती है। इसलिए कन्या हमारे समाज को आपस में एकता के सूत्र में बंधे रखतीं हैं। जिसमें परिवार में स्नेह व वात्सल्य भाव बना रहता है, जब बहन बेटियां घर में रहतीं हैं। हम सभी को इन शक्ति स्वरूपा बेटियों के भविष्य को प्रगति पंथ पर आगे बढ़ने हेतु आगे आना ही होगा। बेटी है तो कल है यह सिर्फ चार लाइन नहीं है। यहां भविष्य में नारीशक्ति को आगे बढ़ाने हेतु मान सम्मान है। हमेशा बेटियां में समाजिक दुष्टीकोष व समन्वय बना रहना चाहिए। वह एकजुटता का संचालन करतीं हैं, और हमेशा से सेवाभावी समझदार व परोपकारी तो रहतीं हैं, उसी के साथ साथ वह अपने माता-पिता के लिए भी हर समय दुख-सुख में सबसे आगे खड़े रहने वाली बेटियां ही होती है। हमें यह ध्यान रखना होगा की बेटा अंश है तो बेटी वंश है। आज समाजिक स्तर पर वह अपने आप को आधुनिक जमाने में आगे बढ़ा रहीं हैं। हम देखें तो वह साहसी व निडर होकर पुरुष-प्रधान समाज में उनकी एक अलग जगह बना रही है। यहां बहुत गर्व की बात है। शादी के बाद वह दो परिवारों को साथ में लेकर चलने वाली बड़े सौभाग्य से मिलती है बेटियां। संस्कारों की दहलीज पर सोनपरी जब आज़ादी के साथ शिक्षा व संस्कारों को लेकर समाजिक बदलाव को राष्ट्र व समाज के साथ लिए वह कन्या देवी स्वरूपा अपने शुभ कदमों का अब पर्दापण कर रही हैं। क्योंकि समाज में यह वैचारिक भावना जाना चाहिए कि बेटियां बोझ नहीं होती है, वह तो संस्कारों की परिधि में रहकर भी दो परिवारों का आत्मविश्वास बढ़ती है, बेटी है तो कल है। मनुष्य जीवन में नर व नारायणी दोनों जरूरी है। तभी सम्पूर्ण धरतीं पूर्ण होती है। इस लिए बेटियों को पढ़ाया जाना चाहिए और उन्हें अपने पैरों पर खड़ा होने दिया जाये। क्योंकि वे बेटों को सूर्य सा ओजस्वी मानते हैं,

पर बेटी को देते हैं जुगनू की संज्ञा, पर वह भूल जाते हैं कि अंधेरे में जुगनू ही चमकते हैं। इसलिए बेटी है तो कल है। बालिका दिवस का यहां संजोग की इस बार नवरात्रि पर्व भी चल रहा है जिसमें हम सनातनी लोग कन्या को देवी के रूप में पैरों को पूजते हैं। सप्तमी अष्टमी व नवमी पर घर घर में छोटी-छोटी बच्चियों को हल्दी कुंकुम वह चुनरी भेंट करके पुजते है। तो फिर उनके प्रति हमारे मन में नाकारात्मक विचार क्यों आते हैं। हमें बालिकाओं को आत्मनिर्भर बनने के लिए उन्हें सहयोग करना होगा। क्योंकि बेटी है तो कल है और यहां बेटियां ही भारत का भविष्य है। इन्हें खुलें आसमान में उड़ने दो।

ट्रंप का टैरिफ बम: वैश्विक फार्मा पर मंडराता संकट

जैसे ही वैश्विक बाजारों में सूर्योदय की पहली किरणें चमकीं, वॉल स्ट्रीट का ट्रेडिंग फ्लोर भूकंप की तरह कांप उठा। शेयरों की चीखें, लुढ़कते इंडेक्स और अफरा-तफरी के बीच एक नाम तूफान की तरह गूंज रहा था—डोनाल्ड ट्रंप। अमेरिकी राष्ट्रपति की आधी रात की घोषणा ने न केवल फार्मास्यूटिकल जगत को धराशायी कर दिया, बल्कि पूरी वैश्विक अर्थव्यवस्था को एक कड़वी सच्चाई की चोटी पर ला खड़ा किया। कल्पना कीजिए, वह दवा-दुनिया जहां सस्ते दामों पर लाखों जिंदगियां टिकी हैं, अचानक महंगाई के काले बादलों में लिपट जाती है। यह कोई मामूली नीति नहीं, बल्कि 'अमेरिका फर्स्ट' का एक खतरनाक दांव है, जो अमेरिकी हितों को मजबूत करने के बहाने वैश्विक सप्लाई चेन को जड़ से उखाड़ फेंक सकता है। और भारत? 'विश्व की फार्मेसी' के रूप में जाना जाने वाला यह फार्मा महासागर अब तूफान के सिरे पर खड़ा है। लेकिन क्या यह विनाश का अंतिम संकेत है, या फिर अवसरों की नई सुबह?

ट्रंप का यह तीर 'अमेरिका फर्स्ट' मंत्र को एक घातक आयाम देता है। 1 अक्टूबर 2025 से ब्रांडेड और पेटेंटेड दवाओं पर 100 प्रतिशत टैरिफ का ऐलान न केवल घरेलू उत्पादन को पंख लगाने का प्रयास है, बल्कि राष्ट्रीय सुरक्षा का भी ढाल बन जाता है। महामारी की वे काली रातें अभी आंखों में ताजा हैं, जब सप्लाई चेन की डोर टूटने से दवाओं की भुखमरी ने दुनिया को थर्रा दिया था। ट्रंप प्रशासन का तर्क अटल है: विदेशी निर्भरता एक जहर की घंटी है। कंपनियां अगर अमेरिका में प्लांट लगाती हैं, भले ही निर्माण शुरू हो गया हो, तो टैरिफ से छूट मिलेगी। यह प्रलोभन निवेश को ललचाता तो है, लेकिन वास्तव में वैश्विक व्यापार को एक अनिश्चित भंवर में धकेल रहा है। यूरोपीय संघ जैसे सहयोगियों पर पहले से 15 प्रतिशत की सीमा शिकंजा कस चुकी है, लेकिन यह नया बोझ उनके निर्यात को खून बहा सकता है। स्विस और जर्मन दवा दिग्गजों—लोजा, नोवार्टिस और रोश के शेयरों में 1-2 प्रतिशत की गिरावट इसका जीता-जागता प्रमाण है, जबकि एशियाई बाजारों में चुगई और सुमितोमो फार्मा जैसे नामों को 5 प्रतिशत तक का धक्का लगा।

भारत, वैश्विक चेसबोर्ड का केंद्रीय मोहरा, अपने फार्मा उद्योग के दम पर 'विश्व की फार्मेसी' है। 2024 में अमेरिका को 8.7 अरब डॉलर का जेनेरिक दवा निर्यात, जो 2025 में 10.5 अरब डॉलर तक पहुंचा। अमेरिकी प्रिस्क्रिप्शन का 40% भारतीय जेनेरिक्स पर निर्भर। ट्रंप की ब्रांडेड दवाओं पर नीति से जेनेरिक्स को तत्काल खतरा कम, क्योंकि ये 80-90% सस्ती हैं। फिर भी, 'ब्रांडेड जेनेरिक्स' को ब्रांडेड श्रेणी में शामिल करने से डॉ. रेड्डीज, सन फार्मा, ल्यूपिन (30-47% अमेरिकी राजस्व) को नुकसान हो सकता है। बाजार में हलचल—सन फार्मा 3-5% और फार्मा इंडेक्स 2.4% गिरा। लेकिन भारत के लिए यह संकट नहीं, अवसर है। कम लागत मॉडल और अमेरिकी प्लांट्स में निवेश (सन फार्मा, बायोकॉन) से भारतीय कंपनियां तूफान पार कर सकती हैं। यह नीति अमेरिकी उपभोक्ताओं को महंगाई दे सकती है, जबकि भारत नई रणनीतियों से चमकेगा।

जेनेरिक और ब्रांडेड दवाओं का अंतर समझना जरूरी है। ब्रांडेड दवाएं मूल खोज होती हैं, जिन पर सालों की रिसर्च और अरबों डॉलर खर्च होते हैं। पेटेंट के 20 साल तक कोई कॉपी नहीं कर सकता, इसलिए कीमतें बहुत अधिक रहती हैं। दूसरी ओर, जेनेरिक दवाएं पेटेंट खत्म होने के बाद बनती हैं—वही फॉर्मूला, लेकिन बिना रिसर्च खर्च के, जिससे ये 80-90% सस्ती होती हैं। भारत का दम यहीं है: कम लागत, उच्च गुणवत्ता। 2013 से 2022 तक अमेरिकी हेल्थकेयर ने भारतीय जेनेरिक से 1.3 ट्रिलियन डॉलर बचाए। लेकिन अगर टैरिफ जेनेरिक दवाओं तक पहुंचा, तो अमेरिकी मरीजों की जेब पर भारी बोझ पड़ेगा। गरीब और मध्यम वर्ग सबसे ज्यादा प्रभावित होंगे, क्योंकि दवाएं दोगुनी महंगी हो सकती हैं। ट्रंप का दावा है कि लंबे समय में स्थानीय उत्पादन से फायदा होगा, लेकिन अल्पकालिक नुकसान तय है।

यह टैरिफ सिर्फ दवाओं तक सीमित नहीं। ट्रंप ने किचन कैबिनेट्स, बाथरूम वैनिटी और अपहोल्स्टर्ड फर्नीचर पर क्रमशः 50% और 30% टैरिफ लगाया है। इससे आयातित सामान महंगा होगा, जिससे अमेरिकी उपभोक्ताओं और बिल्डर्स पर दबाव बढ़ेगा। राष्ट्रीय होम बिल्डर्स एसोसिएशन के मुताबिक, निर्माण लागत पहले ही 30% बढ़ चुकी है। यह कदम अमेरिकी फर्नीचर उद्योग को बचाने की कोशिश है, लेकिन वैश्विक आपूर्ति श्रृंखला को झटका देगा। वियतनाम, चीन और मैक्सिको जैसे देशों से निर्यात प्रभावित होगा, और अमेरिका महंगा बाजार बनेगा।

वैश्विक अर्थव्यवस्था पर इसका व्यापक श्रृंखलाबद्ध प्रभाव पड़ेगा। यूरोपीय यूनियन, जो अमेरिकी दवा आयात का 60% हिस्सा आपूर्ति करता है, पहले से ही 15% टैरिफ का बोझ सह रहा है। अब 100% टैरिफ का खतरा यूरोपीय ब्रांडेड दवाओं के निर्यात को गंभीर रूप से प्रभावित कर सकता है। ट्रंप का चीन के साथ पुराना टकराव नया संकट पैदा करेगा, जहां फार्मा सप्लाई चेन पहले ही दबाव में है। विकासशील देशों के लिए यह चुनौती और गंभीर है: सस्ती दवाओं तक पहुंच सीमित होगी, क्योंकि वैश्विक कीमतें आसमान छूएंगी। एक अध्ययन के अनुसार, अमेरिकी दवा लागत में सालाना 51 अरब डॉलर की वृद्धि हो सकती है। हालांकि, अमेरिका में नई फैक्ट्रियों से रोजगार के अवसर बढ़ेंगे, लेकिन अल्पकालिक मुद्रास्फीति और आपूर्ति बाधाएं वैश्विक विकास दर को 0.5-1% तक कम कर सकती हैं।

भारत के लिए यह दोधारी तलवार है। चुनौती गंभीर है, निर्यात में कमी से लाखों नौकरियां दांव पर हैं। फिर भी, अवसर भी उजागर हैं। यूरोप, अफ्रीका और लैटिन अमेरिका जैसे उभरते बाजारों में भारत को अपनी पैठ बढ़ानी होगी। 'मेक इन इंडिया' को 'मेक इन अमेरिका' से जोड़कर द्विपक्षीय समझौतों की राह खुल सकती है। सन फार्मा और डॉ. रेड्डीज जैसी कंपनियां पहले से ही अमेरिका में अरबों रुपये का निवेश कर रही हैं। भारत को अपनी सटीक कूटनीति के दम पर चीन का भरोसेमंद विकल्प बनना होगा। भविष्य में जेनेरिक दवाओं से आगे बढ़कर ब्रांडेड और बायोसिमिलर दवाओं में नवाचार अनिवार्य है। महामारी जैसे संकटों में ऐसे टैरिफ वैश्विक सहयोग को कमजोर करेंगे, इसलिए भारत को अपनी कूटनीतिक चतुराई से समाधान तलाशना होगा।

अंतरराष्ट्रीय मंच पर यह कदम न केवल आर्थिक, बल्कि तीक्ष्ण राजनीतिक संदेश भी देता है। ट्रंप का टैरिफ फैसला घरेलू वोटबैंक को लुभाने की चतुर रणनीति है— उद्योगपतियों को लाभ और श्रमिकों को रोजगार का आकर्षक वादा। मगर यह कदम वैश्विक कूटनीति में गहरी दरार पैदा कर सकता है। भारत-अमेरिका की रणनीतिक साझेदारी हाल के वर्षों में सशक्त हुई है, लेकिन व्यापारिक तनाव इसे कमजोर करने का खतरा लाता है। फिर भी, भारत के पास सुनहरा अवसर है: चीन के मुकाबले खुद को विश्वसनीय और सुदृढ़ विकल्प के रूप में स्थापित करने का। वैश्विक स्वास्थ्य के मोर्चे पर यह नीति सहयोग को करारा झटका देगी, क्योंकि दवाएं सीमाओं से परे मानवता की साझा जरूरत हैं।

ट्रंप का यह टैरिफ बम वैश्विक आर्थिक संतुलन को उथल-पुथल में डाल रहा है। अमेरिका का संदेश बिल्कुल साफ है: "हमारा हित सर्वोपरि।" भारत के सामने चुनौती विकट है, मगर रणनीतिक सूझबूझ इसे सुनहरे अवसर में बदल सकती है। वैश्विक व्यापार एक जटिल ताना-बाना है— एक धागा टूटने से पूरी व्यवस्था डगमगा सकती है। इतिहास गवाह है कि संकट ही नई ताकतों को जन्म देते हैं। भारत का फार्मा उद्योग, अपनी अदम्य लचीलता और नवाचार की शक्ति के बल पर, इस तूफान को न केवल झेल सकता है, बल्कि पहले से कहीं अधिक सशक्त होकर उभर सकता है। सवाल यह है: क्या विश्व इस दांव को स्वीकार करेगा, या नई साझेदारियों के साथ करारा जवाब देगा? समय इसका खुलासा करेगा, लेकिन यह शुरुआत निश्चित रूप से विस्फोटक है।

जीवन की रक्षा के लिए भी विकास के समांतर धरती को बचाने का संकल्प लेना होगा

विजय गर्ग

पहली नजर में यह तथ्य राहत दे सकता है कि देश में में पिछले दो वर्षों में वन और वृक्ष क्षेत्र का दायरा देश के कुल भौगोलिक क्षेत्र के एक चौथाई से ज्यादा (25.17 फीसद) हो गया है, लेकिन राष्ट्रीय स्तर पर यह दायरा | की दृष्टि से लक्ष्य फिलहाल काफी बढ़ने के बावजूद पारिस्थितिकी सनक पारिस्थितिकीय स्थिरता कायम है। राष्ट्रीय वन नीति-1988 के रखने के लिए देश के कुल भौगोलिक क्षेत्र का कम से कम एक तिहाई हिस्सा वन क्षेत्र होना चाहिए।

सभ्यता की शुरुआत से ही प्रकृति और मनुष्य के बीच बहुत गहरा संबंध रहा है। दोनों एक-दूसरे के पूरक हैं, लेकिन आज ऐसा लगता है कि इंसान को प्रकृति की उतनी रह गई है। इसमें दोराय नहीं कि पर्यावरण परवाह नहीं रह सिमटता नजर आ पर संतुलन को बनाए रखना आवश्यक है, लेकिन विकास इंसानी सभ्यता का एक जरूरी पहलू है। पहले जहां जंगल थे, चारों तरफ हरियाली थी, वहां अब सब कुछ है। बढ़ती आबादी के समांतर विकास एक अपरिहार्य स्थिति है। मगर इस क्रम में अनेक जगहों पेड़ों की अनियंत्रित कटाई के साथ ही जंगलों की स्थिति ऐसी कर दी गई है, आज। पारिस्थितिकी के सामने एक बड़ा संकट खड़ा हो रहा में पिछले कुछ वर्षों से जंगल लगातार कम होते जा रहे हैं। ऐसे दौर में, जब पर्यावरण विशेषज्ञ दुनियाभर में घटते जंगलों पर चिंता जता रहे हों, पर चिंता जता रहे हों, भारतीय वन सर्वेक्षण (एफएसआइ) की रपट ने थोड़ी राहत दी है। जिसमे भारत इसके मुताबिक, वर्ष 2021 से 2023 तक भारत का कुल वन और वृक्ष आवरण क्षेत्र 1,445 वर्ग किलोमीटर बढ़ा है। देश को हरा-भरा रखने में मध्य प्रदेश सबसे आगे है। अरुणाचल प्रदेश, महाराष्ट्र, छत्तीसगढ़, राजस्थान, उत्तर प्रदेश और ओड़ीशा में भी दो साल पहले के मुकाबले हरियाली बढ़ी है। इससे संकेत मिलते हैं कि देश में कई वर्षों से जारी सामाजिक वन उत्सव और वृक्षारोपण ₹और वक्षारोपण जैसी योजनाओं का असर दिखने लगा है। है। हालांकि रपट में ये तथ्य चिंताजनक है कि उत्तराखंड और पूर्वोत्तर के राज्यों में वन एवं वृक्ष आवरण क्षेत्र घटा है।

पहली नजर में यह तथ्य राहत दे सकता है कि देश में में पिछले दो वर्षों में वन और वृक्ष क्षेत्र का दायरा देश के कुल भौगोलिक क्षेत्र के एक चौथाई से ज्यादा (25.17 फीसद) हो गया है, लेकिन राष्ट्रीय स्तर पर यह दायरा। की दृष्टि से लक्ष्य फिलहाल काफी बढ़ने के बावजूद पारिस्थितिकी सनक पारिस्थितिकीय स्थिरता कायम है। राष्ट्रीय वन नीति- 1988 के रखने के लिए देश के कुल भौगोलिक क्षेत्र का कम से कम एक तिहाई हिस्सा वन क्षेत्र होना चाहिए। एफएसआइ ने सर्वेक्षण रपट की रपट की शुरुआत वर्ष 1987 में की थी। तब से अब तक

दो फीसद ही बढ़ी हिस्सेदारी करीब है। जाहिर है, दुनिया के दूसरे देशों की की तरह जनसंख्या ॥ वृद्धि, शहरीकरण और औद्योगीकरण के कारण भारत में भी जंगल प्राकृतिक तौर पर फल- फल नहीं पा रहे हैं। विकास परियोजनाओं की अहमियत से इनकार नहीं किया जा सकता, , लेकिन खनन लिए जंगलों की कटाई बड़ी कटाई बड़ी समस्या है, पर सुप्रीम कोर्ट ने ने भी समय-समय पर चिंता जताई है।

गौरतलब है कि हरियाली क्षेत्र में जो बढ़ोतरी दर्ज की गई है, उसका अधिकतर हिस्सा प्राकृतिक वन क्षेत्र से बाहर है, जो वृक्षारोपण और कृषि आधारित वानिकी का नतीजा है। निश्चित रूप से इन प्रयासों का अपना महत्त्व है, लेकिन प्राका प्राकृतिक वन क्षेत्र के भरे-पूरे पेड़ों की तुलना शहरों में पौधरोपण अभियान से तब तक नहीं हो सकती, जब तक कि लगाए गए पौधे पूरी तरह विकसित नहीं हो जाते। ऐसे में वन संशोधन अधिनियम (2023) को लेकर चल रही बहस की अहमियत भी बढ़ जाती है। इस संशोधन में गैर वर्गीकृत जंगल का संरक्षण हटाने की बात है। गौर करने की बात है कि इस श्रेणी में कुल वनक्षेत्र का सोलह फीसद से ज्यादा हिस्सा आ जाता है, जो बुनियादी ढांचा परियोजनाओं से संभावित से खतरे के दायरे में आ जाएगा। कहा जा सकता है, वृक्षारोपण और कृषि वानिकी के जरिए हरित क्षेत्र का दायरा बढ़ाने का प्रयास निश्चित रूप से सराहनीय है, लेकिन प्राकृतिक वन क्षेत्र का संरक्षण भी उतना ही अहम है।

दुनिया तेजी से शहरीकरण की ओर बढ़ रही है, लेकिन हकीकत यह है कि शहरीकरण हमारी प्रकृति के सामने कहीं ज्यादा चुनौती पेश कर रहा है।

शहरों के विकसित होने के साथ-साथ दुनियाभर में हरियाली का दायरा सिकुड़ रहा है और कंक्रीट के जंगल बढ़ रहे हैं। इतना ही नहीं, बिगड़ते पर्यावरणीय संतुलन और मौसम | चक्र में आते बदलाव के कारण पेड़-पौधों की प्रजातियों के अलावा जीव-जंतुओं की कई प्रजातियों के अस्तित्व पर भी अब संकट के बादल मंडरा रहे हैं। जबकि पर्यावरण का संबंध मानवीय जीवन में महत्त्वपूर्ण है। यों कहें कि दोनों एक-दूसरे के पूरक हैं। विकास अनिवार्य है, लेकिन आज विकास के आगे पर्यावरण को हाशिये पर छोड़ दिया गया है। को भविष्य की कोई चिंता ही नहीं है। आज बढ़ती भर में वनों की कटाई हो ऐसा लगता है कि मनुष्य आबादी की जरूरतों को पूरा करने के करने के लिए दुनिया भर में रही है। बिगड़ते पर्यावरण से देश की जड़ी- -बूटियां लुप्त होने के कगार पर हैं। फसलों और फलों के उत्पादन पर भी इसका प्रभाव पड़ने लगा है। बिगड़ते पारिस्थितिकी तंत्र का जो परिणाम सामने आने वाला है और कई अर्थों में मनुष्य को को झेलना भी 1 भी पड़ रहा है, उसके मद्देनजर वन और वन्यजीवों के संरक्षण को लेकर सजग होने का समय है। प्राकृतिक संतुलन को बनाए सरस वन बहुत आवश्यक हैं। इससे आर्थिक विकास का ढांचा डगमगाने लगा है। भूख, खाद्य असुरक्षा और गरीबी ने न केवल विकासशील और गरीब देशों पर असर डाला है, बल्कि विकसित देशों को भी परेशानी में डाल दिया है। ईंधन और जैव-विविधता से जुड़े संकटों ने भी आर्थिक विकास पर असर दिखाया है। इस विषम स्थिति में अपने जीवन की रक्षा के लिए भी हमें विकास के समांतर धरती को बचाने का संकल्प लेना होगा।

सेवानिवृत्त प्रिंसिपल मलोट पंजाब

संपादकीय

चिंतन-मनन

क्यों ज़रूरी है रामलीला देखना – डॉ. अंकुर शरण, संवाद में ममता श्रीवास्तव जी (रामलीला समिति सदस्य)

आज के परिप्रेक्ष्य में, जब मोबाइल क्रांति ने युवाओं की जीवनशैली, सोच और समय दोनों को बदल दिया है, तब यह सवाल उठता है कि आखिर क्यों आज का युवा अपने सांस्कृतिक धरोहर की ओर पुनः लौटना चाहता है? इसका उत्तर हमें मिलता है जब हम रामलीला जैसे जीवंत आयोजन को देखते और महसूस करते हैं।

मुझे इंद्रप्रस्थ, फरीदाबाद में रामलीला देखने का सौभाग्य मिला और मैं तहेदिल से आयोजन समिति को साधुवाद देता हूँ, जिनकी निष्ठा और मेहनत इस परंपरा को जीवित रखे हुए है।

संवाद में ममता श्रीवास्तव जी, समिति सदस्य:

डॉ. अंकुर शरण: ममता जी, आज के समय में रामलीला का आयोजन क्यों इतना महत्वपूर्ण है?

ममता श्रीवास्तव: रामलीला सिर्फ़ एक नाटक नहीं, बल्कि हमारी संस्कृति, धर्म, आस्था और आदर्शों का जीवंत चित्रण है। इसमें हमें मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम का आदर्श जीवन, सत्य, त्याग और कर्तव्य का संदेश मिलता है। आज की पीढ़ी, जो मोबाइल और वर्चुअल दुनिया में खो जाती है, उसे ऐसे आयोजनों से वास्तविक जीवन मूल्यों को समझने का अवसर मिलता है।

डॉ. अंकुर शरण: क्या आपको लगता है कि आज का युवा इस ओर आकर्षित हो रहा है?

ममता श्रीवास्तव: बिलकुल। मोबाइल पर reels देखकर क्षणिक मनोरंजन तो मिलता है, लेकिन रामलीला जैसे आयोजनों में भावनात्मक और आध्यात्मिक ऊर्जा मिलती है। यही वजह है कि युवा वर्ग अब समझने लगा है कि उनकी जड़ें कहाँ हैं और इन्हें संजोना क्यों ज़रूरी है।

डॉ. अंकुर शरण: तो क्या इसे एक सामाजिक पाठशाला भी कहा जा सकता है?

ममता श्रीवास्तव: हाँ, रामलीला सामाजिक पाठशाला ही है। यहाँ बच्चे-बड़े सभी सीखते हैं कि अच्छाई और बुराई की लड़ाई में अंततः सत्य की ही जीत होती है। यही शिक्षा आज के समाज को और विशेषकर युवाओं को बहुत आवश्यक है।

रामलीला देखना केवल परंपरा का हिस्सा भर नहीं है, यह हमें जोड़ता है – अपनी संस्कृति से, अपनी आस्था से और अपने आदर्शों से। आज जब मोबाइल और सोशल मीडिया युवा को भटकाने की ताक़त रखते हैं, तब रामलीला जैसी धरोहरें उन्हें सही दिशा दिखाने का कार्य करती हैं।

दुनिया का चेहरा आज परत दर परत कृत्रिमता से ढका हुआ है

विजय गर्ग

दुनिया का चेहरा आज परत दर परत कृत्रिमता से ढका हुआ है। इंसान की मूल पहचान अब चेहरे पर नहीं, बल्कि उसके प्रदर्शन में देखी जाती है। कबीर ने कहा था - 'सांच बत्तीसों बाजै नहीं, झूठे लागै तूर।' झूठ का शोर गूंज रहा है और सच चुपचाप दम तोड़ता है। मानव समाज में आत्मीयता का स्थान प्रदर्शन ले चुका है। सोशल मीडिया हो या वास्तविक जीवन- हर ओर 'मैं कौन हूं' के बजाय 'लोग मुझे क्या समझें' की भावना मुखर है। इसी को देखकर एक शायर ने कहा था कि झूठ को सच का लिबास पहनाकर लोग बाजार में बेच रहे हैं। आज व्यक्ति अपने सुख-दुख भी कैमरे की फ्लैश और सोशल मीडिया पर लिखी टिप्पणियों को पसंद करने वालों संख्या से प्रमाणित करवाना चाहता है। रिश्ते, भावनाएं और संवेदनाएं - सब इस आडंबरपूर्ण बवंडर में कहीं खो गए दिखावे की यह प्रवृत्ति हमें एक ऐसे मंच पर खड़ा कर रही है, जहां असली मूल्य खोते जा रहे हैं। वैसे भी कहा जाता है कि एक औंस व्यवहार, एक टन उपदेश से बड़ा है। मगर आज उपदेश देना सहज है और आचरण करना भारी। लोग स्वयं को नीति-नियमों और नैतिकताओं का प्रबल समर्थक दिखाते हैं, जबकि जीवन के व्यवहार मात्र स्वार्थ प्रमुख होता है। 'दिखावे की दुनिया' वही है, जहां लोग मुस्कुराते चेहरे के भीतर छिपे हुए द्वंद्व को छिपा लेते हैं। शास्त्रों में कहा गया है कि 'असत्येन न प्रीतियोगः', अर्थात असत्य से कभी स्थायी मैत्री संभव नहीं। अगर व्यक्ति पूरी दुनिया को धोखा देकर स्वयं को सफल समझता है, तो यह सफलता मिथ्या है। यह दिखावा जीवन के उस असली स्वरूप को विकृत कर देता है, जहां सादगी और सहजता का मूल्य सर्वोच्च होना चाहिए।

अगर हम समाज का अवलोकन करें तो पाएंगे कि

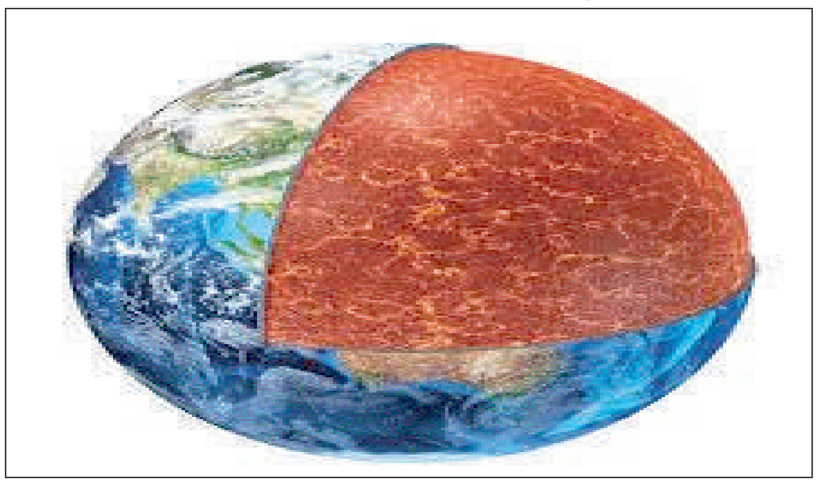

शिक्षा, विवाह, उत्सव, यहां तक कि शोक तक में प्रदर्शन का बोलबाला है। शादी हो तो सोने-चांदी का प्रदर्शन, पर्व हो तो महंगे वस्त्रों का प्रदर्शन और सोशल मीडिया हो तो 'फालो' और 'लाइक' करने वालों का प्रतिस्पर्धात्मक प्रदर्शन। यही कारण है कि इंसान भीतर से खोखला होता जा रहा है। किसी शायर ने कहा कि तस्वीरें मुस्कुराती हैं, घरों में सन्नाटा है, क्या खूब ये दिखावे का जमाना आया है। इस जमाने में सुख-दुख नहीं, बल्कि उनकी सजावट महत्त्वपूर्ण हो गई है। जैसे जीवन का मूल्य उसके 'फिल्टर' और 'कैप्शन' से तय होता है। असलियत के दर्द और संघर्ष अब पर्दे के पीछे छिपा दिए जाते हैं।

दिखावे की इस प्रवृत्ति का सबसे बड़ा दुष्प्रभाव यह है कि इंसान अपनी मूल पहचान से कटता जा रहा है। समाज ने इन मूल्यों को त्यागकर कृत्रिम सुंदरता और असत्य की चकाचौंध को स्वीकार कर लिया है। अब लोग चाहते हैं कि उन्हें उनकी अच्छाइयों से नहीं, उनके ठाठ-बाट से आंका जाए। हमारी दुनिया 'स्वयं' बनने से बचकर 'कोई और' बनने की ओर दौड़ रही है। यही कारण है कि प्रतिस्पर्धा और तुलना ने मनुष्यों में ईर्ष्या, अवसाद और असंतोष को बढ़ा दिया है। अगर हम ईमानदारी से सोचें, तो दिखावे से न केवल व्यक्ति, बल्कि पूरा समाज क्षतिग्रस्त हो रहा है। रिश्ता भरोसे पर नहीं, दिखावे पर टिकता है। मित्रता सच्चाई पर नहीं, लाभ-हानि पर पनपती है। यही कारण है कि हमारी वास्तविक आत्मीयता धीरे-धीरे नष्ट हो रही है। कबीर ने कहा- 'माया मरी न मन मरा, मर-मर गया शरीर। आशा तृष्णा न मरी, कह गए दास कबीर।' यहां माया ही दिखावे का दूसरा नाम है, जो व्यक्ति को निरंतर असंतोष और द्वंद्व में रखती है। आज का समाज भौतिकता की चकाचौंध में खोकर आत्मा के सत्य और शांति से दूर हो रहा है।

आवश्यकता है कि हम इस आडंबर की परतें उतारकर सादगी और सत्य की ओर लौटें। प्रेमचंद ने कहा था- 'सादगी में ही सबसे बड़ी खूबसूरती है।' अगर हम अपने जीवन को गंभीर दृष्टि से देखें, तो पाएंगे कि वास्तविक संतोष केवल वहीं है, जहां दिखावा नहीं, बल्कि सच दिल से प्रकट होता है। हमें यह नहीं सोचना चाहिए कि लोग हमें क्या समझेंगे, बल्कि यह कि हमारे कर्म हमें क्या बना रहे हैं। वैसे भी चेहरे पर हजार पर्दा रख लीजिए, फिर भी दिल का सच दिख ही जाता है। अगर दुनिया सच को दबाकर केवल दिखावे पर टिकी रहे, तो यह सभ्यता बिखर जाएगी। इसलिए आत्मीयता, सत्य और सादगी से ही जीवन और समाज की असल सुंदरता बनी रह सकती है। दिखावे की इस चमचमाती दुनिया में जब हम गहराई में उतरते हैं, तो सचमुच आत्मा कांप जाती है। यह संसार मानो एक रंगमंच बन चुका है, जहां हर कोई मुखौटा पहनकर अपने किरदार में व्यस्त है। चेहरे पर मुस्कुराहट और भीतर अंधकार- यही आज का सबसे बड़ा विरोधाभास है। लेकिन सवाल उठता है कि कब तक हम इस कृत्रिमता को ढोते रहेंगे? क्या जीवन इतना ही है कि लोग ताली बजा कर हमारी सराहना कर दें और हम भीतर से खोखले हो जाएं? असल जीवन तो वही है, जहां सादगी की मांसलता और सत्य की सुगंध। जब इंसान अपनी आंखों से पर्दा हटाता है और दिल से बोलता है, तभी प्रेम जन्म लेता है, तभी आत्मीयता पनपती है, तभी जीवन सुंदर बनता है। बड़ों ने कहा है- 'सत्य में ही अमरत्व है, असत्य में केवल क्षणिक चमक।' सच उनके शब्दों की तरह अमर है, और झूठ की यह रोशनी पल दो पल में बुझ जाती है। एक शायर का यह दर्द इन पंक्तियों में गूंजता है- 'हकीकत छिप गई है नकाबों के नीचे, हर इंसान अब किरदारों के नीचे।' समाज तभी बदल सकता है, जब इंसान इस दिखावे की जंजीरों को तोड़कर अपने असली रूप को स्वीकार करे।

सेवानिवृत्त प्रिंसिपल मलोट पंजाब

पश्चिम में गर्मी की लहरों और एशिया में बादलों के विस्फोट के पीछे विज्ञान

विजय गार्ग

पश्चिमी अमेरिका में गर्मी की लहरें और एशिया में बादल विस्फोट दोनों ही विशिष्ट वायुमंडलीय परिस्थितियों से प्रेरित चरम मौसम की घटनाएं हैं, जो अक्सर जलवायु परिवर्तन के कारण बढ़ जाती हैं। वे मौसम के पैटर्न पर वार्मिंग ग्रह के व्यापक प्रभाव से जुड़े हुए हैं। पश्चिम में गर्मी की लहरों के पीछे विज्ञान गर्मी की लहर असामान्य रूप से गर्म मौसम की एक लंबी अवधि है। पश्चिमी संयुक्त राज्य अमेरिका में, ये घटनाएं अक्सर ₹उष्णता गुंबद₹ के कारण होती हैं

उच्च दबाव प्रणाली: ऊपरी वायुमंडल में एक मजबूत, निरंतर उच्च दबाव प्रणाली, जिसे अवरोधक उच्च भी कहा जाता है। यह प्रणाली एक ढक्कन की तरह काम करती है, जिसके नीचे गर्म हवा फंस जाती है।

निलंबन: इस उच्च दबाव प्रणाली के तहत हवा डूब जाती है (एक प्रक्रिया जिसे निलंबन कहा जाता है)। जैसे-जैसे हवा नीचे आती है, यह संपीड़ित और गर्म हो जाती है, जिससे सतह पर तापमान बढ़ जाता है।

साफ आकाश और स्थिर वायु: उच्च दबाव बादलों के निर्माण को रोकता है, जिससे अधिक सौर विकिरण जमीन तक पहुंच सकता है तथा गर्म हो जाता है। स्थिर हवा क्षेत्र में जाने से ठंडी हवा को रोकती है, जिससे दिनों या सप्ताहों तक गर्मी बढ़ जाती है। जलवायु परिवर्तन इन घटनाओं को अधिक बार-बार, लंबे समय तक और गंभीर बनाकर तीव्र बनाता है। एक गर्म ग्रह का अर्थ है कि बेसलाइन तापमान अधिक होता है, इसलिए गर्मी की लहर पहले से ही ऊंची बिंदु से शुरू होती है। एशिया में क्लाउडबर्स्ट के पीछे विज्ञान क्लाउडबर्स्ट एक अचानक, स्थानीयकृत और अत्यधिक भारी वर्षा है, जिसे आमतौर पर छोटे क्षेत्र में 100 मिमी से अधिक बारिश के रूप में परिभाषित किया जाता है। ये हिमालय जैसे एशिया के पहाड़ी क्षेत्रों में सबसे आम हैं।

नमी-लेडेन हवाएं: मुख्य कारण मानसून प्रणाली है, जो हिंद महासागर और अरब सागर से गर्म, आर्द्र वायु लाती है।

ओरोग्राफिक लिफ्ट: चूंकि यह आर्द्रता युक्त हवा पहाड़ों की ऊंची ढलानों से मिलती है, इसलिए इसे तेजी से ऊपर उठने के लिए मजबूर किया जाता है (एक प्रक्रिया जिसे ओरोग्राफिक लिफ्ट कहा जाता है)।

संपीड़न और बादल का गठन: जैसे-जैसे हवा बढ़ती है, यह ठंडा हो जाती है, तथा जल वाष्प बड़े घने कमुलुनिम्बस बादलों को बनता है।

फंसे हुए बादल और रुक गए तूफान: पहाड़ी इलाके इन बादलों को फंसने से रोक सकते हैं। बादलों के भीतर मजबूत अपप्रवाह नमी को निलंबित रखता है, जिससे बारिश में देरी होती है।

अचानक रिलीज़: जब बादल अब इकट्ठा होने वाले पानी की विशाल मात्रा को नहीं पकड़ सकता, तो यह सब एक बार में भारी बारिश के साथ छोड़ देता है जलवायु परिवर्तन यहां भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। गर्म वातावरण में अधिक नमी हो सकती है, इसलिए जब बादलों के प्रकोप की स्थिति पूरी होती है तो इससे होने वाली बारिश और भी तीव्र और विनाशकारी होती है। कनेक्शन: एक वार्मिंग ग्रह यद्यपि यह दोनों घटनाएं विपरीत प्रतीत होती हैं, लेकिन ग्लोबल वार्मिंग द्वारा उन्हें बढ़ाया जाता है।

जेट स्ट्रीम व्यवधान: जलवायु परिवर्तन ध्रुवीय जेट प्रवाह को बाधित कर सकता है। जेट स्ट्रीम का तरंग पैटर्न अधिक स्पष्ट और धीमा हो सकता है, जिससे उच्च-दबाव वाली प्रणालियां एक क्षेत्र में रुक सकती हैं और गर्मी की लहरें पैदा कर सकती हैं जबकि कम दबाव वाली प्रणाली के साथ ₹ट्रॉफीर₹ दूसरी जगह भारी बारिश लाती है।

वायुमंडलीय आर्द्रता में वृद्धि: भौतिकी का एक बुनियादी सिद्धांत यह है कि गर्म हवा अधिक जल वाष्प धारण कर सकती है। जैसे-जैसे वैश्विक तापमान बढ़ता है, वातावरण अधिक आर्द्र हो जाता है। यह बढ़ी हुई जल वाष्प अधिक तीव्र गर्मी गुंबद (क्योंकि हवा सूखी लेकिन गर्म है) और अधिक चरम बादलों के विस्फोट दोनों के लिए ईंधन प्रदान करती है, क्योंकि बारिश में अधिक नमी जारी की जा सकती है।

सेवानिवृत्त प्रिंसिपल, शैक्षिक स्तंभकार, प्रख्यात शिक्षाविद्, गली कौर चंद एमएचआर

रामलीला में गीत: डॉ. नीरज भारद्वाज

श्री रामचरितमानस की एक-एक चौपाई भक्ति, भाव, साधना आदि विशेष गुणों से भरी हुई है। चौपाई के सभी अक्षर ब्रह्म हैं। एक-एक चौपाई पर कितने ही शोध लिखे जा सकते हैं, पृष्ठ भी कम पड़ सकते हैं। हरि अनंत हरि कथा अनंताका भाव मानस मेंभरा हुआ है। जब कोई व्यक्ति और व्यक्तित्व भगवान श्रीराम का हो जाता है तब ऐसी ही रचनाओं का जन्म होता है। भगवान श्रीराम इस चराचर जगत में सभी प्राणियों से मिलते हुए और उनका उद्धार करते हुए वन मार्ग में आगे बढ़ते चले गए। सृष्टि के उद्धार के लिए राक्षसों का वध किया। गोस्वामी तुलसीदास ने मानस को इतनी सुंदर ढंग से लिखा है कि जब हम मानस को पढ़ते हैं तो मानस का गान और उसके दृश्य दोनों ही स्वयं प्रकट हो जाते हैं। भगवान स्वयं हमारे साथ उस भजन में शामिल हो जाते हैं, हमें आनंद, उत्सव, ज्ञान, भक्ति, शक्ति की सरिता में बहा ले जाते हैं।

रामायण को आधार बनाकर बहुत सारे काव्य, महाकाव्य आदि ग्रंथ लिखे गए हैं। श्रीराम चरित्र को लेकर नाटक लिखें गए हैं। भगवान श्रीराम के जीवन चरित्र का सबसे अद्भुत मंचनरामलीला में ही होता है। रामलीला में के बहुत रूप हैं, संगीतमय रामलीला, संवाद के साथ रामलीला, गुटका रामायण आदि। देश-विदेश की भूमि पर रामलीला और रामकथा होती रहती हैं। भगवान श्रीराम को लेकर भजन भी बहुत सारे बनाए गए हैं। रामलीला में दृश्य के आधार पर भी बहुत सारे गीत बनाए गए हैं। यह सभी अलग-अलग क्षेत्र और भाषा के आधार पर हैं और सभी की अपनी लोकप्रियता भी है।रामलीला के दसदिन उत्सव, उमंग, उत्साह, भक्ति, ज्ञान योग को जब हम बचपन से ही देख रहेहैं।रामलीला के दृश्यों के बीच-बीच में गीत आते हैं।बचपन में यह गीत समझ नहीं आते थे, जैसे ही बड़े हुए गीत का महत्व और उन गीतों के भाव भी हमारे सामने आए।

हम यहां पर कुछ दृश्य के साथ रामलीला में प्रस्तुत होने वाले गीतों की चर्चा कर रहे हैं। भगवान जब पृथ्वी पर मनुष्य रूप में अवतार के लिए आते हैं तो वहां पर सभी देवता और पृथ्वी एक स्तुति गीत गाते हैं,जय जय सुरनायक जय सुखदायक प्रनतपाल भगवंत।गौ द्विज हितकारी जय असुरारी सिंधु सुता प्रिय कंता।। भगवान के प्रकट होने का गीत-भजन हम सभी ने सुना ही है,भये प्रगट कृपाला दीनदयाला कौशल्या हितकारी।...

जनकपुर में पुष्प वाटिका में गिरिजा माता के पूजन के समय मां सीता द्वारा गाया गया गीत इस प्रकार है, चलो मंदिर में माता के विनय अपनी सुनने को।... पुष्प वाटिका में ही मां सीता और भगवान श्रीराम की भेंट हो गई थी। विश्वामित्र का जनक के धनुष यज्ञ में राम को गीत द्वारा प्रेषित करना और आशीर्वाद देना कि इस धनुष को भंग कीजिए,उठो राम यह काम तुम ही करोगे। तुम्ही शोक राजा की मन का हरोगे।।...लक्ष्मण का गीत अपने पिताजी राजा दशरथ के सामने जनकपुर से धनुष टूटने का वर्णन करते हुए,जब धनुष जनक का तोड़ दिया, श्री रामचंद्र बलकारी ने। पहनाई गले में जयमाला जब सीता जनक दुलारी ने।...

वनवास को जाते समय माता के केकैई के सामने श्री राम का यह गीत हे माता संसार में, यूं तो पुत्र अनेक। सेवक जो मां-बाप का पुत्र वही बस एक।...इस समय एक ओर लोकप्रिय गीत है, राम वनों को जाता री माता, राम वनों को जाता..भगवान श्रीराम का सीता को समझाते हुए और वन ना जाने की बात कहते हुए,घर बैठो ना वन को चलो तुम सिया। तेरे पैरों में चुभ जाएंगे कांटे सिया।... वनवास में जाते समय अवध के प्रजावासियों का यह गाना,राम चले लक्ष्मण भी चले, और संग में सीता माता रे। हाय राम अयोध्या छोड़ चले।... वनवास के समय भारत मिलन और खड़ाऊ देते हुए भगवान श्रीराम का गाना,मेरी लेजा चरण खड़ाऊं, भरत तू लौट अवध घर जा।...

भगवान की अनन्य भक्तशबरी का गीत,रामा रामा रटते रटते बीती रे उमरिया रघुकुल नंदन कब आओगे भिलनी की डगरिया।...भगवान हनुमान द्वारा लंका दहन करने के बाद गीत,रावण की हनुमान जला आए लंका। दुष्टों की हनुमान जल आए लंका।।... लक्ष्मण के मूर्छित होने पर भगवान श्रीराम का गीत,अरे तेरे कहां लगा है बाण, बता दे लक्ष्मण भैया। बता दे लक्ष्मण भैया कैसे पार लगेगी नैया।... वनवास पूरा होने पर अयोध्या लोटने पर भारत का यह गीत, कोई कहियो रे हरि आवन की।मोहे लगी है लगन हरी पावन की।...

इस दृष्टि से हम देखें-समझें तो हमें रामलीला में गीतों की एक लंबी परंपरा मिल जाती है। यहां विशेष गीतों को ही रखने का प्रयास किया है। इनसे अलग भी क्षेत्र विशेष की दृष्टि से रामलीला में लोकगीतों को भी जगह दे दी जाती है। यह एक लंबी परंपरा है, इस पर कितनी ही लंबी चर्चा की जा सकती है। रामलीला हमारी संस्कृति है। इसमें लोक उपजा है।

डॉ. नीरज भारद्वाज

तीन राज्यों मे कुड़मी समाज का रेल रोको आंदोलन जोरदार , झारखंड मे ट्रैक पर उतरे लाखों

सितंबर 2025 में आयोजित व्याख्यानमाला के दौरान राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (RSS) के सरसंघचालक मोहन भागवत ने कहा कि आज महिलाओं की भागीदारी समाज और राष्ट्र निर्माण में पहले से कहीं अधिक आवश्यक है। उन्होंने यह स्पष्ट किया कि स्त्री–शक्ति केवल परिवार तक सीमित नहीं है, बल्कि सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक क्षेत्रों में भी उसकी बराबरी की भूमिका होनी चाहिए। भागवत ने कहा कि ₹मातृशक्ति के बिना राष्ट्र अधूरा है₹ उन्होंने इस पर जोर दिया कि भारतीय संस्कृति में नारी को सदा पूजनीय और निर्णायक स्थान दिया गया है, इसलिए संघ परिवार की शाखाओं और गतिविधियों में महिलाओं का सक्रिय योगदान भविष्य की दिशा तय करेगा।

-- डॉ.प्रियंकासौरभ

भारत के सामाजिक–राजनीतिक परिदृश्य में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) एक महत्त्वपूर्ण संगठन के रूप में स्थापित है। 1925 में डॉ. केशव बलिराम हेडगेवार द्वारा स्थापित यह संस्था मूलतः पुरुष swayamsevaks के लिए बनी थी। इसकी शाखाओं, अनुशासन और विचारधारा ने धीरे-धीरे भारतीय राजनीति और समाज पर गहरा असर डाला। परन्तु जब हम महिलाओं की भूमिका की ओर देखते हैं, तो तस्वीर कुछ अलग मिलती है। आरएसएस के समानान्तर 1936 में जन्मी "राष्ट्र सेविका समिति" ने ही स्त्रियों के लिए रास्ता खोला। आज जब संघ अपनी शताब्दी मना रहा है, तब इस यात्रा पर नज़र डालना ज़रूरी है कि स्त्रियों की भागीदारी कहाँ से शुरू हुई और 2025 तक वह किस मुकाम तक पहुँची।

शुरुआती दौर: 1925 से 1936

संघ की स्थापना 1925 में नागपुर में हुई। यह संगठन अनुशासन, परेड, शाखा और राष्ट्रवाद पर आधारित था। लेकिन इसकी संरचना पुरुष प्रधान रही। हेडगेवार स्वयं मानते थे कि स्त्रियों को अलग मंच चाहिए, क्योंकि उस समय के सामाजिक परिवेश में स्त्रियों का सीधे पुरुष शाखाओं में आना सहज नहीं माना जाता था। इसी पृष्ठभूमि में 1936 में लक्ष्मीबाई केलकर ने विजयादशमी के दिन वर्धा में "राष्ट्र सेविका समिति" की स्थापना की। हेडगेवार ने भी इस पहल का स्वागत किया और सुझाव दिया कि महिलाएँ अपनी संस्था चलाएँ, ताकि वे अपनी शक्ति, संस्कृति और नेतृत्व को स्वतंत्र रूप से विकसित कर सकें। इस तरह महिलाओं की भागीदारी औपचारिक रूप से शुरू हुई।

सेविका समिति की स्थापना और शुरुआती संघर्ष

1939 में पहली बार समिति ने प्रशिक्षण वर्ग आयोजित किया। धीरे-धीरे अलग-अलग प्रांतों में इसकी शाखाएँ बनने लगीं। समिति का उद्देश्य केवल राष्ट्रवादी विचार फैलाना नहीं था, बल्कि स्त्रियों में 'मातृत्व, कर्तृत्व और नेतृत्व' (मातृत्व, कर्तृत्व, नेतृत्व) जैसे गुणों का विकास करना भी था। इसमें शारीरिक प्रशिक्षण, योग, गीत, खेल, अनुशासन और समाजसेवा शामिल किए गए। आज़ादी के आंदोलन में भी समिति की महिलाओं ने परोक्ष रूप से भूमिका निभाई। परन्तु उनकी गतिविधियाँ मुख्यतः सांस्कृतिक और सामाजिक क्षेत्रों तक सीमित रहीं।

1940 से 1970 का दशक: विस्तार की ओर

स्वतंत्रता के बाद के दशकों में समिति का नेटवर्क

बढ़ा। लक्ष्मीबाई केलकर की मृत्यु (1978) तक संगठन कई राज्यों में फैल चुका था। उनके बाद सरस्वती आपटे प्रमुख संचालिका बनीं। इस समय तक शाखाओं की संख्या हज़ारों में पहुँच गई थी। समिति का जोर महिला शिक्षा, संस्कार, और सेवा परियोजनाओं पर रहा। आपातकाल (1975–77) में समिति से जुड़ी महिलाओं ने विरोध प्रदर्शनों में भी भाग लिया। इस दौर ने उन्हें राजनीतिक रूप से अधिक सचेत और सक्रिय बनाया।

1980–2000: आधुनिकता और परम्परा का संगम

90 के दशक में जब भारतीय राजनीति में भाजपा और संघ परिवार का प्रभाव बढ़ने लगा, तो महिलाओं की भागीदारी भी चर्चा में आने लगी। समिति ने इस समय शहरी और पेशेवर महिलाओं तक पहुँच बनाने की कोशिश की। महिला शिक्षिकाओं, चिकित्सक और नौकरीपेशा स्त्रियाँ समिति के कार्यक्रमों से जुड़ने लगीं। 1994 में उषाताई चाटे और 2006 में प्रमिलाताई मेढे प्रखर नेतृत्व के रूप में सामने आईं। इन नेताओं ने महिला शाखाओं को आधुनिक मुद्दों—जैसे कामकाजी महिलाओं की चुनौतियाँ, शिक्षा, स्वास्थ्य और परिवार में संतुलन—से जोड़ा।

2012 से आगे: शांथक्का का नेतृत्व

2012 में वेंकट्रामा शांता कुमारी, जिन्हें लोकप्रिय रूप से "शांथक्का" कहा जाता है, राष्ट्र सेविका समिति की प्रमुख संचालिका बनीं। उनका जन्म 1952 में हुआ और वे लंबे समय से संघ परिवार के कार्य में सक्रिय थीं। उनके नेतृत्व में समिति ने अपना विस्तार और तेज़ किया। आज समिति के पास चार से पाँच हज़ार शाखाएँ हैं, जो लगभग 800 से अधिक जिलों में फैली हुई हैं। यद्यपि सटीक आँकड़े संगठन सार्वजनिक नहीं करता, लेकिन अनुमान है कि लाखों महिलाएँ प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से इससे जुड़ी हुई हैं। समिति शिक्षा, स्वास्थ्य, सेवा, छात्रावास और महिला सशक्तिकरण परियोजनाएँ चला रही है। शहरी महानगरों में भी इसकी शाखाएँ सक्रिय हो रही हैं।

संघ और महिला प्रश्न

संघ के भीतर महिलाओं को औपचारिक सदस्यता या नेतृत्व स्थान नहीं दिया गया है। आरएसएस की शाखाएँ केवल पुरुषों के लिए ही हैं। महिलाएँ केवल समिति के माध्यम से संघ के विचारधारा संसार का हिस्सा बनती हैं। आलोचकों का कहना है कि यह व्यवस्था महिलाओं को मुख्यधारा से बाहर रखती है। वे पुरुषों के बराबर निर्णयकारी पदों पर नहीं पहुँच पातीं।

परन्तु समर्थकों का मत है कि अलग संगठन होने से महिलाएँ स्वतंत्र रूप से नेतृत्व और गतिविधियाँ विकसित कर पाती हैं। संघ प्रमुख मोहन भागवत ने कई बार कहा है कि महिलाओं की भागीदारी "प्राकृतिक रूप से" बढ़ रही है। परन्तु अब भी नेतृत्व संरचना में असमानता साफ दिखाई देती है।

वर्तमान स्थिति (2025)

संघ अपनी शताब्दी मना रहा है। उसके लगभग 83,000 शाखाएँ देशभर में सक्रिय बताई जाती हैं। वहीं राष्ट्र सेविका समिति की शाखाएँ भी लगातार बढ़ रही हैं। समिति अब गाँवों के साथ-साथ महानगरों में भी काम कर रही है। इसके प्रशिक्षण वर्गों में स्कूली छात्राओं से लेकर पेशेवर महिलाएँ तक भाग लेती रही हैं। 2025 में समिति का चेहरा परम्परा और आधुनिकता का मिश्रण है—जहाँ एक ओर मातृत्व और परिवार आधारित मूल्य हैं, वहीं दूसरी ओर समाज सेवा और महिला नेतृत्व के अवसर भी हैं। समिति ने लाखों महिलाओं को संगठित कर आत्मविश्वास और सामूहिकता दी। शिक्षा, सेवा और सांस्कृतिक कार्यक्रमों से समाज पर ठोस असर पड़ा। महिलाओं को नेतृत्व और प्रबंधन का अवसर मिला। महिलाएँ संघ की मुख्य धारा (आरएसएस) में निर्णायक भूमिकाओं से बाहर रहीं। संगठन का वैचारिक ढाँचा महिलाओं को परम्परागत भूमिकाओं तक सीमित करता है। आधुनिक नारीवादी विमर्श से समिति का दृष्टिकोण टकराता है, क्योंकि वह स्वतंत्रता और समानता की बजाय मातृत्व और संस्कृति पर ज़ोर देती है।

सितंबर 2025 में आयोजित व्याख्यानमाला के दौरान राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (RSS) के सरसंघचालक मोहन भागवत ने कहा कि आज महिलाओं की भागीदारी समाज और राष्ट्र निर्माण में पहले से कहीं अधिक आवश्यक है। व्याख्यानमाला में यह भी कहा गया कि 2025 का भारत उस मुकाम पर खड़ा है, जहाँ महिला नेतृत्व केवल ₹पूरक₹ नहीं बल्कि ₹निर्णायक₹ भूमिका निभा रहा है। वक्ताओं ने यह भी जोड़ा कि आधुनिक शिक्षा, तकनीक और आर्थिक आत्मनिर्भरता के क्षेत्र में महिलाएँ जिस तरह से आगे बढ़ रही हैं, संघ परिवार को भी उसी अनुरूप अपनी संरचना और कार्यपद्धति को और खुला बनाना होगा। व्याख्यानमाला में अन्य वरिष्ठ कार्यकर्ताओं और विचारकों ने भी महिला नेतृत्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने बताया कि कैसे राष्ट्र सेविका समिति की महिलाएँ दशकों से शिक्षा, संस्कृति और सामाजिक सुधारों के क्षेत्र में काम कर रही हैं। यह तर्क दिया गया कि यदि 1925 में संघ की नींव रखी गई थी, तो उसी दशक में महिलाओं के लिए समानांतर संगठन की स्थापना इस बात का प्रमाण है कि महिलाओं की उपस्थिति को शुरुआत से ही महत्वपूर्ण माना गया।

1925 से 2025 की यात्रा दिखाती है कि संघ की विचारधारा से प्रेरित महिलाओं ने अपना अलग संगठन खड़ा कर लिया और उसे राष्ट्रीय स्तर तक फैलाया। लक्ष्मीबाई केलकर से लेकर शांथक्का तक यह सिलसिला निरंतर चला है। आज जब भारतीय समाज में महिलाएँ राजनीति, शिक्षा, व्यवसाय और सेना तक में अग्रणी भूमिका निभा रही हैं, तब यह सवाल और महत्त्वपूर्ण हो जाता है कि—क्या भविष्य में महिलाएँ सीधे संघ की शाखाओं और नेतृत्व में भी शामिल होंगी, या वे हमेशा समानान्तर संगठन तक ही सीमित रहेंगी? संघ की शताब्दी महिलाओं की इस यात्रा का पड़ाव भी है—एक यात्रा जिसमें परम्परा, अनुशासन, सेवा और नेतृत्व का संगम है, लेकिन समानता और सहभागिता की चुनौती अब भी शेष है।

मतदान में धांधली के विरुद्ध हस्ताक्षर अभियान हेतु पर्यवेक्षक नियुक्त

मनोरंजन सासमल , बरिष्ठ पत्रकार

भुवनेश्वर:- अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के निर्देश पर, ओडिशा प्रदेश कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष श्री भक्त चरण दास के आह्वान पर, भाजपा सरकार द्वारा की गई मतदान में धांधली के विरोध में, कांग्रेस पार्टी की ओर से प्रत्येक जिला कांग्रेस कमेटी द्वारा हस्ताक्षर अभियान शुरू किया गया है। इस अभियान के तहत जिला, ब्लॉक, एनएसी, नगर पालिका और पंचायत स्तर पर लोगों से इस सरकार के विरोध स्वरूप हस्ताक्षर एकत्र किए जाएँगे। इसके लिए, प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष श्री दास ने प्रत्येक जिले के लिए निम्नानुसार पर्यवेक्षक नियुक्त किए हैं। अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी ने निर्देश दिया है कि यह कार्यक्रम 12 अक्टूबर तक पूरा कर लिया जाए।

पर्यवेक्षक शीघ्र ही जिला समन्वयकों से संपर्क कर अपने-अपने प्रभार वाले जिलों का दौरा करेंगे और जनजागरण करेंगे तथा पंचायत स्तर से लेकर जिले तक हस्ताक्षर अभियान को सफल बनाकर एकत्रित हस्ताक्षरों की सूची 12 अक्टूबर तक प्रदेश कांग्रेस कमेटी कार्यालय में जमा करेंगे। प्रदेश कांग्रेस कमेटी ने एक प्रेस विज्ञप्ति में कहा कि उक्त सूचियाँ शीघ्र ही अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी कार्यालय को भेज दी जाएँगी।

इस संदर्भ में, श्री रवि मल्लिक और संतोष भोला अंगुल जिले के पर्यवेक्षक हैं, जबकि बालासोर- देबेंद्र मोहंती और हलधर सेठी, बारगढ़- देबस्मिता सामल, सत्य नारायण साहबी, भद्रक - बिजन नायक, हिमांशु लेंका और एसके मसूद अल्ली, भुवनेश्वर - सुजीत पाधी, अमृता दास, बल्लांगीर- बलभद्र माझी, उत्सव साहू, फकीर जगत, बौध- रंजीत दाश, अकबर खान, कटक- मानस रंजन आचार्य, श्रीनिवास रौत्रया, कटक शहर- देबेंद्र साहू, दुर्योधन बेहरा, देवगढ़- जयंत कुमार साहू, सुब्रत प्रधान, ढेंकनाल- चिन्मय सुंदर दास, सारदा प्रसाद प्रधान, गंजम पूर्व- जैकब प्रधान, जितेंद्र प्रधान, गंजम पश्चिम- प्रदीप स्वैन, गजपति- अमिया पटनायक, वोकाली सेठी, जगतसिंहपुर- बंदिता परिदा, अकब खान, जाजपुर- बनकानिधि बेहरा, मिलन पटनायक, झारसुगुड़ा- सस्मिता पांडा, धर्मेंद्र मिश्रा, कालाहांडी- प्रशांत बिशोई, संजय मंडल, केंद्रपाड़ा- अभिलाष मनिया, राजकिशोर बारिक, क्योंझर- प्रहलाद पूर्ति, योगेश अग्रवाल, खोरधा- तरुण कांत मिश्रा, मोहन हेम्ब्रम, देबाशीष महापात्र, कोरापुट- भरत बेमल, अखिल भात्रा, मयूरभंज पूर्व- यशोबंत सिंह लागुरी, नलिनी मोहंती, मयूरभंज पश्चिम- सुदर्शन जेना, निरोज लोचन दास, मलकानगिरी, लिपिका माझी, बालुंकेश्वर नायक, नबरंगपुर- निमाई सरकार, सीमांचल गिरि उल्लाका, नुआपाड़ा- द्रेपदी माझी, मुरलीधर नायक, नयागढ़-श्वेतविक पटनायक, निशिकांत मिश्रा, पुरी-शुभेंदु मोहंती, विनोद पटनायक, रायगढ़ा- बुजाबल माझी, कृष्ण चंद्र कुलदीप, राउरकेला-रमेश केरकेटा, अमिता बिस्वाल, संबलपुर-वीरेन पटनायक, शांतनु साहू, सुबरनापुर-मोतीलाल दास, कमल चंद्र तांडी, नागेंद्र प्रधान, अनंत सायन पाढ़ी को सुंदरगढ़ की जिम्मेदारी दी गई है।

बानपुर राष्ट्रीय राजमार्ग पर श्रृंखलाबद्ध दुर्घटनाओं में एक की मौत , पांच घायल

मनोरंजन सासमल , स्टेट हेड ओड़िशा

भूबनेश्वर : राष्ट्रीय राजमार्ग-16 पर बानपुर ओवरब्रिज के पास तीन बसों के आपस में टकराने की घटना हुई है। एक व्यक्ति की मौत हो गई और पाँच अन्य घायल हो गए हैं। एक घायल को भुवनेश्वर रेफर कर दिया गया है।

आज सुबह, जब शिमलीगुडा से भुवनेश्वर जा रही एक बस एक गाय को बचाने के लिए रुकी, तो पायलगुडा से भुवनेश्वर जा रही एक अन्य बस ने पीछे से आ रही एक बाइक को टक्कर मार दी।विशाखापत्तनम से कोलकाता जा रही एक बस ने उसे पीछे से टक्कर मार दी। परिणामस्वरूप, बाइक पर बैठे निमिकसेटा गाँव के शुभज्योति प्रहराज की मृत्यु हो गई, जबकि बाइक सवार को गंभीर हालत में भुवनेश्वर रेफर कर दिया गया है।

अन्य लोगों में, दो यात्री और सहायक चालक और हेल्पर घायल हो गए, जिनका बालूगाँव अस्पताल में इलाज चल रहा है।

तीसरा बस चालक अभी भी सड़क पर है। बानपुर पुलिस मौके पर पहुँचकर घटना की जाँच कर रही है।

आज सुबह, शिमलीगुड़ा से भुवनेश्वर जा रही एक बस एक गाय को बचाने के लिए रुकी, तभी पायलगुड़ा से भुवनेश्वर जा रही एक अन्य बस ने पीछे से आ रही बाइक को टक्कर मार दी। विशाखापत्तनम से कोलकाता जा रही बस ने उसे पीछे से टक्कर मार दी। परिणामस्वरूप, बाइक पर बैठे निमिकसेटा गाँव के शुभज्योति प्रहराज की मृत्यु हो गई, जबकि बाइक सवार को गंभीर हालत में भुवनेश्वर रेफर कर दिया गया है।

प्रधानमंत्री ने ओडिशा को 1700 करोड़ रुपये से अधिक की रेलवे परियोजनाओं की सौगात दी है

मनोरंजन सासमल , स्टेट हेड ओड़िशा

भूबनेश्वर : प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी शनिवार को झारसुगुड़ा के एक दिवसीय दौरे पर हैं। प्रधानमंत्री ने झारसुगुड़ा के आम्रपाली पोडिया में आयोजित एक जनसभा में विभिन्न परियोजनाओं का शिलान्यास और लोकार्पण किया।प्रधानमंत्री ने ओडिशा को 1700 करोड़ रुपये से अधिक की रेलवे परियोजनाओं की सौगात दी है।60,000 करोड़ रुपये से अधिक के विकास कार्यों का उद्घाटन किया गया है। देश भर में 97,500 से अधिक दूरसंचार टावर चालू हैं। बरहामपुर और सूरत के बीच अमृत भारत एक्सप्रेस का शुभारंभ किया गया है। अमृत भारत एक्सप्रेस का शुभारंभ वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से किया गया। संबलपुर सिटी और सरला के बीच रेलवे फ्लाईओवर का शिलान्यास किया गया। कोरापुट-बैगुडा रेलवे लाइन और मनाबार-कोरापुट-गोरपुर रेलवे लाइन के दोहरीकरण का उद्घाटन किया गया। भुवनेश्वर में सेमीकंडक्टर और ईएसडीएम पार्क की स्थापना की आधारशिला रखी गई। राज्य सरकार की वैश्विक कौशल विकास परियोजना का उद्घाटन किया गया।

राज्य के 130 उच्च शिक्षण संस्थानों में वाईफाई सेवाओं का उद्घाटन किया गया। भीमसर और एमकेसीजी कॉलेजों के उन्नयन के लिए तैयार मास्टर प्लान का उद्घाटन किया गया। उन्होंने अंत्योदय गृह योजना के तहत 50,000 परिवारों के लिए घरों के निर्माण को मंजूरी दी। उन्होंने देश के 8 आईआईटी की क्षमता निर्माण परियोजना की आधारशिला रखी। इसी तरह, मोदी ने पूरे देश में 4जी सेवाएं शुरू की हैं।

आतंकी -माओवादी केस में फिर दो पर चार्जसीट दायर एक सिंहभूम का दुसरा बीजापुर का

ओडिशा (बोनाई) स्टोन माइन्स से चोरी जिलेटिन रोड झारखंड में बरामदगी से जूड़ा है मामला

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड –झारखंड

राचीं , माओवादी आतंकी साजिश केस में एनआईए ने दो और आरोपियों के खिलाफ शुक्रवार को दूसरी पूरक चार्जशीट दाखिल की। यह मामला पश्चिमी सिंहभूम में जिलेटिन स्टिक और अन्य आपत्तिजनक सामग्री की बरामदगी से जुड़ा है। रांची स्थित एनआईए की विशेष अदालत में यह चार्जशीट जयपाल देवगम (प.सिंहभूम) और बुदरू पदम उर्फ रोहित पदम (बीजापुर, छत्तीसगढ़) पर की गई है। ये दोनों आरोपी भाकपा माओवादी के सक्रिय कैडर हैं। इन पर आतंकवादी कृत्यों को अंजाम देने की साजिश रचने, ठेकेदारों व व्यापारियों से जबरन वसूली करने और संगठन के लिए हथियार संभालने में शामिल होने का आरोप है। ये सशस्त्र कैडरों को आश्रय भी प्रदान कर रहे थे। भारतीय दंड संहिता) व गैरकानूनी गतिविधि (रोकथाम) अधिनियम की विभिन्न धाराओं के तहत दोनों पर आरोप लगाए गए हैं।एनआईए ने इसी मामले में पूर्व में राजेश देवगम के खुलासे के आधार पर प. सिंहभूम के हुसीपी और राजाभासा गांव के बीच जंगल से 10,50,000 रुपये नकद, जिलेटिन स्टिक, वॉकी टॉकी, लेवी वसूली रसीद समेत कई वस्तुएं बरामद की थीं। जिन्हें जमीन में गाड़ कर रखा गया था। स्थानीय पुलिस ने इस मामले में मार्च 2024 में पांच लोगों के खिलाफ एफआईआर दर्ज की थी। एनआईए ने जुलाई 2025 में आरोपी राजेश देवगम के खिलाफ आरोपपत्र दाखिल किया था।

'एक शाम मां भगवती के नाम' जागरण सम्पन्न

जगदीश सीरवी

हैदराबाद घटकेसर कोरेमुला स्थित श्री आईमाताजी मंदिर (बडेर) के तत्वावधान में 'एक शाम नाम' माँ भगवती के विशाल जागरण का आयोजन किया गया। आज यहाँ जारी प्रेस विज्ञप्ति में संरक्षक प्रभुराम परिहारिया,अध्यक्ष कालुराम काग , सचिव डायाराम लचेटा ने बताया कि डांडिया नृत्य व जागरण आयोजित किया गया। श्री आईमाताजी मंदिर बडेर में प्रांगण में माँ भगवती का विशाल पंडाल सजाकर तत्पश्चात पूजा अर्चना व ज्योत प्रज्वलित कर जागरण का आयोजन किया गया। अवसर पर गणेश वंदना के साथ भजन गायिका सीता माली एण्ड पार्टी बालोतरा जोधपुर राजस्थान, भजन गायक जीतु प्रजापत ने राजस्थानी लोक भजनों की प्रस्तुतियां दी। भजनों पर श्रद्धालु भावविभोर होकर झूमते रहे। कार्यक्रम में पधारे सर्व समाज के गणमान्य पदाधिकारियों अखिल भारतीय सीरवी महासभा तेलंगाना प्रदेश सचिव सोहनलाल हाम्बड़ सीरवी समाज पारसीगुटा बडेर अध्यक्ष मोहनलाल हाम्बड़ , श्री आईजी गौशाला अध्यक्ष मंगलाराम पंवार, सचिव हुकमाराम सानपुरा, सह सचिव ढगलाराम सेपटा, कोषाध्यक्ष नारायणलाल परिहार , सहलाकर भंवरलाल मुलेवा, श्री आईजी सेवा संघ चिरियाल अध्यक्ष भगाराम मुलेवा, सीरवी समाज मल्लापुर बडेर अध्यक्ष तुलसाराम सिन्दडॉ,पूर्व अध्यक्ष बाबूलाल मुलेवा अतिथियों का समाज बन्धु के पदाधिकारियों ने शॉल, दुपट्टा से विशेष सम्मान किया। महा प्रसादी की व्यवस्था कार्यक्रम स्थल पर की गयी। संरक्षक प्रभुराम परिहारिया,अध्यक्ष कालुराम काग ने समाज बन्धु को नवरात्रि की शुभकामनाएँ देते हुए कार्यक्रम में संरक्षक प्रभुराम परिहारिया,अध्यक्ष कालुराम काग, उपाध्यक्ष1 वगताराम पंवार, उपाध्यक्ष2 राजाराम पंवार, सचिव डायाराम लचेटा, सह सचिव राजाराम गेहलोत, कोषाध्यक्ष पोकरराम पंवार, खेल मंत्री ओमप्रकाश हाम्बड़, सलाहकार पुनाराम हाम्बड़, रमेश हाम्बड़,समस्त कार्यकारिणी सदस्य, नवयुवक मंडल के कार्यकर्ताओं का विशेष सहयोग रहा। मंच का संचालन सचिव डायाराम लचेटा ने किया।कार्यक्रम का विशेष कवरेज पत्रकार जगदीश सीरवी ने किया। महाआरती व अध्यक्ष कालुराम काग व सचिव डायाराम लचेटा के धन्यवाद ज्ञापन से कार्यक्रम का समापन हुआ।

दुर्गापूजा को लेकर सरायकेला उपायुक्त का जमशेदपुर के निकट अन्तिम बैठक

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड

सरायकेला , जमशेदपुर औधौगिक शहर के निकट इंडस्ट्रीयल वेल्ट आदित्यपुर में दुर्गा पूजा और दशहरा शांतिपूर्ण सम्पन्न कराने को लेकर जिला प्रशासन परेड आरंभ कर दिया है . शनिवार को जिले के पदाधिकारियों संग ऑटो क्लस्टर सभागार में डीसी और एसपी ने अंतिम बैठक की और आवश्यक निर्देश जारी किए हैं. बैठक में निदेशक, जिला ग्रामीण विकास अभिकरण डॉ. अजय तिर्की, अपर उपायुक्त जयवर्धन कुमार, अपर नगर आयुक्त, आदित्यपुर नगर निगम रवि प्रकाश, अनुमंडल पदाधिकारी, सरायकेला निवेदिता नियति, प्रभारी पदाधिकारी, सामान्य शाखा अविनाश कुमार सहित विभिन्न विभागों के वरीय पदाधिकारी, पुलिस पदाधिकारी समेत अन्य प्रतिनियुक्त दंडाधिकारी एवं पुलिस पदाधिकारी उपस्थित रहे.

इस अवसर पर डीसी नितिश कुमार सिंह ने कहा कि दुर्गा पूजा एवं दशहरा पर्व के दौरान प्रतिनियुक्त दंडाधिकारी एवं पुलिस पदाधिकारियों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है. उन्होंने निर्देश दिया कि सभी अधिकारी अपने–अपने स्थल पर पूर्ण संवेदनशीलता एवं सतर्कता के साथ तैनात रहें. सोशल मीडिया पर पैनी निगरानी रखते हुए अफवाह अथवा भ्रामक समाचार के प्रसार को रोकना सुनिश्चित करें. श्रद्धालुओं के सुगम आवागमन हेतु यातायात व्यवस्था एवं वाहन पार्किंग की सुव्यवस्थित व्यवस्था की जाए. सभी पूजा पंडाल समितियाँ पंडाल परिसर में साफ–सफाई, प्रकाश व्यवस्था, पेयजल, अग्निशमन यंत्र एवं प्राथमिक उपचार की सुविधा उपलब्ध कराएँ. प्रत्येक पंडाल में महिला एवं पुरुष श्रद्धालुओं के लिए पृथक प्रवेश एवं निकास द्वार हों तथा आपात स्थिति हेतु वैकल्पिक निकास अनिवार्य रूप से सुनिश्चित किया जाए. रावण दहन एवं विसर्जन केवल प्रशासन द्वारा निर्धारित समय, मार्ग एवं चिन्हित स्थलों पर ही संपन्न किया जाए. 2 अक्टूबर को ड्राई_डे घोषित रहेगा तथा जिले की सभी मद्यपान दुकानें बंद रहेंगी. सिविल सर्जन को निर्देश दिया गया कि सभी एम्बुलेंस चिन्हित स्थलों पर तैनात रहें और चिकित्सा दल सक्रिय मोड में उपलब्ध हों.

यह भी कहा कि माननीय उच्च न्यायालय, झारखंड, रांची द्वारा निर्गत दिशा–निर्देशों का प्रत्येक समिति एवं संबंधित पदाधिकारी द्वारा अक्षरशः पालन किया जाना अनिवार्य है. उल्लंघन की स्थिति में संबंधित समिति अथवा पदाधिकारी विधि–सम्मत कठोर कार्रवाई हेतु उत्तरदायी होंगे.

साथ ही उन्होंने सभी जिलेवासियों को आगामी दुर्गा पूजा एवं दशहरा की शुभकामनाएँ दीं और अपील की कि यह पर्व सौहार्द, भाईचारे एवं शांति–व्यवस्था के साथ मनाएँ तथा प्रशासन को पूर्ण सहयोग प्रदान करें. एसपी मुकेश लूणायत ने अपने संबोधन में कहा कि दुर्गा पूजा एवं दशहरा के दौरान पुलिस बल की सर्वोच्च प्राथमिकता शांति–व्यवस्था, यातायात प्रबंधन और श्रद्धालुओं की सुरक्षा होगी. उन्होंने कहा कि 28 सितम्बर से 3 अक्टूबर तक विभिन्न क्षेत्रों मे नो_एंट्री ज़ोन प्रभावी रहेगा. आवश्यक सेवाओं को छोड़कर वाणिज्यिक वाहनों का प्रवेश पूर्णतः प्रतिबंधित रहेगा. अनावश्यक स्थानों पर वाहन पार्किंग नहीं हो तथा निर्धारित पार्किंग स्थलों पर कतारबद्ध पार्किंग सुनिश्चित की जाए सर्विस रोड पर अनधिकृत दुकानों एवं ठेले लगाने की अनुमति नहीं होगी.

पंजाब पुलिस ने यूएई से बीकेआई आतंकी परमिंदर सिंह पिंडी को प्रत्यर्पित कर भारत लाया

— पिंडी हरविंदर रिंडा और हैप्पी पासिया का करीबी सहयोगी; कई जघन्य अपराधों में शामिल: डीजीपी गौरव यादव
— डीजीपी पंजाब ने विदेश मंत्रालय, यूएई सरकार, सीबीआई और अन्य केंद्रीय एजेंसियों का अमूल्य सहयोग के लिए धन्यवाद किया
— बटाला पुलिस के अनुरोध पर सीबीआई ने इंटरपोल के जरिए पिंडी के खिलाफ रेड कॉर्नर नोटिस जारी करवाया: एसएसपी बटाला सुहैल कासिम मीर

चंडीगढ़/बटाला, 27 सितंबर (साहिल बेरी)

मुख्यमंत्री भगवंत सिंह मान की न्याय सुनिश्चित करने की प्रतिबद्धता को एक बार फिर सिद्ध करते हुए, पंजाब पुलिस ने बाबर खालसा इंटरनेशनल (बीकेआई) मॉड्यूल के वांछित आतंकी परमिंदर सिंह उर्फ पिंडी को संयुक्त अरब अमीरात (यूएई) के अबू धाबी से भारत प्रत्यर्पित करने में सफलता हासिल की है। यह कार्रवाई केंद्रीय अन्वेषण ब्यूरो (सीबीआई) और अन्य केंद्रीय एजेंसियों के घनिष्ठ समन्वय एवं सहयोग से संभव हुई, यह जानकारी पंजाब पुलिस के महानिदेशक (डीजीपी) गौरव यादव ने शनिवार को दी।

जानकारी के अनुसार, बटाला के हरशा गांव का रहने वाला परमिंदर सिंह उर्फ पिंडी कोई साधारण अपराधी नहीं, बल्कि एक खतरनाक आतंकी-क्रिमिनल सिंडिकेट का अहम सदस्य है। बटाला पुलिस की टीम आरोपी को भारत लेकर आई है।

डीजीपी गौरव यादव ने बताया कि पिंडी अंतरराष्ट्रीय स्तर पर घोषित आतंकी हरविंदर सिंह उर्फ रिंडा और हैप्पी पासिया का करीबी सहयोगी है और बटाला-गुरदासपुर क्षेत्र में पेट्रोल बम हमले, हिंसक वारदातों और रंगदारी जैसे कई गंभीर अपराधों में शामिल रहा है। आरोपी सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म का इस्तेमाल कर अपराधों की योजना बनाने और उनके लिए फंड जुटाने का काम करता था।

उन्होंने बताया कि बटाला पुलिस के अनुरोध पर जारी रेड कॉर्नर नोटिस (आरसीएन) पर त्वरित कार्रवाई करते हुए एक वरिष्ठ पुलिस अधिकारी के नेतृत्व में चार सदस्यीय विशेष टीम 24 सितंबर 2025 को यूएई गई। टीम ने विदेश मंत्रालय और यूएई प्राधिकरणों के साथ समन्वय कर सभी कानूनी औपचारिकताएं पूरी कीं और आरोपी को सफलतापूर्वक भारत वापस लाया।

यह सफल प्रत्यर्पण पंजाब पुलिस की आतंकवाद और संगठित अपराध के प्रति जीरो टॉलरेंस नीति, उन्नत जांच क्षमताओं और वैश्विक पहुंच को दर्शाता है। डीजीपी ने कहा, "हम विदेश मंत्रालय, संयुक्त अरब अमीरात सरकार, सीबीआई और अन्य केंद्रीय एजेंसियों के अमूल्य सहयोग के लिए आभार व्यक्त करते हैं, जिनकी मदद से यह संयुक्त अभियान सफल हो सका।"

अधिक जानकारी साझा करते हुए वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक (एसएसपी) बटाला सुहैल कासिम मीर ने कहा कि पिंडी द्वारा किए गए गंभीर अपराधों और पाकिस्तान आधारित आतंकियों हरविंदर रिंडा और हैप्पी पासिया से उसके सीधे संबंधों को देखते हुए, केंद्रीय अन्वेषण ब्यूरो ने इंटरपोल के माध्यम से उसके खिलाफ रेड कॉर्नर नोटिस जारी करवाया। यह वैश्विक अलर्ट उसकी गतिविधियों को ट्रैक करने और अबू धाबी में उसकी लोकेशन का पता लगाने में निर्णायक साबित हुआ।

एसएसपी ने कहा कि परमिंदर पिंडी की गिरफ्तारी के साथ पंजाब पुलिस ने एक अंतरराष्ट्रीय आतंकी नेटवर्क के अहम ठिकाने को ध्वस्त किया है। यह कार्रवाई स्पष्ट संदेश देती है कि कानून की लंबी पहुंच भौगोलिक सीमाओं से परे है।

इस बीच, सीबीआई ने बताया कि भारत में इंटरपोल के लिए राष्ट्रीय केंद्रीय ब्यूरो के रूप में, वह भारत की सभी कानून प्रवर्तन एजेंसियों के साथ "भारतपोल" प्रणाली के जरिए समन्वय करती है।

बाढ़ पीड़ितों की सेवा सरकार की पहली प्राथमिकता : जसविंदर सिंह रमदास

अमृतसर, 27 सितंबर (साहिल बेरी)

आम आदमी पार्टी के अटारी हलके से विधायक जसविंदर सिंह रमदास ने कहा कि मुख्यमंत्री भगवंत मान के नेतृत्व में पंजाब सरकार बाढ़ पीड़ित लोगों की सेवा को अपनी सबसे बड़ी प्राथमिकता मान रही है।

रमदास ने बताया कि बाढ़ से प्रभावित इलाकों में सरकार की ओर से तुरंत राहत और सहायता कार्य शुरू कर दिए गए हैं। उन्होंने कहा कि हर अधिकारी को स्पष्ट आदेश दिए गए हैं कि वे घर-घर जाकर लोगों की परेशानियां सुनें और मौके पर ही उनका समाधान करें। विधायक ने यह भी कहा कि आम आदमी पार्टी के सभी सेवक और साथी ज़मीनी स्तर पर लोगों के साथ खड़े हैं और सरकारी मशीनरी के साथ मिलकर पीड़ित परिवारों तक सहायता पहुँचा रहे हैं। उन्होंने भरोसा दिलाया कि पुनर्वास के कार्यों को प्राथमिकता के आधार पर किया जा रहा है और किसी भी परिवार को सरकारी सुविधाएं या राहत सामग्री देने में कोई रुकावट नहीं आने दी जाएगी।

रमदास ने पशुओं में बीमारियों के फैलाव को रोकने के लिए किए जा रहे प्रयासों के बारे में भी जानकारी दी। उन्होंने कहा कि पशुपालक परिवारों को किसी तरह की चिंता करने की जरूरत नहीं है क्योंकि सरकार इस दिशा में भी पूरी तरह ध्यान दे रही है।

एमएलए रमदास ने मुख्यमंत्री की ओर से बाढ़ पीड़ित किसानों को मुफ्त गेहूं का बीज बांटने के फैसले की विशेष रूप से सराहना की। उन्होंने कहा कि यह कदम किसानों की आर्थिक राहत के लिए बेहद महत्वपूर्ण साबित होगा और कृषि की पुनर्बहाली में बड़ा योगदान देगा। रमदास ने कहा, "सरकार और आम आदमी पार्टी का हर सेवक लोगों की सेवा में तत्पर है। किसी को भी खुद को अकेला समझने की जरूरत नहीं है, पूरी सरकारी मशीनरी हमेशा लोगों के साथ खड़ी है।"

शहर की सफाई व्यवस्था को बढ़िया बनाया जाएगा: विधायक डॉ अजय गुप्ता, कहा,कंपनी के काम छोड़ने से सफाई को लेकर कुछ दिक्कत आई

अमृतसर, 27 सितंबर (साहिल बेरी)

केंद्रीय विधानसभा क्षेत्र से विधायक डॉ अजय गुप्ता द्वारा अपनी टीम के साथ शुरू किया गया सफाई अभियान लगातार आज जारी रखा । आज विधायक डॉ गुप्ता ने गेट खजाना से भद्रकाली मंदिर के आसपास के क्षेत्र की सफाई व्यवस्था करवाई। विधायक डॉ गुप्ता ने कहा कि नवरात्रों के शुरू होते ही उनके द्वारा अपनी टीम के साथ शहर में सफाई अभियान शुरू करवाया था, जो लगातार जारी रहेगा। उन्होंने कहा कि कंपनी के काम बीच में ही छोड़ने से सफाई व्यवस्था को लेकर कुछ दिक्कत आई हैं। उन्होंने कहा इसके बावजूद मेयर जितेंद्र सिंह मोती भाटिया,नगर निगम के कमिश्नर बिक्रमजीत सिंह शेरगिल, निगम के सभी वरिष्ठ अधिकारी निगम की सारी मशीनरी और प्राइवेट ट्रैक्टर ट्राली के माध्यम से शहर की सफाई व्यवस्था करवा रहे है। उन्होंने कहा कि शहर से प्रतिदिन लगभग 560 मेट्रिक टन कूड़ा करकट उठाया जा रहा है। उन्होंने कहा कि केंद्रीय विधानसभा क्षेत्र में लगातार वह खुद सड़कों पर उतरकर सफाई व्यवस्था करवा रहे हैं।

विधायक डॉ गुप्ता ने कहा कि अवर्डा कंपनी द्वारा पहले से ही सफाई व्यवस्था को लेकर कार्य ठीक ढंग से नहीं किया जा रहा था। उन्होंने कहा कि यह सब पिछली सरकारों की देन है। उन्होंने कहा कि अवर्डा कंपनी के साथ पिछली अकाली भाजपा सरकार ने साल 2016 में कॉन्ट्रैक्ट किया था। उन्होंने कहा कि ठीक पर प्रबंध न होने पर कंपनी एग्जिट कर गई। कंपनी द्वारा अक्टूबर महीने में कार्य बंद करना था। किंतु कंपनी ने 5 अगस्त को ही कार्य बंद कर दिया गया। जिससे सफाई व्यवस्था को लेकर समस्या आ गई।

विधायक डॉ अजय गुप्ता ने कहा कि नगर निगम द्वारा शहर की सफाई व्यवस्था को लेकर नई कंपनी को लाने के लिए पिछले 6 महीनो से एस्टीमेट बनवाकर टेंडर प्रक्रिया में जुटी हुई है। उन्होंने कहा कि आने वाले कुछ ही दिनों में नई कंपनी को वर्क आर्डर अलाट हो जाएगा। उन्होंने कहा कि नई कंपनी द्वारा कार्य शुरू करने पर गुरु नगरी अमृतसर की सफाई व्यवस्था बेहतरीन हो जाएगी। आज के सफाई अभियान में निगम अधिकारी, सफाई सेवक और भारी संख्या में आम आदमी पार्टी के वॉलिंटियर्स मौजूद थे।

भगवान वाल्मीकि जी की शोभा यात्रा के अमृतसर पहुंचने पर कैबिनेट मंत्री ईटीओ ने किया भव्य स्वागत

अमृतसर, 27 सितंबर (साहिल बेरी)

आज जालंधर से चलकर अमृतसर पहुंची भगवान वाल्मीकि जी की शोभा यात्रा का स्वागत कैबिनेट मंत्री श्री हरभजन सिंह ईटीओ ने गोल्डन गेट पर किया। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि आज समय की मुख्य आवश्यकता है कि हम भगवान वाल्मीकि जी द्वारा दिखाए गए रास्ते पर चलें और उनकी शिक्षाओं का पालन करें, तभी हम अपने जीवन को सुखी और सफल बना सकते हैं।

कैबिनेट मंत्री ने बताया कि पंजाब सरकार द्वारा 7 अक्टूबर 2025 को भगवान वाल्मीकि जी का प्रकट उत्सव राज्य स्तर पर अमृतसर में मनाया जाएगा। इस मौके पर श्री विपिन सबरवाल, डीएसपी नीरज कुमार, श्री विक्की चीदा, श्री पवन दराविड़, श्री कुमार दर्शिन, श्री शशि गिल के अलावा बड़ी संख्या में संगतें मौजूद थीं।

प्रतिभा पलायन को रोकने का बड़ा मौका

प्रो. महेश चंद गुप्ता

अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने एच-1बी वीजा फीस में बेतहाशा बढ़ोतरी कर दी है। पहले जहां यह फीस लगभग 80 हजार रुपये थी, वहीं अब इसे 80 लाख रुपये तक बढ़ा दिया गया है। स्वाभाविक है कि अब पहले जितनी संख्या में भारतीय युवा अमेरिका नहीं जा पाएंगे। इस फैसले से दुनिया भर में उथल-पुथल मची है जिसका फायदा उठाने की कोशिश चीन कर रहा है। उसने 'के वीजा' नामक नई श्रेणी की घोषणा की है जिसके तहत वह दुनिया भर के युवा वैज्ञानिकों और तकनीकी प्रोफेशनल्स को अपने यहां आकर्षित करना चाहता है। यह वीजा शिक्षा, संस्कृति, विज्ञान तकनीक और व्यवसाय के क्षेत्र में अवसर उपलब्ध कराएगा।

भारत के लिहाज से यह स्थिति एक बड़ी चुनौती और अवसर दोनों लेकर आई है। चुनौती इसलिए क्योंकि अमेरिकी दरवाजे बंद होने के बाद चीन नए अवसर देकर हमारी प्रतिभाओं को अपने यहां खींच सकता है। अवसर इसलिए है क्योंकि यह भारत के लिए प्रतिभा पलायन रोकने का सुनहरा मौका है। अब जरूरत इस बात की है कि सरकार, उद्योग जगत और कॉर्पोरेट सेक्टर मिलकर ऐसे वातावरण का निर्माण करें जहां हमारे युवा देश में रहकर ही अपने सपनों को साकार कर सकें। भारत हमेशा से ही शिक्षा और प्रतिभा के मामले में समृद्ध रहा है पर प्रतिभा पलायन हमारी बड़ी समस्या है। हर साल लाखों छात्र-छात्राएं इंजीनियरिंग, मेडिकल, मैनेजमेंट और रिसर्च के क्षेत्र में पढ़ाई पूरी करते हैं लेकिन अफसोस है कि उनमें से बड़ी संख्या में युवा विदेशों का रुख कर लेते हैं। इसका सबसे बड़ा कारण यह है कि भारत में शोध के लिए पर्याप्त संसाधन उपलब्ध नहीं होते हैं, रोजगार के अवसर सीमित हैं और जो अवसर उपलब्ध हैं, उनमें योग्य प्रतिभा को सम्मान और सुरक्षा का अभाव है।

डॉक्टर, इंजीनियर, वैज्ञानिक और आईटी प्रोफेशनल विदेश जाकर वहां की अर्थव्यवस्था को मजबूत कर रहे हैं जबकि उनकी प्रतिभा का लाभ भारत को मिलना चाहिए। एक तरफ हम युवाओं की शिक्षा पर करोड़ों रुपये खर्च करते हैं, दूसरी ओर वे अवसरों की कमी के कारण देश छोड़ जाते हैं। यह भारत के विकास के लिए बड़ी हानि है। ट्रंप का वीजा फीस वृद्धि का कदम दुनिया के कई देशों के लिए चिंता का विषय हो सकता है लेकिन मुझे लगता है कि भारत को इसे सकारात्मक रूप में देखना चाहिए। जब अमेरिका में वीजा इतना महंगा हो गया है कि आम युवा वहां नहीं जा पाएंगे तो इससे स्वाभाविक रूप से प्रतिभा पलायन पर अंकुश लगेगा। यह स्थिति भारत के लिए किसी वरदान से कम नहीं है। अब सवाल यह है कि क्या इस मौके का उपयोग भारत कर पाएगा? अगर सरकार और उद्योग जगत ने युवाओं के लिए बेहतर माहौल तैयार किया तो वे भारत में ही रहकर काम करना पसंद करेंगे लेकिन अगर ऐसा नहीं हुआ तो यह संभावना है कि निराश युवा चीन की ओर आकर्षित हो जाएं।

चीन ने हालात को भांपते हुए तेजी से 'के वीजा' का विकल्प प्रस्तुत किया है। इस वीजा के माध्यम से वह दुनिया भर की प्रतिभाओं को अपने यहां शिक्षा, रिसर्च और बिजनेस में अवसर देने की योजना बना रहा है। ऐसा करके वह वैश्विक विज्ञान और तकनीक के क्षेत्र में नेतृत्व के अपने लक्ष्य को पूरा करने की तमन्ना रखता है। यदि भारतीय युवा अमेरिका के बजाय चीन का रुख करने लगे तो यह हमारे लिए और भी गंभीर स्थिति होगी क्योंकि एक तरफ तो भारत अपनी ही प्रतिभा से वंचित रह जाएगा और दूसरी ओर चीन हमारी ही ताकत का उपयोग करके आगे निकलने की कोशिश करेगा। ऐसे समय में हमें गहरा आत्म चिंतन की जरूरत है। इस समय यह बड़ा सवाल है कि क्या हमारे युवा विदेशों में ही अपनी क्षमता साबित करेंगे या फिर देश में रहकर भारत को नई ऊंचाइयों पर ले जाएंगे? इसका उत्तर देश की नीतियों और कार्यप्रणालियों पर निर्भर करता है।

वर्तमान में विश्व की टॉप 100 कार्पोरेट कंपनियों में उच्च पदों पर हमारे युवा हैं, जो उनके कामकाज को पूरे विश्व में फैलाने में सहायक हो रहे हैं। सुंदर पिचई (गूगल), सत्य नडेला (माइक्रोसॉफ्ट), अजय बंगा (विश्व बैंक), अरविंद कृष्णा (आईबीएम) और इंद्रा नूई (पेप्सीको) जैसे दिग्गज भारतीय मूल के लोगों ने पूरी दुनिया में भारत का नाम रोशन किया है। उनकी सफलता यह साबित करती है कि भारतीय मस्तिष्क वैश्विक स्तर पर किसी से कम नहीं है। सवाल यह है कि अगर प्रतिभावान युवाओं को देश में ही जरूरत अवसर और वातावरण मिल जाता तो क्या वे यहीं रहकर भारत को विश्व का नेतृत्व दिला सकते थे? इस सवाल का जवाब निश्चित रूप से हाँ में है।

हर सफल व्यक्ति में किस प्रकार की मानसिकता आम होती है?

आगे रहने के लिए किसी और को पीछे मत धकेलिए। ज़्यादातर सफल लोग मनचाही जगह पाने के लिए अनैतिक तरीकों का इस्तेमाल नहीं करते; बल्कि अपनी प्रतिभा, लगन और जुनून पर भरोसा करते हैं। दूसरे शब्दों में, वे जानते हैं कि अनुकूल परिणाम पाने के लिए स्वस्थ तरीके से कैसे प्रतिस्पर्धा करनी है। प्रचुरता की मानसिकता। सफल लोग मानते हैं कि जीवन में सफलता पाने के लिए हर किसी के पास पर्याप्त से ज़्यादा अवसर हैं। बस उन्हें इनका कुशलतापूर्वक उपयोग करने की ज़रूरत है।

असफलता और जीत एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। उस सिक्के को सफलता कहते हैं। हर सफल व्यक्ति जानता है कि जीवन में सफलता पाने के लिए, उसे असफल होने के लिए तैयार रहना होगा क्योंकि यही एकमात्र तरीका है जिससे आप अपनी गलतियों से सीख सकते हैं और आगे बढ़ सकते हैं। सफलता बस समय की बात है। ज़्यादातर लोग, जब अपने लक्ष्यों का पीछा करना शुरू करते हैं, तो पहले तो बहुत उत्साहित होते हैं, लेकिन जब परिणाम नहीं मिलते, तो धीरे-धीरे उनका धैर्य और आत्मविश्वास कम हो जाता है। हालाँकि, सफल लोग नहीं होते; उन्हें खुद पर पूरा विश्वास होता है और उनमें ज़बरदस्त धैर्य होता है, जो उन्हें मुश्किल से मुश्किल समय में भी हार न मानने की ताकत देता है। आप जो करते हैं उसके प्रति जुनून रखें। सफल लोग जानते हैं कि अगर आपमें किसी चीज़ के प्रति जुनून नहीं है, तो आपकी हर कोशिश अधूरी रहेगी और कभी भी मनचाहा परिणाम नहीं मिलेगा। हालाँकि, जब जुनून आपकी सबसे बड़ी ताकत होता है, तो आप अपनी मनचाही चीज़ पाने के लिए त्याग करने और अतिरिक्त प्रयास करने को तैयार रहते हैं, और साथ ही अपने काम का आनंद भी लेते हैं। भले ही यह कभी-कभी मुश्किल हो। किसी नतीजे से आसक्त न हों; इससे आपको बस यही लगेगा कि आपको ₹समय पर₹ अंतिम रेखा तक पहुँचने की जल्दी है। हालाँकि, यह जल्दबाजी व्यक्ति पर सफल होने का ज़बरदस्त दबाव डालती है। सफल लोग किसी नतीजे से आसक्त नहीं होते। वे प्रक्रिया से जुड़े होते हैं, उसे अपनाते हैं, और आने वाली बाधाओं के बावजूद आगे बढ़ते रहते हैं।

मेडिकल कैंप : डायोसिस ऑफ अमृतसर, CNI ने तलवंडी रामा गाँव में लगाया मुफ्त मेडिकल कैंप

अमृतसर, 27 सितंबर (साहिल बेरी)

अमृतसर के आसपास के बाढ़ प्रभावित गाँवों को राहत प्रदान करने के अपने प्रयासों को जारी रखते हुए, डायोसिस ऑफ अमृतसर, CNI के टर्निंग पॉइंट प्रोजेक्ट ने तलवंडी रामा गाँव में एक मुफ्त मेडिकल कैंप का आयोजन किया।

इस मेडिकल कैंप में आसपास के गाँवों से आए 300 से अधिक लोगों की जांच की गई। क्रिश्चियन मेडिकल कॉलेज, लुधियाना के विशेषज्ञ डॉक्टरों की टीम ने इस कैंप में भाग लिया और ऑर्थोपेडिक्स, जनरल मेडिसिन, बाल रोग और गायनेकोलॉजी सहित व्यापक चिकित्सा सेवाएं प्रदान कीं।

अमृतसर डायोसिसन ट्रस्ट एसोसिएशन के सचिव श्री डेनियल बी. दास ने कहा, "कैंप में मुफ्त स्वास्थ्य जांच की गई, जिसमें ब्लड शुगर और ब्लड प्रेशर की जांच शामिल थी, और उपस्थित लोगों को मुफ्त दवाइयां वितरित की गईं।"

डायोसिस ऑफ अमृतसर, CNI के बिशप और एक्टिंग डिप्टी मॉडरेटर द राइट रेवरेन्ड मनोज चरण ने कहा, "डायोसिस ऑफ अमृतसर का उद्देश्य सभी हितधारकों के साथ मिलकर काम करते हुए कमज़ोरियों को दूर करना और क्षमताओं को बढ़ाना है। यह मेडिकल कैंप उस लक्ष्य को हासिल करने और लोगों के जीवन पर सकारात्मक प्रभाव डालने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।"

डायोसिस ऑफ अमृतसर, CNI की विकास अधिकारी श्रीमती सोनिया सामंतराय, जिन्होंने इस कैंप का आयोजन किया, ने कहा, "इस पहल का उद्देश्य स्थानीय समुदाय को आवश्यक चिकित्सा सेवाएं उपलब्ध कराना और स्वास्थ्य एवं तंदुरुस्ती को बढ़ावा देना है।"

डायोसिस ऑफ अमृतसर के सम्मानित अतिथि रेवरेन्ड अयूब डेनियल, डॉ. एल्मा राम, रेवरेन्ड डॉ. पुलक सामंतराय और रेवरेन्ड पवन पाल ने भी मेडिकल कैंप में अपनी उपस्थिति दर्ज कराई।

KAUSA ट्रस्ट् ने 27-09-2025 को KT: कला संग्रहालय में "2050 में दुनिया" विषय पर एक पोस्ट प्रतियोगिता का आयोजन किया

अमृतसर 27 सितंबर (साहिल बेरी)

इस प्रतियोगिता ने छात्रों को भविष्य की कल्पना करने के लिए प्रोत्साहित किया स्मार्ट शहरों, कृत्रिम बुद्धिमत्ता और अंतरिक्ष अन्वेषण से लेकर एक स्थायी, शांतिपूर्ण और नशामुक्त दुनिया तक। रचनात्मकता उल्लेखनीय थी, पोस्ट्रों में आशा, नवाचार और वैश्विक चुनौतियों के बारे में जागरूकता झलक रही थी।

इस कार्यक्रम में 15 स्कूलों और कॉलेजों के 70 से ज़्यादा छात्रों ने हिस्सा लिया। विषय पहले ही साझा कर दिया गया था, जिससे प्रतिभागियों को तैयारी का समय मिल गया, जो उनकी कलाकृतियों की गहराई और कल्पनाशीलता से स्पष्ट था।निर्णायक मंडल में डॉ. प्रियंका शर्मा (विभागाध्यक्ष, ललित कला विभाग, डीएवी पब्लिक स्कूल) और केटीः कला संग्रहालय के निदेशक ब्रजेश जॉली शामिल थे, जिन्होंने छात्रों के नवोन्मेषी विचारों और कलात्मक प्रतिभा की सराहना की।सचिव श्री राजेश रैना ने कहा कि कौसा ट्रस्ट् कला और सांस्कृतिक गतिविधियों के माध्यम से सकारात्मक संदेश फैलाने के लिए प्रतिबद्ध है और युवा पीढ़ी से उस भविष्य के बारे में सोचने का आग्रह करता है जिसका वे निर्माण करना चाहते हैं।ब्रजेश जॉली ने आगे बताया कि प्रत्येक प्रतिभागी को जलपान, पदक और पोस्ट कलर बॉक्स के साथ-साथ 15 नकद पुरस्कार और विशेष बच्चों (मूक-बधिर) के लिए कुछ विशेष पुरस्कार प्रदान किए गए।

इस पहल के साथ, कौसा ट्रस्ट् ने न केवल रचनात्मकता को बढ़ावा दिया, बल्कि छात्रों को एक उज्जवल, अधिक टिकाऊ और सामंजस्मपूर्ण कल का सपना देखने के लिए भी प्रेरित किया।उल्लेखनीय उपस्थित लोगों में केटीः कला संग्रहालय की कोषाध्यक्ष डॉ. के. आर. तुली, सुश्री निशा घई के साथ-साथ कई कला शिक्षक, कलाकार और भाग लेने वाले छात्रों के अभिभावक शामिल थे।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095. newstransportvishesh@gmail.com
(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023